हज़रत मुहम्मद स.अ.व का आदर्श और व्यंग चित्रों की वास्तविकता

वर्णित

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद

इमाम जमाअत अहमदिया

The blessed model of the
Holy Prophet
Muhammad *(may peace and blessings of Allah be upon him)*
and the Caricatures

Shock waves of indignation ran across the Muslim world following the recent publication of offensive and crude caricatures of the Holy Prophet Muhammad (may peace and blessings of Allah be upon him) in some parts of Europe. The uninformed, as ever, misled by the mullah gave in to public display of rage and rampant chaos ensued. Midst this confusion of an undeniably distressing time for all Muslims, spoke the voice of reason, calm and peace, precisely in line with the teaching of the "prince of peace" himself.. the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him). This was the voice of Hadhrat Khalifatul Masih V (may Allah assist him with His mighty help) that unfolded the reality of the Islamic ways and means to respond to injustice; calling for peace, reasoning, endeavour to enlighten the world with the power of the pen and ultimately to always put one's trust in sincere prayers. He delivered a series of five faith inspiring and enlightening Friday Sermons on the subject that are a beckon of light for anyone in this often perplexing world that we live in. These Friday Sermons are being presented in this booklet.

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह[स.अ.व.]
का आदर्श
और
व्यंग्य चित्रों की वास्तविकता

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद
विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के पांचवें ख़लीफ़ा

नाम किताब - हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह[स.अ.व.] का आदर्श और व्यंग्य चित्रों की वास्तविकता

Name of Book - The Blessed Model of the Holy Prophet Muhammad[saw] and the Caricatures

भाषण - हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद जमाअत अहमदिया के इमाम तथा पंचम ख़लीफ़ा

अनुवादक - अन्सार अहमद एम. ए. बी. एड. मौलवी फ़ाज़िल

Translated By - Ansar Ahmad, M.A. B.Ed. Moulvi Fazil

संस्करण - प्रथम हिन्दी संस्करण

Edition : First Hindi Edition

प्रकाशन वर्ष - अप्रैल 2014ई.

Year of Publication : April 2014

संख्या– 3000

Quantity : 3000

प्रकाशक - नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान

Published by : Nazarat Nashr-o-Ishaat, Qadian

ज़िला - गुरदासपुर, पंजाब (143516) भारत

Distt. : Gurdaspur, Punjab (143516) India

मुद्रक - फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान

Printed At : Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian

ISBN -

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :-

Noor-ul-Islam Toll Free No. - 18001802131

प्राक्कथन

بسم الله الرحمن الرحيم

نحمده و نصلی علی رسوله الکریم و علیٰ عبده المسیح الموعود

आरंभ ही से सत्य-असत्य तथा प्रकाश-अंधकार के मध्य युद्ध रहा है किन्तु अल्लाह के नियमानुसार जीत सदैव सत्य और प्रकाश की ही होती है। कुछ लोगों का ढंग रहा है कि सस्ती ख्याति प्राप्त करने के लिए जो वास्तव में अहंकार के कारण होता है ख़ुदा तआला के रसूलों के मुकाबले पर खड़े होते रहे, परन्तु अन्ततः निराश और असफल हुए। इस्लाम और सम्पूर्ण जगत के गर्व हमारे स्वामी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] की शान में भी विभिन्न लोगों ने धृष्टता का आचरण धारण किया तथा अल्लाह के नियमानुसार असफलता का मुख देखा। वर्तमान में भी अभिव्यक्ति और पत्रकारिता की स्वतंत्रता का बहाना बनाकर कुछ दुष्ट तत्त्वों ने इस्लाम और आंहज़रत[स.अ.व.] के विरुद्ध घृणा फैलाने के लिए अश्लील कार्टून विभिन्न पुस्तकों और अख़बारों में प्रकाशित किए। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न मुस्लिम संगठनों में बहुत कठोर प्रतिक्रिया प्रकट हुई। आगें लगाई गईं। तथा आक्रोश प्रकट करने के लिए तोड़फोड़ भी की गई।

जमाअत अहमदिया की स्थापना का बड़ा उद्देश्य यह है कि ख़ुदा तआला की कृपा और दया से सच्ची शिक्षाओं को विश्व में फैलाया जाए। इसलिए ऐसे अवसरों पर जमाअत की प्रतिक्रिया आगें लगाने और तोड़-फोड़ करने के स्थान पर यह होती है कि आरोप लगाने वालों के आरोपों के संतोषजनक उत्तर दिए जाएं। इस प्रकार इस्लाम का वास्तविक और सच्चा सन्देश विश्व तक पहुंचाने का प्रयास किया जाए।

अत: जमाअत अहमदिया के इमाम और पांचवें ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने इन वर्तमान घटनाओं के संबंध में अपने जुमओं के ख़ुत्बों में विस्तारपूर्वक बहस की है जो आपने इस वर्ष 10 फ़रवरी, 17 फ़रवरी, 24 फ़रवरी, 3 मार्च और 10 मार्च को मस्जिद बैतुल फ़ुतूह मॉर्डन, लन्दन में दिए। इन ख़ुत्बों से ज्ञात होता है कि ऐसी परिस्थितियों में एक सच्चे मोमिन की क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए और किस प्रकार वर्तमान स्थिति से निपटना चाहिए।

जमाअत के लोगों को चाहिए कि न केवल स्वयं इन आदेशों का अध्ययन करें अपितु अपने परिचित लोगों को भी अध्ययन के लिए दें ताकि उनका भी इस्लाम की सुन्दर शिक्षा से परिचय हो। इस उद्देश्य से इन आदेशों का अनुवाद भिन्न-भिन्न भाषाओं में करवा कर ख़ुदा ने चाहा तो प्रकाशित किया जाएगा।

ख़ाकसार
मुनीरुद्दीन शम्स
एडीशनल वकीलुत्तस्नीफ़

विषय सूची

- आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम, मुहब्बत और दया के आदर्श को संसार को बताना चाहिए। प्रत्येक देश में आंहज़रत[स.अ.व.] के जीवन के पहलुओं को उजागर करने तथा अपने कर्मों को सुधारने की आवश्यकता है।
- डेनमार्क में अत्यन्त अपवित्र, अपमानजनक तथा मुसलमानों की भावनाओं को भड़काने वाले व्यंग्य चित्रों को प्रकाशित करने की बड़ी ज़ोरदार निन्दा और उसके विरुद्ध इस्लामी शिक्षा की परिधि में रहते हुए जमाअत अहमदिया की प्रतिक्रिया तथा उसके सकारात्मक प्रभावों की चर्चा।
- इस प्रकार की गतिविधियों से उन लोगों का इस्लाम से द्वेष और धार्मिक पक्षपात का प्रकटन होता है तथा इन अपवित्र मस्तिष्क रखने वालों की मानसिकता की गन्दगी तथा ख़ुदा से दूरी दिखाई देती है।
- झण्डे जलाना, हड़तालें करना, तोड़फोड़ करना या उपद्रव फैलाना प्रदर्शन का उचित ढंग नहीं है।
- हमें अपने आचरण इस्लामी मर्यादा और शिक्षानुसार ढालने चाहिएं। हमारी प्रतिक्रिया सदैव ऐसी होनी चाहिए जिस से आप[स.] की शिक्षा और आदर्श निखर कर सामने आए।
- अहमदियों को पत्रकारिता-विभाग अपनाने की प्रेरणा

ख़ुत्ब: जुमा 10 फरवरी 2006 ई.

स्थान - बैतुलफ़ुतूह मस्जिद, लन्दन, यू.के.

ख़ुत्ब: जुमा

10 फरवरी 2006 ई. स्थान - बैतुलफ़ुतूह मस्जिद, लन्दन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ-اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ-مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ- اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ- اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ- صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ -

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ۝

(सूरह-अलअंबिया, आयत-108)

اِنَّ اللهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا۝

(सूरह अलअहज़ाब, आयत - 57, 58)

डेनमार्क तथा पाश्चात्य देशों में अत्यन्त गन्दे व्यंग्य चित्रों के प्रकाशन पर इस्लामी संसार की प्रतिक्रिया

आजकल डेनमार्क तथा पश्चिम के कुछ देशों के आंहज़रत[स.अ.व.] के बारे में अत्यन्त गन्दे तथा मुसलमानों की भावनाओं को भड़काने वाले

तथा उत्तेजित करने वाले व्यंग्य चित्र अख़बारों में प्रकाशित करने पर समस्त इस्लामी जगत में शोक और क्रोध की एक लहर दौड़ रही है। प्रत्येक मुसलमान की ओर से इस बारे में प्रतिक्रिया प्रकट हो रही है। बहरहाल स्वाभाविक तौर पर इस अप्रिय घटना पर प्रतिक्रिया का प्रकटन होना चाहिए था और स्पष्ट है अहमदी भी जो आंहज़रत[स.] से प्रेम में निश्चय ही दूसरों से बढ़ा हुआ है क्योंकि उसको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कारण हज़रत ख़ातुमलअंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] के पद का बोध और ज्ञान दूसरों से बहुत अधिक है और कई अहमदी पत्र भी लिखते हैं और अपने शोक एवं क्रोध को प्रकट करते हैं, सलाह भी देते हैं कि स्थायी प्रतिक्रिया होनी चाहिए, संसार को बताना चाहिए कि इस महान नबी का क्या स्थान है। अतः इस बारे में जहां-जहां भी जमाअतें एक्टिव हैं वे काम कर रही हैं परन्तु जैसा कि हम जानते हैं कि हमारी प्रतिक्रिया कभी हड़तालों के रूप में नहीं होती और न ही तोड़-फोड़, झण्डे जलाना इस का उपचार है।

इस युग में अन्य धर्मावलम्बी पश्चिमी भी तथा पाश्चात्य संसार भी इस्लाम के प्रवर्तक पर प्रहार कर रहे हैं। इस समय पश्चिम को धर्म से कोई लगाव नहीं है। उनकी अधिकतर जनसंख्या संसार के खेलकूद और चमक दमक में पड़ चुकी है तथा उसमें इतने लिप्त हो चुके हैं कि उनका धर्म चाहे इस्लाम हो, ईसाइयत हो, या अपना कोई अन्य धर्म जिससे ये सम्बद्ध हैं उनकी कुछ परवाह नहीं वे इससे बिल्कुल पृथक हो चुके हैं। अधिकांश लोगों में धर्म की पवित्रता और सम्मान की भावना समाप्त हो चुकी है अपितु एक ख़बर कदाचित फ्रांस की पिछले दिनों यह भी थी कि हम अधिकार रखते हैं कि यदि हम चाहें तो (नऊज़ुबिल्लाह) अल्लाह

तआला का भी व्यंग्य चित्र बना सकते हैं। यह तो उन लोगों को हाल हो चुका है। इसलिए अब देख लें कि यह कार्टून बनाने वालों ने जो अत्यन्त बुरी हरकत की है और यह जैसी सोच रखते हैं तथा इस्लामी संसार की जो प्रतिक्रिया प्रकट हुई है, उस पर इनमें से कई लेखकों ने लिखा है कि यह प्रतिक्रिया इस्लामी समाज तथा पश्चिमी धर्म निरपेक्ष प्रजातंत्र के मध्य टकराव है हालांकि इसका समाज से कोई संबंध नहीं है। अब तो इन लोगों को बहुमत जैसा मैंने कहा कि नैतिकता खो चुकी है। स्वतंत्रता के नाम पर अश्लीलताएं धारण की जा रही हैं। शर्म लगभग समाप्त हो चुकी है।

कुछ न्यायप्रिय लोगों की समीक्षा

बहरहाल इस बात पर भी इनमें से ही कुछ ऐसे शिष्ट लेखक भी हैं या न्यायप्रिय हैं। उन्होंने इस विचारधारा को ग़लत ठहराया है कि इस प्रतिक्रिया को इस्लाम और पश्चिमी धर्म निरपेक्ष प्रजातंत्र के मुक़ाबले का नाम दिया जाए। इंग्लैण्ड के ही एक कालम लिखने वाले रॉबर्ट फ़िस्क (Robert Fisk) ने पर्याप्त न्याय से काम लेते हुए लिखा है। डेनमार्क के एक सज्जन ने लिखा था कि इस्लामी समाज और पश्चिमी धर्मनिरपेक्ष प्रजातंत्र के मध्य टकराव है। इस बारे में उन्होंने लिखा कि यह बिल्कुल ग़लत बात है यह कोई सभ्यताओं का या धर्म निरपेक्षता का टकराव नहीं है। वह लिखते हैं कि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भी मामला नहीं है। बात केवल यह है कि मुसलमानों की आस्थानुसार पैग़म्बर पर ख़ुदा ने सीधे तौर पर अपनी शिक्षाएं उतारीं वे पृथ्वी पर ख़ुदा के प्रतिनिधि हैं जब कि यह (ईसाई) समझते हैं (अब यह ईसाई लेखक लिख रहा है) कि अंबिया और वली उनकी शिक्षाओं मानवाधिकारों और स्वतंत्रता की आधुनिक कल्पना से सामंजस्य न होने के कारण इतिहास के अंधकारों

में लुप्त हो गए हैं। मुसलमान धर्म को अपने जीवन का भाग समझते हैं तथा शताब्दियों की यात्रा और परिवर्तनों के बावजूद उनकी यह सोच यथावत है जबकि हमने धर्म को व्यावहारिक जीवन से पृथक कर दिया है। इसलिए हम अब ईसाइयत बनाम इस्लाम नहीं अपितु पश्चिमी सभ्यता बनाम की बात करते हैं और इस आधार पर यह भी चाहते हैं कि जब हम अपने पैग़म्बरों या उनकी शिक्षाओं का उपहास उड़ा सकते हैं तो शेष धर्मों का क्यों नहीं।

पुन: लिखते हैं कि क्या यह आचरण उतना ही स्वाभाविक है। कहते हैं कि मुझे स्मरण है कि कोई दस-बारह वर्ष पूर्व एक फिल्म Last Temptation of Christ जारी हुई थी जिसमें हज़रत ईसा को एक स्त्री के साथ आपत्तिजनक हालत में दिखाने पर बहुत शोर मचा था और पैरिस में किसी ने उत्तेजित होकर एक सिनेमाघर को अग्नि की भेंट चढ़ा दिया। एक फ्रांसीसी युवा का वध भी हुआ था। इस बात का क्या अर्थ है। एक ओर तो हम में से भी कुछ लोग धार्मिक भावनाओं का अनादर सहन नहीं कर पाते, परन्तु हम यह भी आशा रखते हैं कि मुसलमान अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाते घटिया रुचि रखने वालों के व्यंग्यचित्रों के प्रकाशन पर सहनशीलता से काम लें। क्या यह उचित आचरण है ? जब पश्चिमी नेता यह कहते हैं कि वे अखबार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध नहीं लगा सकते तो मुझे हंसी आती है। कहते हैं कि यदि विवादित कार्टूनों में इस्लाम के पैग़म्बर की बजाए बम वाले डिज़ायन की टोपी किसी यहूदी रब्बी (Rabbi) के सर पर दिखाई जाती तो क्या शोर न मचता कि इससे एण्टी सेमीटिज़्म (Anti Semitism) की गंध आती है अर्थात यहूदियों के विरुद्ध विरोध की

गंध आती है तथा धार्मिक तौर पर यहूदियों के हृदय को दुःख पहुंचाया जा रहा है। यदि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का ही मामला है तो फ्रांस, जर्मनी या आस्ट्रेलिया में इस बात को चुनौती देना कानून के अनुसार अपराध क्यों है कि द्वितीय विश्व युद्ध में यहूदियों की नस्ल को मौत के घाट नहीं उतारा गया। इन कार्टूनों के प्रकाशन से यदि ऐसे लोगों को प्रोत्साहन मिला जो मुसलमानों में धार्मिक सुधार या संतुलन के समर्थक हैं और उदार विचार रखने वाले बहसों को विकसित करना चाहते है तो इस पर बहुत कम लोगों को आपत्ति होती। किन्तु इन कार्टूनों से इसके अतिरिक्त और क्या सन्देश देने का प्रयत्न किया गया है कि इस्लाम एक अत्याचारी धर्म है। इन कार्टूनों ने चारों ओर उन्माद फैलाने के अतिरिक्त और क्या सकारात्मक कदम उठाया है ?

(दैनिक 'जंग' लन्दन, 9 फरवरी पृष्ठ 1, 3)

बहरहाल मुसलमानों का भी आचरण था जिसके कारण ऐसे दुष्कृत्य का अवसर मिला, परन्तु इन लोगों में सभ्य लोग भी हैं जो वास्तविकताएं वर्णन करना जानते हैं।

मुसलमानों के कुछ नेताओं की ग़लत प्रतिक्रिया स्वरूप दूसरों को इस्लाम को बदनाम करने का अवसर मिलता है।

मैंने भिन्न-भिन्न देशों से जो प्रतिक्रियाएं हुईं अर्थात् मुसलमानों की ओर से भी इन यूरोपियन संसार के सरकारी प्रतिनिधियों या अखबारी प्रतिनिधियों की ओर से भी विचार प्रकट किए गए उनकी रिपोर्टें मंगवाई हैं। इनमें अधिक संख्या ऐसे लोगों की भी है जिन्होंने अख़बार के इस आचरण को पसन्द नहीं किया, परन्तु बहरहाल जैसा कि मैंने कहा कहीं

न कहीं से किसी समय ऐसी विवादित बात छोड़ी जाती है जिस से इन गन्दे मस्तिष्क रखने वालों की मानसिकता की गन्दगी और ख़ुदा से दूरी दिखाई दे जाती है, इस्लाम से शत्रुता और पक्षपात प्रकट होता है, परन्तु मैं यह कहूंगा कि दुर्भाग्य से मुसलमानों के कुछ लीडरों की ग़लत प्रतिक्रिया से इन लोगों को इस्लाम को बदनाम करने का अवसर मिल जाता है। यही वस्तुएं हैं जिन से फिर ये लोग कुछ राजनीतिक लाभ भी उठाते हैं। फिर सामान्य जीवन में मुसलमान कहलाने वालों के आचरण ऐसे होते हैं जिनसे यहां की सरकारें तंग आ जाती हैं। उदाहरणतया काम न करना, अधिकतर यह कि घर बैठे हुए हैं, सामाजिक सहायता (Social Help) लेने लग गए या ऐसे कार्य करना जिन की अनुमति नहीं है, या ऐसे कार्य करना जिन से कर (Tax) की चोरी होती हो इसी प्रकार और बहुत से कार्य हैं। अत: यह अवसर मुसलमान स्वयं उपलब्ध करते हैं और ये चतुर जातियां इससे लाभ उठाती हैं।

कई बार अत्याचार भी उनकी ओर से हो रहा होता है किन्तु मुसलमानों की ग़लत प्रतिक्रिया के कारण पीड़ित भी यही लोग बन जाते हैं और मुसलमानों को अत्याचारी बना देते हैं। यह ठीक है कि कदाचित मुसलमानों की बहुत भारी संख्या इस तोड़ फोड़ को अच्छा नहीं समझती परन्तु नेतृत्व अथवा कुछ उपद्रवी बदनाम करने वाले बदनामी करते हैं।

अब उदाहरणतया एक रिपोर्ट डेनमार्क की है कि तत्पश्चात् क्या हुआ तथा डेनिश जनता की प्रतिक्रिया यह है कि अख़बार के खेद जताने के पश्चात मुसलमानों को चाहिए कि वे इस खेद को स्वीकार कर लें और इस मामले को शान्तिपूर्वक ढंग से समाप्त करें ताकि इस्लाम की मूल शिक्षा उन तक पहुंचे तथा Violence (हिंसा) से बच जाएं। फिर यह

कि TV पर प्रोग्राम आ रहे हैं कहते हैं कि यहां के बच्चे डेनिशों के विरुद्ध प्रतिक्रिया देखकर उनके देश का झण्डा जलाया जा रहा है बहुत डरे और सहमे हुए हैं। वे यह महसूस कर रहे हैं जैसे युद्ध का खतरा है तथा उन्हें मारने की धमकियां दी जा रही हैं। अब जनता में भी और कुछ राजनीतिज्ञों में भी इसे देखकर उन्होंने पसन्द नहीं किया तथा एक प्रतिक्रिया यह भी प्रकट हुई है कि मुसलमानों के हृदयों को इस दु:ख पहुंचाने के बदले में हमें स्वयं एक बड़ी मस्जिद बनाकर मुसलमानों को देनी चाहिए जिस का खर्च यहां की Firms अदा करें तथा कोपन हैगन के सुप्रीम मेयर ने इस प्रस्ताव को पसन्द किया है। फिर मुसलमानों का बहुमत भी जैसा कि मैंने कहा कहता है कि हमें खेद प्रकट करने को स्वीकार कर लेना चाहिए परन्तु उनके एक नेता जो सत्ताईस संगठनों के प्रतिनिधि हैं वह यह बयान दे रहे हैं कि यद्यपि अख़बार ने खेद प्रकट कर दिया है तथापि वह एक बार फिर हम सब के समक्ष आकर खेद प्रकट करे तो हम मुसलमान देशों में जाकर बताएंगे कि अब आन्दोलन को समाप्त कर दें। यह इस्लाम का एक विचित्र भयानक चित्र खींचने का प्रयत्न करते हैं। मैत्री और संधि का हाथ बढ़ाने की बजाए उनका रुझान उपद्रव की ओर है। इन उपद्रवों से जमाअत अहमदिया का तो कोई संबंध नहीं परन्तु हमारे मिशनों को भी फोन आते हैं। कुछ विरोधियों की ओर से धमकी भरे पत्र आते हैं कि हम यह कर देंगे वह कर देंगे। जहां-जहां भी जमाअत की मस्जिदें और मिशन हैं अल्लाह तआला सुरक्षित रखे तथा उनके बुरे इरादों से बचाए।

बहरहाल जब ग़लत प्रतिक्रिया होगी तो उसका दूसरी ओर से भी ग़लत प्रकटन होगा। जैसा कि मैंने कहा कि जब उन लोगों ने अपने

आचरण पर क्षमा मांग ली और फिर मुसलमानों की प्रतिक्रिया जब सामने आती है तो ये लोग अत्याचारी होने के बावजूद अब पीड़ित बन जाते हैं तो अब देखें कि वे डेनमार्क में क्षमा मांग रहे हैं और मुसलमान नेता अड़े हुए हैं। अतः इन मुसलमानों को भी थोड़ा बुद्धि से काम लेना चाहिए, कुछ होश में रहना चाहिए तथा अपनी प्रतिक्रिया की पद्धतियों में परिवर्तन करने चाहिएं।

अहमदी की प्रतिक्रिया की पद्धति

जैसा कि मैंने कहा था शायद अपितु निश्चित तौर पर सबसे अधिक हमारे हृदय इस बात पर दुखी हैं परन्तु हमारी प्रतिक्रिया के ढंग और हैं। यहां मैं यह भी बता दूं कि कुछ असंभव नहीं कि सदैव की भांति ये प्रायः ऐसी विवाद पैदा करने वाली बात भविष्य में भी छोड़ते रहें, कोई न कोई ऐसी हरकत कर जाएं जिस से फिर मुसलमानों के हृदय को कष्ट पहुंचे। इसके पीछे एक उद्देश्य यह ही हो सकता है कि कानूनी तौर पर मुसलमानों पर, विशेषकर पूरब से आने वाले तथा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान से आने वाले मुसलमानों पर इस बहाने से प्रतिबंध लगाने की कोशिश की जाए। बहरहाल इस बात से दृष्टि हटाते हुए कि ये प्रतिबन्ध लगाते हैं या नहीं हमें अपने आचरण, इस्लामी मूल्यों और शिक्षानुसार ढालने चाहिएं।

जैसा कि मैंने कहा था कि इस्लाम के और आंहज़रत[स.अ.व.] के विरुद्ध आरंभ से ही ये षडयंत्र चल रहे हैं परन्तु अल्लाह तआला ने चूंकि उसकी रक्षा करनी है, वादा है। इसलिए वह रक्षा करता चला आ रहा है। समस्त विरोधी प्रयास असफल हो जाते हैं।

इस्लाम और आंहज़रत[स.अ.व.] के विरुद्ध षडयंत्रों की प्रतिरक्षा मसीह मौऊद ने करना थी

इस युग में उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस उद्देश्य के लिए अवतरित किया है कि इस युग में आंहज़रत[स.अ.व.] के अस्तित्व पर जो प्रहार हुए और जिस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने और बाद में आपकी शिक्षा का पालन करते हुए आप के ख़लीफ़ों ने जमाअत का मार्ग-दर्शन किया और प्रतिक्रिया प्रकट की और फिर उसके परिणाम निकले उसके एक - दो उदाहरण प्रस्तुत करता हूं ताकि वे लोग जो अहमदियों पर आरोप लगाते हैं कि हड़तालें न करके और उनमें भाग न लेकर हम यह सिद्ध कर रहे हैं कि हमें आंहज़रत[स.अ.व.] की हस्ती पर कीचड़ उछालने का कोई दर्द नहीं है, उन पर जमाअत के कारनामे स्पष्ट हो जाएं।

हमारी प्रतिक्रिया हमेशा ऐसी होती है और होनी चाहिए जिससे आंहज़रत[स.अ.व.] की शिक्षा और आदर्श शुद्ध रूप से सामने आ जाए। आप[स.] की हस्ती पर अपवित्र प्रहार देखकर विनाशकारी कार्यवाहियां करने के स्थान पर ख़ुदा तआला के समक्ष झुकते हुए उस से सहायता मांगने वाले हम बनते हैं। अब मैं आंहज़रत[स.अ.व.] के सच्चे प्रेमी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आप[स.] से प्रेम रूपी स्वाभिमान पर दो उदाहरण प्रस्तुत करता हूं -

पहला उदाहरण अब्दुल्लाह आथम का है जो ईसाई था। उसने अपनी पुस्तक में आप[स.] के बारे में अपनी अत्यन्त अपवित्र मानसिकता का प्रदर्शन करते हुए (ख़ुदा की शरण) दज्जाल का शब्द प्रयोग किया। उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ इस्लाम और

ईसाइयत के बारे में एक मुबाहसा भी चल रहा था। एक बहस हो रही थी। हज़रत मसीह मौऊद[अ.] फ़रमाते हैं कि मैं पन्द्रह दिन तक बहस में व्यस्त रहा, बहस चलती रही और गुप्त तौर पर आथम की भर्त्सना और चेतावनी के लिए दुआ मांगता रहा। अर्थात जो शब्द उसने कहे उस की पकड़ के लिए। हज़रत मसीह मौऊद[अ.] फ़रमाते हैं कि जब बहस समाप्त हुई तो मैंने उस से कहा कि एक बहस तो समाप्त हो गई परन्तु एक रंग का मुक़ाबला शेष रहा जो ख़ुदा की ओर से है और वह यह है कि आप ने अपनी पुस्तक "अन्दरूना बाइबल" में हमारे नबी[स.अ.व.] को दज्जाल की संज्ञा दी है और मैं आंहज़रत[स.अ.व.] को सच्चा जानता हूं और इस्लाम धर्म को ख़ुदा की ओर से आया विश्वास करता हूं। अत: यह वह मुकाबला है कि इसका निर्णय आसमानी फैसला करेगा कि हम दोनों में से जो अपने कथन में झूठा है और अनुचित तौर पर रसूल[स.] को झूठा और दज्जाल कहता है और सत्य का शत्रु है वह आज के दिन से पन्द्रह महीने तक उस व्यक्ति के जीवन में ही जो सत्य पर है 'हाविया' (नरक) में गिरेगा इस शर्त पर कि सत्य की ओर प्रवृत्त न हो अर्थात् सत्यनिष्ठ और सच्चे नबी को दज्जाल कहने से न रुके तथा धृष्टता और गालियां देना न छोड़े। यह इसलिए कहा गया कि केवल किसी धर्म का इन्कार कर देना संसार में दण्ड का पात्र नहीं ठहरता वरन् धृष्टता, चपलता और गालियां देना दण्ड का पात्र बनाते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कथन है जब मैंने यह कहा तो उस के चेहरे का रंग उड़ गया, चेहरा पीला पड़ गया और हाथ कांपने लगे। तब उसने अविलम्ब अपनी जीभ मुख से निकाली और दोनों हाथ कानों पर रख लिए और हाथों को सर समेत हिलाना आरंभ कर दिया जैसा कि एक भयभीत अपराधी आरोप

का सख़्त इन्कार करके पश्चाताप और विनय के रूप में स्वयं को प्रकट करता है। वह बार-बार कहता था कि क्षमा-क्षमा मैंने अनादर और धृष्टता नहीं की। तत्पश्चात इस्लाम के विरुद्ध कभी नहीं बोला।

यह था आंहज़रत[स.अ.व.] का स्वाभिमान रखने वाले ख़ुदा के शेर की प्रतिक्रिया। वह ललकारते थे ऐसी हरकतें करने वालों को।

फिर एक व्यक्ति लेखराम था जो आंहज़रत[स.अ.व.] को गालियां निकालता था। उसकी उस धृष्टता पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे रोकने का प्रयत्न किया वह न रुका। अन्त में आपने दुआ की तो ख़ुदा ने उसकी भयानक मृत्यु की सूचना दी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला ने एक शत्रु अल्लाह और रसूल के बारे में जो आंहज़रत[स.अ.व.] को गालियां निकालता है और मुंह पर अपवित्र वाक्य लाता है जिसका नाम लेखराम है मुझे वादा दिया और मेरी दुआ सुनी और जब मैंने उस पर बद्दुआ की तो ख़ुदा ने मुझे शुभ सूचना दी कि वह छः वर्ष के अन्दर मारा जाएगा। यह उनके लिए निशान है तो सच्चे धर्म की खोज करते हैं। अतः ऐसा ही हुआ और वह बड़ी भयानक मौत मरा।

आंहज़रत[स.अ.व.] का उत्तम आदर्श संसार के समक्ष प्रस्तुत करो

यही कार्य पद्धतियां हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सिखाईं कि इस प्रकार की गतिविधियां करने वालों को समझाओ, आंहज़रत[स.अ.व.] की ख़ूबियां वर्णन करो। संसार को इन सुन्दर और प्रकाशमान पहलुओं से अवगत करो कि या तो ख़ुदा तआला उन्हें इन गतिविधियों से रोके या

फिर स्वयं उन को पकड़े। ख़ुदा तआला की पकड़ के अपने ढंग हैं वह उचित तौर पर जानता है कि उसे किस ढंग से किसे पकड़ना है।

फिर दूसरी ख़िलाफ़त में एक अत्यन्त बेहूदा पुस्तक "रंगीला रसूल" के नाम से लिखी गई। फिर एक पत्रिका "वर्तमान" ने एक बेहूदा लेख प्रकाशित किया जिससे हिन्दुस्तान के मुसलमानों में एक उत्तेजना ने जन्म लिया। चारों ओर मुसलमानों में एक जोश था और बड़ी कठोर प्रतिक्रिया थी।

इस पर हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा ने मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया - "हे भाइयो ! मैं दुखी हृदय के साथ पुनः आप को कहता हूं कि बहादुर वह नहीं जो लड़ पड़ता है, वह कायर है क्योंकि वह अपनी मनोवृत्ति से पराजित हो गया है।" (अब यह हदीस के अनुसार है कि क्रोध पर नियंत्रण रखने वाला वास्तव में बहादुर होता है। फ़रमाया कि) "बहादुर वह है जो एक स्थायी इरादा कर लेता है और जब तक उसे पूरा न करे उस से पीछे नहीं हटता। आप[रज़ि.] ने फ़रमाया कि - इस्लाम की उन्नति के लिए तीन बातों का संकल्प करो। **प्रथम** बात यह कि ख़ुदा के भय से काम लेंगे और धर्म को लापरवाही की दृष्टि से नहीं देखेंगे। पहले स्वयं अपने कर्म ठीक करो। **द्वितीय** यह कि इस्लाम के प्रचार में पूर्ण रुचि दिखाएंगे। इस्लामी शिक्षा का संसार के प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञान हो, आंहज़रत[स.अ.व.] की ख़ूबियां, अच्छाइयां तथा सुन्दर जीवन का ज्ञान हो। **तृतीय** यह कि आप मुसलमानों को सामाजिक और आर्थिक दासता से बचाने के लिए पूर्ण प्रयास करेंगे।"

(अन्वारुलउलूम जिल्द-9, पृष्ठ - 555, 556)

अब एक सामान्य मुसलमान का भी और नेताओं का भी कर्त्तव्य है। अब देखें कि आज़ादी के बावजूद ये मुसलमान देश तो आज़ाद कहलाते हैं आज़ाद होने के बावजूद अभी तक जीवन-पद्धति और आर्थिक दासता के शिकार हैं उन पश्चिमी जातियों के कृतज्ञ हैं उनका अनुसरण करने की ओर लगे हुए हैं, स्वयं कार्य नहीं करते। अधिकतर हमारी निर्भरता उन पर है और इसीलिए यह प्राय: मुसलमानों की भावनाओं से खेलते भी रहते हैं। फिर आप[रज़ि.] ने नबी करीम[स.अ.व.] के पवित्र जीवन पर जलसों का भी आयोजन किया। ये उपाय हैं प्रदर्शन के न कि तोड़-फोड़ करना, उपद्रव फैलाना। इन बातों में जो आपने मुसलमानों से कही थीं सब से अधिक अहमदी सम्बोधित हैं।

इन देशों की कुछ ग़लत परम्पराएं अप्रत्याशित तौर पर हमारे कुछ ख़ानदानों में प्रवेश कर रही हैं। मैं अहमदियों को कहता हूं कि आप लोग भी संबोधित थे उनकी जीवन पद्धति की अच्छी बातें हैं उन्हें तो अपनाएं परन्तु जो बातें ग़लत हैं उनसे हमें बचना चाहिए। अत: हमारी प्रतिक्रिया यही होनी चाहिए कि तोड़-फोड़ करने की बजाए हमें स्वयं की ओर देखना चाहिए। हम देखें कि हमारे कार्य क्या हैं, हमारे अन्दर ख़ुदा का भय कितना है, उसकी इबादत की ओर कितना ध्यान है, धार्मिक आदेशों का पालन करने की ओर कितना ध्यान है, अल्लाह तआला का सन्देश पहुंचाने की ओर कितना ध्यान है।

फिर देखें कि चौथी ख़िलाफ़त का दौर था जब रुश्दी ने बड़ी अपमानजनक पुस्तक लिखी थी। उस समय हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह.] ने ख़ुत्बे भी दिए थे और एक पुस्तक भी लिखवाई थी। फिर जिस प्रकार कि मैंने कहा ये हरकतें होती रहती हैं। गत वर्ष के आरंभ में भी

इस प्रकार का एक लेख आया था। आंहज़रत[स.अ.व.] के जीवन के बारे में। उस समय भी मैंने जमाअत को और अधीनस्थ समितियों को भी ध्यान दिलाया था कि लेख लिखें, पत्र लिखें, समपर्क बढ़ाएं। आंहज़रत[स.अ.व.] के जीवन की विशेषताएं और ख़ूबियां वर्णन करें। अतः यह तो आप[स.] के जीवन के सुन्दर पक्षों को संसार को दिखाने का प्रश्न है जो तोड़-फोड़ से तो प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए यदि हर खानदान से संबंध रखने वाले अहमदी प्रत्येक देश में दूसरे शिक्षित और समझदार मुसलमानों को भी सम्मिलित करें कि तुम भी इस प्रकार शान्तिपूर्वक यह प्रतिक्रिया प्रकट करो, अपने सम्पर्क बढ़ाओ और लिखो तो हर देश में हर ख़ानदान में समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाएगा फिर जो करेगा उसका मामला ख़ुदा के साथ है।

अल्लाह तआला ने आंहज़रत[स.अ.व.] को समस्त संसार के लिए साक्षात दया बना कर भेजा जैसा कि स्वयं फ़रमाता है -

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ

(अलअंबिया - 108)

कि हमने तुझे नहीं भेजा परन्तु समस्त संसारों के लिए दया के तौर पर और आप से बड़ी हस्ती दया बांटने वाली हस्ती न पहले कभी पैदा हुई और न बाद में हो सकती है। हां आप का आदर्श है जो हमेशा क़ायम है तथा प्रत्येक मुसलमान को उस पर चलने का प्रयत्न करना चाहिए और इसके लिए भी सबसे बड़ा दायित्व अहमदी का है हम पर ही लागू होता है। अतः बहरहाल आप[स.] तो समस्त संसारों के लिए दया थे और ये लोग आप[स.] का यह चित्र प्रस्तुत करते हैं जिस से नितान्त भयानक कल्पना उभरती है। इसलिए हमें आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम, मुहब्बत, दया

के आदर्श को संसार को बताना चाहिए। स्पष्ट है कि इसको बताने के लिए मुसलमानों को अपने आचरण भी परिवर्तित करने होंगे। आतंकवाद का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। आंहज़रत[स.अ.व.] ने तो युद्ध से बचने का भी सदैव प्रयास किया है जब तक कि आप पर मदीना में आकर युद्ध थोपा नहीं गया। बहरहाल अल्लाह तआला की आज्ञा से प्रतिरक्षा में युद्ध करना पड़ा, परन्तु वहां भी क्या आदेश था कि

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ط
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ○

(अलबक़रह - 191)

कि हे मुसलमानो ! लड़ो ख़ुदा के मार्ग में (उनसे) जो तुम से लड़ते हैं परन्तु अत्याचार न करो। अल्लाह निश्चय ही अत्याचार करने वालों को पसन्द नहीं करता और आंहज़रत[स.अ.व.] स्वयं पर उतरने वाली शरीअत का सब से अधिक पालन करने वाले थे। उनके बारे में ऐसे असभ्य विचारों को प्रकट करना बहुत बड़ा अन्याय है। बहरहाल जिस प्रकार ये कहते हैं कि उन्होंने क्षमा मांग ली है और हमारे प्रचारक की भी रिपोर्ट है कि उनमें से एक ने क्षमा मांगी थी और इस बात को प्रकट भी किया था।

जमाअत अहमदिया की कार्टूनों के प्रकाशन के विरुद्ध त्वरित कार्यवाही

अन्य मुसलमानों को तो यह जोश है कि हड़तालें कर रहे हैं, तोड़-फोड़ कर रहे हैं क्योंकि उनकी प्रतिक्रिया यही है कि तोड़-फोड़ तथा हड़तालें हों और जमाअत अहमदिया की इस घटना के पश्चात् जो त्वरित प्रतिक्रिया होनी चाहिए थी वह हुई। अहमदी की प्रतिक्रिया यह थी कि उन्होंने तुरन्त अख़बारों से सम्पर्क किया। फिर यह कोई आज की बात

नहीं है कि 2006 ई. की फ़रवरी में हड़तालें हो रही हैं यह घटना तो गत वर्ष की है। सितम्बर में यह कार्यवाही हुई थी तो उस समय हमने क्या किया था। जैसा कि मैंने कहा कि यह सितम्बर की कार्यवाही है या अक्टूबर के आरंभ की कह लें। हमारे प्रचारक ने उस समय तुरन्त एक विस्तृत लेख तैयार किया और जिस अख़बार में कार्टून प्रकाशित हुआ था उनको भिजवाया और चित्रों के प्रकाशित करने पर विरोध प्रकट किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा के बारे में बताया कि यह हमारा विरोध इस प्रकार है, हम जुलूस तो नहीं निकालेंगे परन्तु क़लम का जिहाद है जो हम तुम्हारे साथ करेंगे और चित्र के प्रकाशन पर खेद प्रकट करते हैं। उसको बताया कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तो होगी परन्तु इस का अर्थ यह तो नहीं कि दूसरों का हृदय दुखाया जाए। बहरहाल इसकी सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई। एक लेख भी अखबार को भेजा गया था जो अख़बार ने प्रकाशित कर दिया। डेनिश लोगों की ओर से बड़ी अच्छी प्रतिक्रिया हुई क्योंकि मिशन में फोन द्वारा तथा पत्रों द्वारा भी सन्देश आए उन्होंने हमारे लेख को बहुत पसन्द किया। फिर एक मीटिंग में जर्नलिस्ट यूनियन के अध्यक्ष की ओर से सम्मिलित होने का निमंत्रण मिला। वहां गए, वहां स्पष्ट किया कि उचित है कि तुम्हारा कानून अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की अनुमति देता है परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि दूसरों के धार्मिक पेशवाओं और आदरणीय हस्तियों को अपमान की दृष्टि से देखो और उनका अपमान करो तथा यहां जो मुसलमान और ईसाई इस समाज में इकट्ठे रह रहे हैं उनकी भावनाओं का ध्यान रखना बहरहाल आवश्यक है क्योंकि इसके बिना शान्ति स्थापित नहीं हो सकती।

उन्हें बताया कि आंहज़रत[स.अ.व.] की कितनी सुन्दर शिक्षा है और कैसा

आदर्श है और आप[स.] कितने उच्च आचरण रखते थे और कितने लोगों के हमदर्द थे, किस प्रकार हमदर्द थे। ख़ुदा की प्रजा से सहानुभूति और प्रेम के द्योतक थे। उन्हें कुछ घटनाएं बताईं कि बताओ ऐसी शिक्षा देने वाला व्यक्ति और ऐसे आचरण वाला मनुष्य है उसके बारे में ऐसा चित्र बनाना उचित है ? अत: जब हमारे मिशनरी की यह बातें हुईं तो उन्होंने बहुत पसन्द किया और सराहना की। एक कार्टूनिस्ट ने तुरन्त यह प्रकट किया कि यदि इस प्रकार की मीटिंग पहले हो जाती तो वे कदापि कार्टून न बनाते। अब उन्हें पता चला है कि इस्लाम की शिक्षा क्या है और सभी ने इस बात को प्रकट किया कि ठीक है डायलाग (Dialogue) का क्रम चलता रहना चाहिए।

फिर यूनियन के अध्यक्ष की ओर से भी प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई जिसका मसौदा भी सब के सामने सुनाया गया और टी वी पर साक्षात्कार हुआ जो बड़ा ही अच्छा रहा। तत्पश्चात् मिनिस्टर से भी मीटिंग की। बहरहाल जमाअत प्रयत्न करती है। अन्य देशों में भी इस प्रकार हुआ है। बहरहाल जहां इसकी नींव थी वहां जमाअत ने पर्याप्त कार्य किया है और कार्टून का कारण जो बना वह यह है कि डेनमार्क में एक डेनिश राइटर ने एक पुस्तक लिखी है उसका अनुवाद यह है कि "आंहज़रत[स.अ.व.] का जीवन और क़ुर्आन" जो बाज़ार में आ चुकी है। इस पुस्तक वाले ने आंहज़रत[स.अ.व.] के कुछ चित्र बनाकर भेजने को कहा था तो कुछ ने बनाए परन्तु उन पर अपना नाम प्रकट नहीं किया कि मुसलमानों की प्रतिक्रिया होगी। यह पुस्तक है जो इसका कारण बन रही है। इस अख़बार में भी कार्टून ही कारण बना था। इस बारे में भी उनको स्थायी प्रयत्न करते रहना चाहिए और संसार में प्रत्येक स्थान पर यदि इसे पढ़कर जहां जहां

भी आपत्तिजनक बातें हों वे प्रस्तुत करनी चाहिएं और उत्तर देने चाहिएं, परन्तु वहां डेनमार्क में भी यह कल्पना है। कहते हैं कि कुछ मुसलमानों के द्वारा ग़लत कार्टून जो हमने प्रकाशित ही नहीं किए वह दिखाकर मुसलमान संसार को भड़काने का प्रयास कर रहे हैं। मालूम नहीं यह सत्य या असत्य है परन्तु हमारे इस तुरन्त ध्यान दिलाने से उनमें बहरहाल अहसास पैदा हुआ है। यह उसी समय आरंभ हो गया था, इन लोगों को तो आज मालूम हो रहा है जबकि यह तीन माह पूर्व की बात है।

अत: जैसा कि मैंने कहा था कि प्रत्येक देश में आंहज़रत[स.अ.व.] के जीवन के पक्षों को उजागर करने की आवश्यकता है विशेष तौर पर जो इस्लाम के बारे में उन्मादी युद्धप्रिय होने की कल्पना है उसका तर्कों के साथ खण्डन करना हमारा कर्त्तव्य है। मैंने पूर्व में भी कहा था कि अख़बारों में भी प्रचुरता के साथ लिखें। अखबारों को, लेखकों को नबी करीम[स.अ.व.] के जीवन-चरित्र पर पुस्तकें भी भेजी जा सकती हैं।

अहमदी युवाओं को पत्रकारिता में जाना चाहिए

यह भी एक प्रस्ताव है भविष्य के लिए। जमाअत को यह भी योजना बनानी चाहिए कि युवा जर्नलिज़्म (Journalism) में अधिक से अधिक जाने का प्रयत्न करें जिनको इस ओर अधिक रुचि हो ताकि अखबारों के अन्दर भी उन स्थानों पर भी, उन लोगों के साथ भी हमारा प्रभाव और आना जाना रहे क्योंकि ये गतिविधियां प्राय: होती रहती हैं। यदि मीडिया के साथ अधिक से अधिक घनिष्ठ संबंध स्थापित होगा तो इन बातों को रोका जा सकता है। यदि फिर भी इसके बाद कोई धृष्टता दिखाता है तो ऐसे लोग उस वर्ग में आते हैं जिन पर अल्लाह तआला

ने इस संसार में भी अभिशाप डाला है और आख़िरत में भी। जैसा कि उसका कथन है -

اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا۝

(सूरह अलअहज़ाब - 58)

अर्थात् वे लोग जो अल्लाह और रसूल को कष्ट पहुंचाते हैं अल्लाह ने उन पर इस लोक में भी अभिशाप डाला है और परलोक में भी और उसने उनके लिए अपमानजनक अज़ाब तैयार किया है। यह आदेश समाप्त नहीं हो गया। हमारे नबी[स.अ.व.] जीवित नबी हैं। आपकी शिक्षा हमेशा जीवनदायिनी शिक्षा है, आपकी शरीअत हर युग की समस्याओं का समाधान करने वाली शरीअत है। आप[स.] का अनुसरण करने से अल्लाह तआला का सानिध्य मिलता है। अतः आप के अनुयायियों को जो कष्ट पहुंचाया जा रहा है किसी भी माध्यम से उस पर भी आज चरितार्थ होता है। अल्लाह तआला का अस्तित्व जीवित है वह देख रहा है कि कैसी अनुचित कार्यवाहियां कर रहे हैं।

इसलिए संसार को अवगत करना हमारा कर्त्तव्य है। संसार को हमें बताना होगा कि जो दुःख या कष्ट तुम पहुंचाते हो अल्लाह तआला उसका दण्ड देने की आज भी शक्ति रखता है। इसलिए अल्लाह और उसके रसूल का हृदय दुखी करने से रुक जाओ, परन्तु जहां इसके लिए इस्लामी शिक्षा और आंहज़रत[स.अ.व.] के आदर्श के बारे में संसार को बताना है वहां अपने कर्म भी ठीक करने होंगे, क्योंकि हमारे अपने कर्म ही हैं जो संसार के मुख बन्द करेंगे और यही हैं जो संसार का मुख

बन्द करने में सबसे मुख्य भूमिका अदा करते हैं। जैसा कि मैंने रिपोर्ट में बताया था कि वहां एक मुसलमान विद्वान पर द्विमुखता का यही आरोप लगाया जा रहा है कि हमें कुछ कहता है और वहां जाकर कुछ और करता है, उकसाता है। वह रिपोर्ट शायद मैंने पढ़ी नहीं। अतः हमें अपने प्रत्यक्ष और आन्तरिक को अपने कथन और कर्म को समान करके यह क्रियात्मक आदर्श प्रदर्शित करने होंगे।

झण्डे जलाने या तोड़-फोड़ करने से आंहज़रत[स.अ.व.] का सम्मान स्थापित नहीं हो सकता

मुसलमान कहलाने वालों को भी मैं यह कहता हूं कि इस बात से हटकर कि वे अहमदी हैं या नहीं, शिया हैं या सुन्नी हैं या किसी भी मुसलमान सम्प्रदाय से संबंध रखने वाले हैं। आंहज़रत[स.अ.व.] पर जब आक्रमण हो तो साम्प्रदायिक जोश की बजाए अपने कर्मों को ठीक करें कि किसी को उंगली उठाने का अवसर ही न मिले। क्या ये आगें लगाने वाले समझते हैं कि आंहज़रत[स.अ.व.] के सम्मान और स्थान का इतना ही महत्त्व है कि झण्डे जलाने से अथवा किसी दूतावास का सामान जलाने से बदला ले लिया। नहीं, हम तो उस नबी के मानने वाले हैं जो आग बुझाने आया था, वह प्रेम का पैग़म्बर बनकर आया था, वह अमन का राजकुमार था। अतः किसी भी कड़ी कार्यवाही की बजाए संसार को समझाएं और आप[स.] की सुन्दर शिक्षा के बारे में बताएं।

अल्लाह तआला मुसलमानों को बुद्धि और बोध दे परन्तु मैं अहमदियों से यह कहता हूं कि उन को तो मालूम नहीं कि यह बुद्धि और बोध आए कि न आए परन्तु आप में से हर बच्चा, हर बूढ़ा, हर युवा, हर पुरुष और हर स्त्री बेहूदा कार्टून प्रकाशित होने की प्रतिक्रिया के तौर पर

स्वयं को ऐसी आग लगाने वालों में जो कभी न बुझने वाली आग हो जो किसी देश के झण्डे या सम्पत्तियों को लगाने वाली आग न हो जो कुछ ही मिनटों में या कुछ घंटों में बुझ जाए। अब बड़े जोश से लोग खड़े हैं (पाकिस्तान का एक चित्र था) आग लगा रहे हैं जैसे कोई बड़ा युद्ध लड़ रहे हैं। यह आग पांच मिनट में बुझ जाएगी। हमारी आग तो ऐसी होनी चाहिए तो हमेशा लगी रहने वाली आग हो। वह आग है आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम और अनुराग की आग जो आप[स.] के प्रत्येक आदर्श को अपनाने और संसार को दिखाने की आग हो जो आपके हृदयों और सीनों में लगे तो फिर लगी रहे। यह आग ऐसी हो जो दुआओं में भी ढले और उसकी ज्वाला हर पल आकाश तक पहुंचती रहे।

अपनी पीड़ा को दुआओं में ढालें और आंहज़रत[स.अ.व.] पर अत्यधिक दरूद भेजें

अतः यह आग है जो प्रत्येक अहमदी ने अपने हृदय में लगानी है और अपनी पीड़ा को दुआओं में ढालना है परन्तु इसके लिए फिर माध्यम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] ने ही बनना है। अपनी दुआओं की स्वीकारिता के लिए और अल्लाह तआला के प्रेम को खींचने के लिए, संसार की निरर्थक बातों से सुरक्षित रहने के लिए इस प्रकार के जो उपद्रव उठते हैं उनसे स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम को हृदयों में सुलगता रखने के लिए, अपने दोनों लोक संभालने के लिए आंहज़रत[स.अ.व.] पर असंख्य दरूद भेजने चाहिए। इस उपद्रव से परिपूर्ण युग में स्वयं को आप[स.] के प्रेम में तन्मय रखने के लिए अपनी नस्लों को अहमदियत और इस्लाम पर स्थापित रखने के लिए प्रत्येक

अहमदी को अल्लाह तआला के इस आदेश की सख़्ती से पाबन्दी करनी चाहिए कि

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

(अलअहज़ाब - 57)

कि हे लोगो ! जो ईमान लाए हो तुम भी उस पर दरूद और सलाम भेजा करो क्योंकि अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते नबी पर दया भेजते हैं।

आंहज़रत[स.अ.व.] ने एक बार फ़रमाया - अपितु इसके तो कई उद्धरण हैं कि मुझ पर तो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों का दरूद भेजना ही पर्याप्त है। तुम्हें जो आदेश है वह तुम्हें सुरक्षित रखने के लिए है।

(तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर उद्धरण द्वारा - तरग़ीब इस्फ़हानी मुस्नद दैली दरूद शरीफ़ के उद्धरण से, पृष्ठ-158 सम्पादक मौलाना मुहम्मद इस्माईल साहिब हलालपुरी नवीन संस्करण)

अतः हमें अपनी दुआओं की स्वीकारिता के लिए इस दरूद की आवश्यकता है। शेष इस आयत और इस हदीस का जो प्रथम भाग है उस से इस बात की गारन्टी मिल गई है कि आप[स.] के स्थान को गिराने और उपहास करने को ये लोग जितना चाहें प्रयास कर लें अल्लाह और उसके फ़रिश्ते तो आप पर सलामती भेज रहे हैं उनकी सलामती की दुआ से विरोधी कभी सफल नहीं हो सकता। आंहज़रत[स.अ.व.] के मुबारक अस्तित्व पर आक्रमणों से उन्हें कभी कुछ प्राप्त नहीं हो सकता और ख़ुदा ने चाहा तो इस्लाम उन्नति करेगा क्योंकि उसने संसार पर विजयी होना है और सम्पूर्ण विश्व पर आंहज़रत[स.अ.व.] का झण्डा लहराना है।

जैसा कि मैंने कहा था कि इस युग में आपके सच्चे प्रेमी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा अल्लाह तआला ने यह निश्चित कर रखा है।

हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी का एक उद्धरण है - कहते हैं कि "एक बार मैंने स्वयं हज़रत इमाम अलैहिस्सलाम से सुना - आप फ़रमाते थे कि दरूद शरीफ के कारण और तथा उसे अधिक पढ़ने से ख़ुदा ने मुझे ये पद प्रदान किए हैं और कहा कि मैं देखता हूं कि अल्लाह तआला के वरदान अद्‌भुत आभामय रूप में आंहज़रत[स.अ.व.] की ओर जाते हैं और फिर वहां जा कर आंहज़रत[स.अ.व.] के सीने में समा जाते हैं और वहां से निकल कर उनकी असीमित नालियां होती हैं और प्रत्येक हक़दार को उस के हक़ के अनुसार पहुंचती हैं। निश्चय ही कोई वरदान बिना माध्यम आंहज़रत[स.अ.व.] दूसरों तक पहुंच ही नहीं सकता और कहा कि दरूद शरीफ़ क्या है। रसूले करीम[स.अ.व.] के उस सिंहासन को गति देना है जिस से प्रकाश की ये नालियां निकलती हैं जो अल्लाह तआला का वरदान और कृपा प्राप्त करना चाहता है उस पर अनिवार्य है कि वह बड़ी प्रचुरता के साथ दरूद शरीफ पढ़े ताकि उस वरदान में गति पैदा हो।"

(अख़बार अलहकम जिल्द-7, संख्या-8, पृष्ठ-7, पर्चा 28 फ़रवरी 1903 ई.)

अल्लाह करे कि प्रत्येक युग के उपद्रवों से बचने के लिए और आंहज़रत[स.अ.व.] का प्रेम हृदयों में स्थापित रखने के लिए आप की लाई हुई शिक्षा को संसार में फैलाने के लिए आप पर दरूद भेजते हुए, अल्लाह की ओर झुकते तथा उस से सहायता मांगते हुए उसकी कृपा और वरदान के उत्तराधिकारी बनते चले जाएं अल्लाह हमारी सहायता करे।

❀ आंहज़रत[स.अ.व.] के अपमान पर आधारित अनुचित गतिविधियों पर हठधर्मी और बढ़ी धृष्टता के साथ निरन्तर करते चले जाना अल्लाह तआला के क्रोध को भड़काने का कारण है।

❀ ये भूकम्प, ये तूफान और यह आपदाएं जो संसार में आ रही हैं ये केवल एशिया के लिए विशेष नहीं हैं। ख़ुदा के मसीह ने यूरोप को भी चेतावनी दी हुई है और अमरीका को भी चेतावनी दी हुई है। इसलिए ख़ुदा का कुछ भय करो और ख़ुदा के स्वाभिमान को न ललकारो।

❀ वह ख़ुदा जो अपना और अपने प्रियजनों का स्वाभिमान रखने वाला है वह अपने अज़ाब की झलकियों के साथ आने की भी शक्ति रखता है।

❀ मुसलमान देश और मुसलमान कहलाने वाले भी अपने आचरण ठीक करें। आंहज़रत[स.अ.व.] के स्थान और आप की ख़ूबियों को संसार के समक्ष रखें।

❀ आज मुसलमानों को वरन् समस्त संसार की सही दिशा को सुनिश्चित करने के लिए अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी[स.अ.व.] के सच्चे प्रेमी को भेजा है उसे पहचानें उसका अनुसरण करें।

❀ इस्लाम की प्रतिष्ठा और वैभव तथा आंहज़रत[स.अ.व.] की पवित्रता को मसीह व महदी की जमाअत ने ही स्थापित करना और कराना है इन्शा अल्लाह।

❀ अहमदी अपने-अपने क्षेत्र में प्रत्येक धर्म वाले को खुलकर समझाएं कि प्रत्येक धर्म की शिक्षा के अनुसार जिसने आना था आ चुका है।

ख़ुत्बः जुमअः

दिनांक 17 फरवरी 2006 ई., स्थान मस्जिद बैतुल फ़ुतूह लन्दन

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

पिछले जुमे के खुत्बे में, इससे पहले जो दो ख़ुत्बे दिए गए थे उन्हीं के विषय में कुछ कहना चाहता था, परन्तु फिर लज्जनीय एवं अपमानजनक कृत्य जो पश्चिम के कुछ समाचार पत्रों ने किया जिसके कारण मुस्लिम संसार में क्रोध और उत्तेजना की एक लहर दौड़ी और उस पर जो प्रतिक्रिया प्रकट हुई उसके संबंध में मैंने कुछ कहना आवश्यक समझा ताकि अहमदियों को भी ज्ञात हो कि ऐसी परिस्थितियों में हमारे आचरण कैसे होने चाहिएं। वैसे तो ख़ुदा की कृपा से ज्ञात है किन्तु स्मरण कराने की आवश्यकता पड़ती है और संसार को भी ज्ञात हो कि एक मुसलमान की उचित प्रतिक्रिया ऐसी परिस्थितियों में क्या होती है।

दूसरों की भावनाओं से खेलना न तो प्रजातंत्र है और न ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

जहां हम संसार को समझाते हैं कि किसी भी धर्म की पवित्र हस्तियों के बारे में किसी भी प्रकार का अनुचित विचार प्रकट करना, किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता के क्षेत्र में नहीं आता। तुम जो प्रजातंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के चैम्पियन बन कर दूसरों की भावनाओं से खेलते हो यह न तो प्रजातंत्र है और न ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। प्रत्येक वस्तु की एक सीमा होती है और कुछ नैतिकता के नियम होते हैं, जिस प्रकार प्रत्येक व्यवसाय में एक कार्य-पद्धति है इसी प्रकार पत्रकारिता के लिए भी एक आचार संहिता है। इसी प्रकार किसी भी प्रकार और पद्धति की सरकार हो उसके भी नियम हैं राय की स्वतंत्रता का कदापि यह अर्थ नहीं है कि दूसरे की भावनाओं से खेला जाए, उसे कष्ट पहुंचाया जाए। यदि यही स्वतंत्रता है जिस पर पश्चिम को गर्व है। तो यह स्वतंत्रता उन्नति की ओर ले जाने वाली नहीं है अपितु यह अवनति की ओर ले जाने वाली स्वतंत्रता है।

आहंज़रत[स.अ.व.] के अपमान पर आधारित गतिविधियों पर आग्रह ख़ुदा के प्रकोप को भड़काने का कारण है।

पश्चिम बड़ी तीव्रता से धर्म को छोड़कर स्वतंत्रता के नाम पर हर मैदान में नैतिक मूल्यों को कुचल रहा है उसे मालूम नहीं कि किस प्रकार ये लोग अपने विनाश को निमंत्रण दे रहे हैं। अभी इटली में एक मंत्री जी ने एक नवीन फ़साद पैदा करने की बात कही है कि यह बेहूदा और अश्लील कार्टून टी शर्ट पर छाप कर पहनने आरंभ कर दिए हैं

वरन् दूसरों को भी कहा कि मुझसे लो। सुना है वहां बच्चे भी जा रहे हैं। कहते हैं कि मुसलमानों का उपचार यही है। अतः इन लोगों को समझ लेना चाहिए कि हमें यह तो नहीं मालूम कि मुसलमानों का यह उपचार है या नहीं परन्तु इन गतिविधियों से वे ख़ुदा के प्रकोप को भड़काने का माध्यम अवश्य बन रहे हैं। जो कुछ मूर्खता में हो गया वह तो हो गया परन्तु इसे निरन्तरता से और धृष्टतापूर्वक करते चले जाना और फिर उस पर हठधर्मी करना कि हम जो कर रहे हैं उचित है।

इन परिस्थितियों में अहमदी की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए

यह बात अल्लाह तआला के प्रकोप अवश्य भड़काती है। बहरहाल जैसा कि मैंने कहा था शेष मुसलमानों की प्रतिक्रिया तो वे जानें परन्तु एक अहमदी मुसलमान की प्रतिक्रिया यह होनी चाहिए कि उनको समझाएं, ख़ुदा के प्रकोप से डराएं। जैसा कि पहले भी मैं कह चुका हूं आंहज़रत[स.अ.व.] का चरित्र रूपी सुन्दर चित्रण संसार के समक्ष प्रस्तुत करें और अपने सामर्थ्यवान और शक्तिशाली ख़ुदा के आगे झुकें और उससे सहायता मांगें। यदि ये लोग प्रकोप की ओर ही बढ़ रहे हैं तो वह ख़ुदा जो अपना और अपने प्यारों का स्वाभिमान रखने वाला है अपनी प्रकोपी झलकियों के साथ आने की भी शक्ति रखता है। वह जो समस्त शक्तियों का स्वामी है, वह जो मानव निर्मित कानून का पाबन्द नहीं है प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है। उसकी चक्की जब चलती है तो फिर मनुष्य की विचार शक्ति उसे अपनी परिधि में नहीं ले सकती, फिर उससे कोई बच नहीं सकता।

इसलिए अहमदियों के पश्चिम के कुछ लोगों के या कुछ देशों के ये व्यवहार देखकर ख़ुदा तआला के समक्ष और अधिक झुकना चाहिए। ख़ुदा के मसीह ने यूरोप को भी चेतावनी दी हुई है और अमरीका को भी वार्निंग दी हुई है। ये भूकम्प, ये तूफ़ान और ये आपदाएं जो संसार में आ रही हैं ये केवल एशिया के लिए विशेष नहीं हें। अमरीका ने तो इसकी एक झलक देख ली है। अतः हे यूरोप ! तू भी सुरक्षित नहीं है। इसलिए कुछ ख़ुदा का भय करो और ख़ुदा के स्वाभिमान को न ललकारो। इसके साथ ही मैं यह कहता हूं कि मुसलमान देश या मुसलमान कहलाने वाले भी अपने आचरण ठीक करें। ऐसे आचरण और ऐसी प्रतिक्रियाएं प्रकट करें जिन से आंहज़रत[स.अ.व.] के स्थान को, आपकी सुन्दरता को संसार के समक्ष रखें, उनको दिखाएं। यह वह उचित प्रतिक्रिया है जो एक मोमिन की होनी चाहिए।

इस्लाम की प्रतिष्ठा और वैभव तथा आंहज़रत[स.अ.व.] की पवित्रता को मसीह व महदी की जमाअत ने ही स्थापित करना है

अब आजकल कुछ अनुचित कार्यवाहियां हो रही हैं। यह कौन सी इस्लामी प्रतिक्रिया है कि अपने ही देश के लोगों को मार दिया, अपनी ही सम्पत्तियों को आग लगा दी। इस्लाम तो अन्य जातियों की शत्रुता में भी न्याय को, इन्साफ़ को हाथ से छोड़ने की अनुमति नहीं देता, बुद्धि से सोच-समझ कर चलने का आदेश देता है कहां यह कि पिछले दिनों जो पाकिस्तान में हुआ या दूसरे इस्लामी देशों में हो रहा है। बहरहाल उन इस्लामी देशों में चाहे वह अन्य देश वालों के व्यवसाय को या दूतावासों

को हानि पहुंचाने की गतिविधियां हैं या अपने ही लोगों को हानि पहुंचाने की कार्यवाहियां हैं यह इस्लाम को बदनाम करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं। इसलिए मुसलमानों को चाहिए, मुसलमान जनता को चाहिए कि इन ग़लत प्रकार के उलेमा और लीडरों के पीछे चलने की बजाए उनके पीछे चलकर अपने इस लोक और परलोक को खराब करने की बजाए बुद्धि से काम लें। आज मुसलमानों की अपितु समस्त संसार की उचित दिशा को सुनिश्चित करने के लिए अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी[स.अ.व.] के सच्चे प्रेमी को भेजा है, उसको पहचानें, उसका अनुसरण करें और संसार का सुधार और संसार में आंहज़रत[स.अ.व.] का झण्डा गाड़ने के लिए उस मसीह और महदी की जमाअत में सम्मिलित हों कि अब कोई दूसरा उपाय, कोई दूसरा पथ-प्रदर्शक हमें आंहज़रत[स.अ.व.] की सुन्नत पर चलने और चलाने वाला नहीं बना सकता। इस्लाम की प्रतिष्ठा और वैभव को यथावत करने और आप[स.] की पवित्रता को मसीह और महदी की जमाअत ने ही स्थापित करना है और कराना है। इन्शाअल्लाह।

मसीह उतरने (नुज़ूल) का वास्तविक अर्थ तथा मसीह व महदी के कुछ कार्य एवं उसकी सच्चाई के कुछ तर्क

अतः इस पर प्रत्येक को, मुसलमान कहलाने वालों को भी विचार करना चाहिए और हमें भी उन्हें समझाना चाहिए और केवल नाम के उलेमा की उन बहसों में नहीं पड़ना चाहिए कि जो आने वाला मसीह था अभी नहीं आया या उसने तो अमुक स्थान पर उतरना है अर्थात् महदी ने अमुक स्थान पर आना है। वास्तव में जिस प्रकार यह दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाता है यह एक हदीस को न समझने के कारण है। इस रिवायत

को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है। आप कहते हैं कि :-

"यदि यह कहा जाए हदीसें स्पष्ट और साफ शब्दों में बता रही हैं कि मसीह इब्ने मरयम आसमान से उतरेगा और दमिश्क के पूर्वी मीनार के पास उसका उतरना होगा और फ़रिश्तों के कंधों पर उसके हाथ होंगे। अतः इस स्पष्ट और साफ़ बयान से इन्कार क्योंकर किया जाए ?" (अर्थात् ये लोग कहते हैं कि जो साफ़-साफ़ और स्पष्ट बयान है उस से किस प्रकार इन्कार किया जा सकता है। ये लोग कहते हैं - अतः इसके उत्तर में आप ने कहा कि :-)

"इसका उत्तर यह है कि आकाश से उतरना इस बात को सिद्ध नहीं करता कि वास्तव में पार्थिव अस्तित्व आकाश से उतरे अपितु सही हदीसों में आकाश का शब्द भी नहीं है और यों तो नुज़ूल का शब्द सामान्य है। जो व्यक्ति एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर ठहरता है उसे भी यही कहते हैं कि उस स्थान पर उतरा है। जैसे कहा जाता है कि अमुक स्थान पर सेना उतरी है या डेरा उतरा है। क्या इस से यह समझा जाता है कि वह सेना या डेरा आसमान से उतरा है। इसके अतिरिक्त ख़ुदा तआला ने तो क़ुर्आन करीम में स्पष्ट कह दिया है कि आंहज़रत[स.अ.व.] भी आसमान से ही उतरे हैं अपितु एक स्थान पर कहा है कि लोहा भी हमने आसमान से उतारा है। अतः स्पष्ट है कि यह आसमान से उतरना उस प्रकार और रंग का नहीं है जिस प्रकार का लोग समझ रहे हैं।"

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-3, पृष्ठ 132-133)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा कि हदीसें इसकी व्याख्या से भरी पड़ी हैं। लोग स्वयं तो इतना ज्ञान नहीं रखते और उलेमा गलत

मार्ग-दर्शन करते हैं। आप ने इस से आगे कहा -

"इसलिए यहूदियों ने भी ग़लती खाई थी और हज़रत ईसा को स्वीकार नहीं किया था।"

अत: यह सारी लम्बी बातें और विवरण हैं ख़ुत्बे में तो वर्णन नहीं हो सकतीं। अब जिस प्रकार परिस्थितियां परिवर्तित हो रही हैं अहमदियों को भी चाहिए कि इन बातों को खोलकर अपने वातावरण में वर्णन करें ताकि जिस सीमा तक और जितनी भाग्यशाली आत्माएं बच सकती हैं बच जाएं, जो सभ्य और सुशील लोग बच सकते हैं बच जाएं। अहमदी अपने-अपने क्षेत्र में खुल कर हर धर्म वाले को समझाएं कि प्रत्येक धर्म की शिक्षा के अनुसार जिसने आना था वह आ चुका है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं कि :-

"अब मैं वह हदीस जो अबू दाऊद ने अपनी सही में लिखी है दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करके उसके चरितार्थ की ओर उन्हें ध्यान दिलाता हूं। अत: स्पष्ट हो कि यह भविष्यवाणी जो अबू दाऊद की सही में लिखी है कि एक व्यक्ति हारिस नाम अर्थात 'हुर्रास मावरा-उल-अन्हार' से अर्थात् समरकन्द की ओर से निकलेगा जो आले रसूल को दृढ़ता देगा, जिसकी सहायता प्रत्येक मोमिन पर अनिवार्य होगी। मुझ पर इल्हामी तौर पर प्रकट किया गया है कि यह भविष्यवाणी कि मुसलमानों का इमाम मुसलमानों में से होगा। वास्तव में ये दोनों भविष्यवाणियां विषय की दृष्टि से एक हैं और दोनों का चरितार्थ यही विनीत है। मसीह के नाम पर जो भविष्यवाणी है उसके विशेष लक्षण वास्तव में दो ही हैं। एक यह कि जब वह मसीह आएगा तो मुसलमानों की आन्तरिक अवस्था को जो उस समय अत्यधिक बिगड़ी हुई होगी अपनी सही शिक्षा से ठीक कर देगा।"

इस बारे में प्रारंभिक ख़ुत्बों में भी वर्णन हो चुका है। स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि मुसलमानों की दशा बिगड़ी हुई है और किसी सुधारक को चाहती है।

मसीह मौऊद का ख़ज़ाने लुटाने से अभिप्राय

फ़रमाया कि :- "अपनी सही शिक्षा से ठीक कर देगा और उनकी अध्यात्मिक दरिद्रता और आन्तरिक निर्धनता पूर्णतया दूर करके ज्ञान रूपी जवाहरात, वास्तविकताएं और अध्यात्म ज्ञान उनके समक्ष रख देगा।"

अर्थात् ये ख़ज़ाने हैं और वह उनके सामने अध्यात्मिक ज्ञान की व्याख्या करेगा। पुनः फ़रमाया :-

"यहां तक कि वे लोग इस दौलत को लेते-लेते थक जाएंगे और उनमें से कोई सत्याभिलाषी अध्यात्मिक तौर पर दरिद्र और कंगाल नहीं रहेगा अपितु जितने भी सत्य के भूखे और प्यासे हैं उनको प्रचुरता के साथ सत्य का प्रिय भोजन और अध्यात्म ज्ञान का मधुर शरबत पिलाया जाएगा।"

अर्थात यह सत्य का पवित्र भोजन उनको मिलेगा और मसीह मौऊद के द्वारा ही सही इस्लाम की शिक्षा उन्हें प्राप्त होगी। यह अध्यात्म ज्ञान रूपी मधुर शरबत है यह उनको पिलाया जाएगा। यदि ये अध्यात्म ज्ञान रूपी शरबत पीने वाले होते तो यह नकारात्मक प्रकार की वरन् विनाश करने वाली प्रतिक्रिया जो उन से प्रकट हुई है उसके स्थान पर ये एक सकारात्मक प्रतिक्रिया प्रदर्शित करते और ख़ुदा के आगे झुकने वाले होते।

फ़रमाया - "और सत्य के ज्ञानों के मोतियों से उनकी झोलियां भर दी जाएंगी।"

इस्लाम का जो सही ज्ञान है वह तो एक बड़ा मूल्यवान ख़ज़ाना है जो मोतियों के समान है उनसे उनकी झोलियां भरेगा।

"और क़ुर्आन करीम जो सार और उद्देश्य है इस इत्र की भरी हुई बोतलें उन्हें दी जाएंगी।" (अर्थात् क़ुर्आन की सुगंध उन को प्राप्त होगी)

सलीब को तोड़ना और सुअर-वध करने की व्याख्या

फिर फ़रमाया कि -

"दूसरा विशेष लक्षण यह है कि जब वह मसीह आएगा तो सलीब को तोड़ेगा और सुअर का वध करेगा और एक आंख वाले दज्जाल का वध कर डालेगा और जिस काफ़िर तक उसकी फूंक की वायु पहुंचेगी वह तुरन्त मर जाएगा। अतः इस लक्षण की मूल वास्तविकता जो आध्यात्मिक तौर पर अभिप्राय रखी गई है यह है कि मसीह संसार में आकर सलीबी धर्म की प्रतिष्ठा एवं वैभव को अपने पैरों तले कुचल डालेगा और उन लोगों को जिनमें सुअरों की निर्लज्जता और बेहयाई और मैला खाना है उन पर अकाट्य तर्कों का प्रहार करके उन सब का अन्त कर देगा और वे लोग जो केवल संसार की आंख रखते हैं परन्तु धर्म की आंख बिल्कुल ही नहीं, अपितु उसमें एक कुरूप फुल्ली निकली हुई है उनको स्पष्ट तर्कों की काटने वाली तलवार द्वारा (ऐसे तर्कों की तलवार से जो काटने वाली है) दोषी करके उनकी इन्कार करने वाली हस्ती को समाप्त कर देगा। (ये तर्क हैं जिन से काटना है ताकि उनके झूठे दावों और अस्तित्वों का अन्त कर सके) और न केवल ऐसे काने लोग अपितु प्रत्येक काफ़िर जो मुहम्मद के धर्म को तिरस्कारपूर्वक देखता है, मसीही तर्कों की प्रतापी फूंक से आध्यात्मिक तौर पर मारा जाएगा। अतः

ये सब इबारतें रूपक बतौर हैं जो इस विनीत पर भली भांति स्पष्ट की गई हैं अब चाहे कोई इसको समझे या न समझे, परन्तु कुछ समय और प्रतीक्षा करके और अपनी निराधार आशाओं से पूर्ण निराशा की अवस्था में होकर एक दिन सब लोग इस ओर प्रवृत्त होंगे।"

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-3, पृष्ठ-141 से 143 हाशिया)

अत: आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ईसाइयों को चुनौती दी है। ईसाइयत जिस तीव्रता से फैल रही थी यह आप ही हैं जिन्होंने उसे रोका है। हिन्दुस्तान में इस युग में हज़ारों, लाखों मुसलमान ईसाई हो रहे थे यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही थे जिन्होंने इस आक्रमण को न केवल रोका था अपितु इस्लाम की प्रतिष्ठा पुन: स्थापित की। फिर अफ्रीका में जमाअत अहमदिया ने ईसाइयत के धावे को रोका। इस्लाम का सुन्दर रूप दिखाया, हज़ारों, लाखों ईसाइयों को अहमदी मुसलमान बनाया। ये थे मसीह के कारनामे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दिखाए और अल्लाह तआला की कृपा से आज तक आपकी दी हुई शिक्षा और तर्कों के साथ जमाअत अहमदिया हृदयों को जीतते हुए मंज़िलें तय कर रही है और ख़ुदा ने चाहा तो करती चली जाएगी जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि एक दिन ये लोग निराश होकर लौटेंगे।

यह है स्पष्टीकरण इस बात का कि किस प्रकार इन लोगों की धोखेबाज़ी और कपट को समाप्त करना है। यह है सुअर का वध करने और सलीबों को तोड़ने का अर्थ और दज्जाल से मुकाबले का अभिप्राय, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन किया है। आज भी जैसा कि मैं ने कहा जमाअत अहमदिया ही है जो प्रत्येक स्थान पर ईसाइयत

का मुक़ाबला कर रही है। पिछले दिनों टीवी पर एक प्रोग्राम आ रहा था शायद जियो या ARY पर, या इसी प्रकार के किसी टीवी पर जो एशिया से आते हैं तो इसमें एक विद्वान डाक्टर असरार साहिब यह कह रहे थे कि चूंकि मुसलमान उलेमा अशिक्षित थे और धार्मिक ज्ञान बिल्कुल नहीं था। न क़ुर्आन का ज्ञान था, न बाइबल का ज्ञान था और मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी एक ज्ञानी पुरुष थे, बाइबल का ज्ञान भी रखते थे, अन्य धर्मों का ज्ञान भी रखते थे। इस कारण उन्होंने उस समय ईसाइयों का मुकाबला किया और उन का मुंह बन्द कर दिया। इनके शब्दों का सार कुछ इस प्रकार का था। बहरहाल उन्होंने यह तो स्वीकार कर लिया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ही (जैसा कि स्वयं आप ने फ़रमाया) अकाट्य तर्कों द्वारा, दृढ़ प्रमाणों के माध्यम से उनका खण्डन किया। वह यह स्वीकार करते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी ही हैं जिन्होंने उस समय ईसाइयत के आक्रमण रोके और मुसलमानों को ईसाई होने से बचाया। आगे वह अपनी निरर्थक व्याख्याएं कर रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध भी कुछ बोले कि मसीह नहीं हो सकते। बहरहाल यह तो आज तक स्वीकार किया जाता है कि यदि ईसाइयत के मुक़ाबले पर कोई खड़ा हुआ और उसकी शिक्षा का तर्कों द्वारा खण्डन किया तो वह एक ही पहलवान था जिसका नाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी है।

अब चाहे ये लोग आज स्वीकार करें या न करें परन्तु जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा है - एक दिन उनको स्वीकार करना पड़ेगा कि ये मसीही तर्क ही हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दिए और जिन्होंने दज्जाल का अन्त किया और आप ही मसीह मौऊद हैं।

मसीह मौऊद ने उम्मत-ए-मुस्लिमा से ही आना था

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि इस हदीस का ग़लत और प्रत्यक्ष अर्थ लेने के कारण मुसलमान अभी तक मसीह की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि मसीह इब्ने मरयम आकाश से फ़रिश्तों के कंधे पर हाथ रखकर उतरेगा। इसकी अधिक व्याख्या करते हुए कि उनका यह अर्थ ग़लत है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हदीस से ही स्पष्ट किया है। आप फ़रमाते हैं कि -

"उन समस्त तर्कों के जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि आने वाले मसीह जिसका इस उम्मत के लिए वादा दिया गया है वह इसी उम्मत में से एक व्यक्ति होगा बुख़ारी और मुस्लिम की वह हदीस है जिसमें امامکم منکم और اَمَّکُمْ مِنکمْ लिखा है जिसके अर्थ ये हैं कि वह तुम्हारा इमाम होगा और तुम ही में से होगा। चूंकि यह हदीस आने वाले ईसा के बारे में है और इसी की परिभाषा में इस हदीस में 'हकम' और 'अदल' का शब्द बतौर विशेषता मौजूद है जो इस वाक्य से पूर्व है। इसलिए इमाम का शब्द भी उसी के पक्ष में है। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यहां منکم के शब्द से सहाबा को सम्बोधित किया गया है और वही संबोधित थे परन्तु स्पष्ट है कि उनमें से तो किसी ने मसीह मौऊद होने का दावा नहीं किया इसलिए मिन्कुम (منکم) के शब्द से कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्राय है जो ख़ुदा तआला के ज्ञान में सहाबा का स्थानापन्न है और वह वही है जिसे इस कथित निम्नलिखित आयत में सहाबा का स्थानापन्न किया गया है अर्थात् यह कि (وَ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ) क्योंकि इस आयत ने स्पष्ट किया है कि वह रसूले करीम की आध्यात्मिकता से प्रशिक्षण

प्राप्त है और इसी कार्य की दृष्टि से सहाबा में सम्मिलित है और इस आयत की व्याख्या में हदीस है لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ مَعَلَّقًا بِالثُّرَيَّا لَنَالَهٗ رَجُلٌ مِّنْ فَارِسْ और चूंकि इस फ़ारसी व्यक्ति की ओर वह विशेषता सम्बद्ध की गई है जो मसीह मौऊद और महदी से विशेष है अर्थात् पृथ्वी जो ईमान और एकेश्वरवाद से रिक्त होकर अन्याय से भर गई है फिर उसे न्याय से भरना। अत: यही व्यक्ति महदी और मसीह मौऊद है और वह मैं हूं।"

(तुहफ़ा गोलड़विया, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-17,पृष्ठ 114-115)

मसीह और महदी एक ही अस्तित्व के दो नाम हैं मसीह मौऊद धार्मिक युद्धों को स्थगित कर देगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अतिरिक्त स्पष्टीकरण किया कहा कि :-

"हदीस لَا مَهْدِىْ اِلَّا عِيْسٰى जो इब्ने माजा की किताब में जो इसी नाम से प्रसिद्ध है और हाकिम की किताब 'अलमुस्तदरिक' में अनस बिन मालिक से रिवायत की गई है और यह रिवायत मुहम्मद बिन ख़ालिद अलनजदी ने इब्बान बिन सालिह और इब्बान बिन सालिह ने हसन बसरी से और हसन बसरी ने अनस बिन मालिक से और अनस बिन मालिक ने हज़रत रसूलुल्लाह[स.अ.व.] से की है और इस हदीस में अर्थ ये हैं कि उस व्यक्ति के अतिरिक्त जो ईसा के गुण और स्वभाव और पद्धति पर आएगा और कोई भी महदी नहीं आएगा अर्थात् वही मसीह मौऊद होगा और वही महदी होगा जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के गुण और स्वभाव और शिक्षा-पद्धति पर आएगा अर्थात् बुराई का मुकाबला न करेगा और न लड़ेगा और पवित्र नमूना और आकाशीय निशानों

द्वारा पथ-प्रदर्शन को फैलाएगा। इसी हदीस के समर्थन में वह हदीस है जो इमाम बुख़ारी ने अपनी सही बुख़ारी में लिखी है जिसके शब्द ये हैं कि يَضَعُ الْحَرْبَ अर्थात् वह महदी जिसका दूसरा नाम मसीह मौऊद है धार्मिक युद्धों को बिल्कुल स्थगित कर देगा और उस का यह निर्देश होगा कि धर्म के लिए लड़ाई मत करो अपितु धर्म को सत्य के माध्यम से प्रकाशों और नैतिक चमत्कारों और ख़ुदा के सानिध्य के निशानों से फैलाओ। अतः मैं सच-सच कहता हूं कि जो व्यक्ति इस समय धर्म के लिए लड़ाई करता है या किसी लड़ने वाले का समर्थन करता है प्रत्यक्ष या गुप्त तौर पर ऐसा परामर्श देता है या हृदय में ऐसी इच्छाएं रखता है वह ख़ुदा और रसूल का अवज्ञाकारी है, उनकी वसीयतों और सीमाओं और कर्त्तव्यों से बाहर चला गया है।"

(हक़ीक़तुल महदी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-14, पृष्ठ 431, 432)

अब देख लें आजकल मुसलमानों की परिस्थितियां इसका समर्थन कर रही हैं। यदि ये युद्ध अल्लाह तआला के आदेशानुसार होते तो अल्लाह तआला ने तो फ़रमाया وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُالْمُؤْمِنِيْنَ (सूरह अर्रूम - आयत 48) और मोमिनों की सहायता करना हमारा कर्त्तव्य ठहरता है। अतः जब अल्लाह तआला का समर्थन नहीं मिल रहा तो विचार करना चाहिए। यदि युद्ध लड़ने की बहुत अधिक रुचि है तो फिर इस्लाम के नाम पर तो न लड़े जाएं।

इस युग में मुसलमानों का अन्य जातियों से पराजित होना यह भी ख़ुदा की ओर से इस बात की क्रियात्मक साक्ष्य है कि जो मसीह आने को था वह आ गया है और يَضَعُ الْحَرْبَ के अन्तर्गत धार्मिक युद्धों का जो आदेश है यह निरस्त हो चुका है। हां यदि जिहाद करना है तो तर्कों

से करो, प्रमाणों से करो। अब मुसलमानों के इस्लाम के नाम पर लड़े जाने वाले युद्धों के परिणाम तो जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला की क्रियात्मक साक्ष्य के अनुसार मुसलमानों के विपरीत हैं और प्रत्येक आंख रखने वाले को दिखाई दे रहे हैं। अल्लाह तआला का तो वादा है कि मैं मोमिन की सहायता करता हूं। यदि मोमिन हो तो दो ही बातें हैं या यह कि ये मुसलमान मोमिन नहीं हैं या यह युद्धों का समय ग़लत है और युद्धों का युग समाप्त हो चुका है। परन्तु स्मरण रखें इन लोगों में ये दोनों बातें ही हैं क्योंकि आंहज़रत[स.अ.व.] की बात न मान कर फिर मोमिन तो नहीं रह सकते और मसीह तथा महदी के दावे के पश्चात् उसकी बात न मान कर अल्लाह तआला की सहायता के अधिकारी नहीं ठहर सकते। अतः इस युग में मसीह व महदी का जो दावा करने वाला है वह निश्चय ही सच्चा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बयान-ए-हल्फ़ी कि आप ख़ुदा तआला की ओर से हैं।

आपने अपनी इस सच्चाई के लिए बहुत बड़ा दावा किया है। ऐसा दावा जिसे कोई झूठा व्यक्ति नहीं कर सकता। आप कहते हैं कि :-

"मैं उस ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि उसी ने मुझे भेजा है और उसी ने मेरा नाम नबी रखा है और उसी ने मुझे मसीह मौऊद के नाम से सम्बोधित किया है और उसने मेरे सत्यापन के लिए बड़े-बड़े निशान प्रकट किए हैं जो तीन लाख तक पहुंचते हैं। जिन में से बतौर नमूना कुछ इस किताब में भी लिखे गए हैं। यदि उसके चमत्कारिक कार्य और खुले-खुले निशान जो हज़ारों तक पहुंच गए हैं

मेरी सच्चाई पर साक्ष्य न देते तो मैं उसके वार्तालाप को किसी पर प्रकट न करता और न विश्वास के साथ कह सकता कि यह उसका कलाम है। परन्तु उसने अपने कथनो से समर्थन में वे कार्य दिखाए जिन्होंने उसका चेहरा दिखाने के लिए एक साफ और प्रकाशमान दर्पण का काम दिया।"

(परिशिष्ट हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 22, पृष्ठ 303)

जो अल्लाह तआला के नाम का दावा करता है यदि उसका दावा सच्चा न हो तो उसके साथ अल्लाह तआला क्या व्यवहार करता है। स्वयं ही देख लें। अल्लाह झूठे नबी के बारे में फ़रमाता है وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ۝لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ۝ (सूरह अलहाक़्क़ह 45-46) और यदि वह कुछ बातें झूठे तौर पर हमारी ओर सम्बद्ध करता तो हम उसे अवश्य दाएं हाथ से पकड़ लेते और फिर कहा - ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ (अलहाक़्क़ह - 47) फिर हम निश्चय ही उसकी प्राणधमनी काट देते।

अब कोई बताए कि क्या इस दावे के पश्चात् तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किया कि मैं नबी हूं और मुझे समस्त समर्थन प्राप्त है। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्राण-धमनी काटी है या उस वादे के अनुसार कि وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ (अर्रूम - 48) और हम ने मोमिनों की सहायता करना स्वयं पर अनिवार्य कर लिया है, सहायता की है और जमाअत की सहायता करता चला जा रहा है। एक आवाज़ जो एक छोटी सी बस्ती से उठी थी आज पूरी शान के साथ संसार के कोने-कोने में फैली हुई है। आज 181 देशों में जमाअत अहमदिया स्थापित है। आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वाले यूरोप में भी, अमरीका में भी और अफ्रीक़ा के सुदूर जंगलों

में भी और तपते हुए मरुस्थलों में भी और द्वीपों में भी मौजूद हैं। अतः क्या यह समस्त ख़ुदाई समर्थन आपकी सच्चाई पर विश्वास करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। यदि यह व्यक्ति झूठा होता तो फिर अल्लाह तआला ने अपने कानून के अनुसार उसकी पकड़ क्यों नहीं की, क्यों अपनी ओर इल्हामों को संबद्ध करने के कारण तबाह तथा बरबाद न कर दिया। अतः विचार करने का स्थान है। सोचो और बुद्धि से काम लो। मुसलमानों को मैं यह कहता हूं कि क्यों अपना यह लोक और परलोक खराब कर रहे हो। एक झूठे की दशा तो यह है कि पिछले दिनों पाकिस्तान में किसी ने महदी होने का दावा किया तो आपस में थोड़ी सी फ़ायरिंग के पश्चात् उन्होंने उसे गिरफ़्तार कर लिया और अब जेल में डाला हुआ है। यह अंजाम तो तुरन्त उनके सामने आ गया। इस से पूर्व भी कई हो चुके हैं।

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पक्ष में आकाशीय साक्ष्य

बहरहाल फिर आप की सच्चाई की एक आकाशीय साक्ष्य भी है जिस का मैंने पहले भी वर्णन किया था अर्थात् चन्द्र और सूर्य का ग्रहण लगाना। यह एक ऐसा निशान है जिसमें किसी मानवीय प्रयास का हस्तक्षेप नहीं हो सकता। आंहज़रत[स.अ.व.] आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व जिस प्रकार निश्चित रूप में भविष्यवाणी की थी और हमें बताया था इस प्रकार निश्चित तौर पर इस युग में भी जबकि विज्ञान ने उन्नति कर ली है इतने रास्ते अपितु निकट के रास्ते की भी भविष्यवाणी नहीं की जा सकती कि रमज़ान का महीना होगा, अमुक तिथि को सूर्य को ग्रहण लगेगा और अमुक तिथि को चन्द्रमा का ग्रहण लगेगा। हदीस में आता

है - اِنَّ لَمَهْدِيِّنَا اٰيَتَيْنِ لَمْ تَكُوْنَا مُنْذُ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ۔ تَنْكَسِفُ الْقَمَرُ لِاَوَّلِ لَيْلَةٍ مِّنْ رَمَضَانَ وَ تَنْكَسِفُ الشَّمْسُ فِى النِّصْفِ مِنْهُ

(सुनन दारे क़ुतनी - किताबुलईदैन बाब सिफ़त सलातिल कुसूफ़)

अर्थात् हमारे महदी की सच्चाई के लिए दो ही निशान हैं और सच्चाई के ये दोनों निशान किसी के लिए जब से संसार बना है कभी प्रकट नहीं हुए। रमज़ान में चन्द्र ग्रहण की रातों में से प्रथम रात चन्द्रमा को और सूर्य-ग्रहण के दिनों में से मध्य के दिन सूर्य को ग्रहण लगेगा।

अतः यह ग्रहण 1894 ई. में लगा और 13-14-15 तिथियों में से 13 को रमज़ान के महीने में चन्द्रमा को ग्रहण लगा। 27-28-29 तिथियों में से 28 को रमज़ान में सूर्य को ग्रहण लगा। यह आप की सच्चाई का बड़ा स्पष्ट प्रमाण है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा है कि मेरे अतिरिक्त इस समय दावा भी किसी का नहीं था। कुछ मौलवी "क़मर" इत्यादि की बहस में पड़ते हैं तो क़मर तो कुछ के निकट दूसरी रात के पश्चात् का चन्द्रमा और कुछ के निकट तीसरी रात के पश्चात् का चन्द्रमा कहलाता है। अब कोई दिखाए कि क्या समर्थन के इस निशान से पूर्व हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अतिरिक्त कोई दावा मौजूद था। यदि दावा है तो केवल एक व्यक्ति का है जो हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत स्पष्ट तौर पर कहा है कि असंख्य लक्षण पूरे हो रहे हैं। यदि मैं नहीं तो कोई दूसरा आया हुआ है तो दिखाओ क्योंकि समय बहरहाल मांग कर रहा है, परन्तु ये लोग दिखा तो नहीं सकते, इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही सच्चे दावेदार हैं, क्योंकि ज़मीनी और

आकाशीय समर्थन आपके पक्ष में हैं। अल्लाह तआला का बताया हुआ नुबुव्वत का मापदण्ड आप का समर्थन कर रहा है। स्वयं कुछ लोग भूतकाल में भी स्वीकार कर चुके हैं कि आप शुद्ध और पवित्र व्यक्तित्व रखने वाले थे, आप का अतीत भी पवित्र था, आप की जवानी भी पवित्र थी विद्वान भी थे और इस्लाम की सेवा भी आप से अधिक किसी ने नहीं की। यह बात दूसरों ने भी स्वीकार की। फिर सब कुछ देखने के बाद भी यदि बुद्धि पर पर्दे पड़े हुए हैं तो उनका अल्लाह ही रक्षक है क्योंकि किसी को मानने की सामर्थ्य भी अल्लाह की कृपा से ही मिलती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं कि :-

"अब बताएं यदि यह विनीत सत्य पर नहीं है तो फिर कौन आया जिसने चौदहवीं सदी के सर पर मुजद्दिद होने का ऐसा दावा किया जैसा कि इस विनीत ने। क्यों कोई इल्हामी दावों के साथ समस्त विरोधियों के मुकाबले पर ऐसा खड़ा हुआ जैसा कि यह विनीत खड़ा हुआ تَفَكَّرُوا و تَنَدَّمُوْا وَاتَّقُوْاللّٰهَ وَلَا تَغْلُوْا (अर्थात विचार करो, कुछ शर्म करो, अल्लाह से डरो, निर्लज्जताओं में क्यों अग्रसर हो रहे हो) और यदि यह विनीत मसीह मौऊद होने के दावे में ग़लती पर है तो आप लोग कुछ प्रयत्न करें कि मसीह मौऊद जो आप के विचार में है इन्हीं दिनों में आकाश से उतर आए, क्योंकि मैं तो इस समय मौजूद हूं परन्तु जिसकी प्रतीक्षा में आप बैठे हैं वह मौजूद नहीं और मेरे दावे का खण्डन केवल इस अवस्था में सोचा जा सकता है कि अब वह आकाश से उतर ही आएं ताकि मैं अपराधी ठहर सकूं। आप लोग यदि सत्य पर हैं तो सब मिलकर दुआ करें कि मसीह इब्ने मरयम शीघ्र आकाश से उतरते दिखाई दें। यदि आप सत्य पर हैं तो यह दुआ स्वीकार हो जाएगी, क्योंकि अहले हक़्क़

(वलियों) की दुआ झूठों के मुकाबले पर स्वीकार हो जाया करती है, परन्तु आप निश्चय ही समझें कि यह दुआ कदापि स्वीकार नहीं होगी, क्योंकि आप ग़लती पर हैं मसीह तो आ चुका परन्तु आपने उसको नहीं पहचाना। अब आपकी यह काल्पनिक आशा कभी पूर्ण नहीं होगी। यह युग गुज़र जाएगा और उनमें से कोई मसीह को उतरते नहीं देखेगा।"

(इज़ाला औहाम भाग-प्रथम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-3, पृष्ठ -179)

"इसलिए मैं कहता हूं कि ये लोग धर्म और सच्चाई के शत्रु हैं और यदि अब भी इस बात के लिए उपस्थित हों कि उनके व्यर्थ और निरर्थक सन्देहों का उत्तर दूं और उन्हें दिखाऊं कि ख़ुदा ने मेरी साक्ष्य में कितनी अधिकता के साथ भविष्यवाणियां उपलब्ध कर रखी हैं कि उनकी सच्चाई ऐसे तौर पर प्रकट हुई है जैसे कि दिन चढ़ जाता है।"

अल्लाह तआला का वादा है कि वह मसीह मौऊद[अ.] का प्रेम हृदयों में बैठाएगा और सब सम्प्रदायों पर आपके सम्प्रदाय को विजयी करेगा

अब जिस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा था। यदि कोई आना चाहे तो सौ वर्ष के पश्चात् भी हृदयों को ठीक करके आने वाली शर्त क़ायम है और जो आते हैं वे सत्य को पा भी जाते हैं।

कहा कि :- "ये मूर्ख मौलवी यदि अपनी आंखें जान-बूझ कर बन्द करते हैं तो करें। सच्चाई को उन से क्या हानि ? परन्तु वह युग आता है वरन् निकट है कि बहुत से फ़िरऔन स्वभाव लोग इन भविष्यवाणियों पर विचार करने से डूबने से बच जाएंगे। ख़ुदा कहता है कि मैं आक्रमण पर आक्रमण करूंगा यहां तक कि मैं तेरी सच्चाई हृदयों में बैठा दूंगा। अतः हे मौलवियो ! यदि तुम्हें ख़ुदा से लड़ने की शक्ति है तो लड़ो। मुझ से पहले एक ग़रीब मनुष्य मरयम के बेटे से यहूदियों ने क्या कुछ न

किया और किस प्रकार अपने विचार में उसे सूली दी, परन्तु ख़ुदा ने उसे सूली की मृत्यु से बचाया और या तो वह युग था कि उसे केवल एक धोखेबाज़ और महा झूठा समझा जाता था और या वह समय आया कि हृदयों में उसकी इतनी श्रेष्ठता पैदा हो गई कि अब चालीस करोड़ लोग उसे ख़ुदा करके मानते हैं। यद्यपि लोगों ने कुफ्र किया कि एक असहाय बन्दे को ख़ुदा बनाया, परन्तु यह यहूदियों का उत्तर है।" (अर्थात यह अल्लाह की ओर से यहूदियों को उत्तर दिया गया है कि) "जिस व्यक्ति को वे लोग एक झूठे के समान पैरों के नीचे कुचल देना चाहते थे वही यीशू मरयम का बेटा उस श्रेष्ठता को पहुंचा कि अब चालीस करोड़ लोग उसे सज्दह करते हैं और बादशाहों की गर्दनें उसके नाम के आगे झुकती हैं। अत: मैंने यद्यपि यह दुआ की है कि यीशू बिन मरयम की तरह शिर्क की उन्नति का मैं माध्यम न ठहराया जाऊं और मैं विश्वास रखता हूं कि ख़ुदा तआला ऐसा ही करेगा, परन्तु ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार सूचना दी है कि वह मुझे बहुत श्रेष्ठता देगा और हृदयों में मेरा प्रेम बैठाएगा और मेरी जमाअत को समस्त संसार में फैलाएगा और सब सम्प्रदायों पर मेरे सम्प्रदाय को विजयी करेगा और मेरे सम्प्रदाय के लोग ज्ञान और अध्यात्म ज्ञान में कमाल प्राप्त करेंगे कि अपनी सच्चाई के प्रकाश और अपने तर्कों और निशानों की दृष्टि से सब का मुंह बन्द कर देंगे" (और अल्लाह की कृपा से संसार के प्रत्येक देश में यह सच्चाई प्रकट हो रही है और होती चली जा रही है) "और प्रत्येक जाति इस झरने से पानी पिएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा यहां तक कि पृथ्वी पर छा जाएगा। बहुत सी बाधाएं पैदा होंगी और परीक्षाएं आएंगी, परन्तु ख़ुदा सब को मध्य से दूर कर देगा और अपने वादे को पूरा करेगा और ख़ुदा

ने मुझे सम्बोधित करके कहा कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे।

अतः हे सुनने वालो ! इन बातों को स्मरण रखो और उन भविष्यवाणियों को अपने सन्दूकों में सुरक्षित रख लो कि यह ख़ुदा का कलाम है जो एक दिन पूरा होगा। मैं स्वयं में कोई नेकी नहीं देखता और मैंने यह कार्य नहीं किया जो मुझे करना चाहिए था और मैं स्वयं को एक अयोग्य मज़दूर समझता हूं। यह मात्र ख़ुदा तआला की कृपा है जो मेरे साथ हुई। अतः उस सामर्थ्यवान और दयालु का हज़ार-हज़ार धन्यवाद कि इस मुट्ठी भर धूल को उसने बावजूद उन समस्त अयोग्यताओं के स्वीकार किया।"

(तजल्लियाते इलाहिया, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-20, पृष्ठ 408-410)

अतः यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा है या भविष्यवाणी है और हम प्रतिदिन उसे पूरा होते देख रहे हैं परन्तु प्रत्येक धर्म और जाति के लिए भी यह विचार का स्थान है। मसीह मौऊद की जमाअत अल्लाह तआला के उनसे वादे के अनुसार उन्नति करती चली जा रही है और जैसा कि मैंने कहा कि प्रतिदिन हम उन्नति को देखते हैं। अतः मुसलमान भी विचार करें (जो अहमदियों के अतिरिक्त मुसलमान हैं) कि मसीह व महदी जो आने को था वह आ चुका है और उसकी सच्चाई के लिए क़ुर्आन तथा हदीस में असंख्य प्रमाण मौजूद हैं। क़ुर्आन से भी और हदीस से भी मिल जाते हैं जिनमें से एक दो की मैंने चर्चा भी की है। युग की अवस्था भी उसको पुकार रही है, अब किस प्रतीक्षा में बैठे हो। हे लोगो कुछ तो सोचो ईसाइयों के लिए भी जिस मसीह ने दोबारा आना था आ गया है और शेष धर्म वालों को भी एक हाथ पर एकत्र करने के लिए जिस ने आना था वह आ गया है। अब यदि एक दूसरे

की भावनाओं का आदर सिखाना है। अब यदि संसार में शान्ति और प्रेम फैलाना है तो इसी मसीह मौऊद ने फैलाना है अब यदि मानवता को दुखों और कष्टों से मुक्ति दिलानी है तो इसी मसीह मौऊद व महदी मौऊद ने दिलानी है। अब यदि अल्लाह की ओर ले जाने वाले मार्ग दिखाने हैं और बन्दे को ख़ुदा तआला के समक्ष झुकने के उपाय बताने हैं तो इसी मसीह और महदी ने बताने हैं। इसलिए यदि संसार इन समस्त बातों को प्राप्त करना चाहता है तो समस्त नबियों की भविष्यवाणियों के अनुसार आने वाले आंहज़रत[स.अ.व.] के उस सच्चे प्रेमी और मसीह व महदी की शिक्षा की पाबन्दी करने वाले बन जाएं अन्यथा हमें तो अल्लाह तआला के प्रकोप की झलकियां मंडराती दिखाई दे रही हैं जिनके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा से सूचना पाकर हमें बता चुके हैं। अतः आप जो अहमदी हैं उन से भी मैं यह कहूंगा कि प्रत्येक अहमदी अपने सुधार की ओर भी ध्यान दे और अपने सुधार के साथ संसार को भी इस चेतावनी से अवगत करे। अल्लाह तआला सांसारिक लोगों पर दया करे और उन्हें वास्तविकता समझने की सामर्थ्य प्रदान करे।

- पत्रकारिता की स्वतंत्रता तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर कुछ पश्चिमी देशों और अख़बारों की ओर से मुसलमानों की भावनाओं को आहत करने तथा अत्याचारपूर्ण व्यवहार अपनाने एवं उनके दोहरे नैतिक मापदण्डों की चर्चा
- पश्चिमी संसार की ओर से मुसलमानों के विरुद्ध साहसों का कारण स्वयं मुसलमानों की आन्तरिक दशा भी है और इस्लामी संसार अपनी ही ग़लतियों के कारण नितान्त भयानक स्थिति से दोचार है।
- आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम की मांग है कि हम अपनी दुआओं में उम्मते मुस्लिमा को बहुत स्थान दें। आज हर अहमदी का दायित्व है जिसने इस युग के इमाम को पहचाना कि आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम-भावना के कारण बहुत अधिक दरूद पढ़ें।
- वातावरण में हार्दिक श्रद्धा के साथ इतना दरूद बिखेरें कि वातावरण का प्रत्येक कण दरूद से सुगंधित हो उठे और हमारी समस्त दुआएं उस दरूद के माध्यम से ख़ुदा तआला के दरबार में पहुंच कर स्वीकारिता की श्रेणी पाने वाली हों।
- (क़ुर्आन करीम और हदीसों तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से दरूद के महत्त्व और बरकतों का वर्णन करते हुए बहुत अधिक दरूद पढ़ने और उम्मते मुस्लिमा के लिए दुआओं की विशेष प्रेरणा)

ख़ुत्ब: जुमा
24, फरवरी - 2006 ई.
स्थान - मस्जिद बैतुल फ़ुतूह लन्दन

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيکَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ـ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ-اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ-مٰلِکِ يَوْمِ الدِّيْنِ- اِيَّا کَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاکَ نَسْتَعِيْنُ- اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ- صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ـ

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِکَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا۝

(सूरह अल अहज़ाब - 57)

पिछले जो विषय चल रहे हैं अर्थात् पिछले कई सप्ताह से जो घटनाएं हो रही हैं पत्रकारिता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर मुसलमानों की भावनाओं को आहत करने और अत्याचारपूर्ण व्यवहार अपनाने पर पश्चिम के कुछ अख़बारों और देशों ने जो सिलसिला आरंभ किया हुआ है आज भी संक्षिप्त तौर पर उसके बारे में कुछ कहूंगा और उसकी प्रतिक्रिया में कुछ अख़बारों और देशों के विरुद्ध मुसलमान देशों में जो वायु चल रही है इस संबंध में मैं कुछ कहना चाहता हूं यह व्यक्तिगत

तौर पर भी हैं, सामूहिक तौर पर भी हैं, सरकारी स्तर पर भी विरोध प्रकट किए जा रहे हैं अपितु इस्लामी देशों की आर्गनाइज़ेशन (O.I.C.) ने भी कहा है कि पश्चिमी देशों पर दबाव डाला जाएगा कि खेद प्रकट करें और ऐसा कानून भी बनाएं कि पत्रकारिता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर नबियों तक न पहुंचें क्योंकि यदि इस से न रुके तो फिर विश्व शान्ति की कोई गारन्टी नहीं। इन देशों का या आर्गनाइज़ेशन की यह बड़ी अच्छी प्रतिक्रिया है। अल्लाह तआला इस्लामी देशों में इतनी दृढ़ता पैदा कर दे और उन्हें शक्ति दे कि ये वास्तव में हार्दिक पीड़ा के साथ विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए ऐसे निर्णय कराने के योग्य हो सकें।

पश्चिमी देशों और अख़बारों का दोहरा मापदण्ड

पिछले दिनों ईरान के एक अख़बार ने घोषणा की थी कि वह इस कार्य का बदला लेने के लिए अपने अख़बार में मुक़ाबले कराएगा जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध में यहूदियों के साथ जो व्यवहार हुआ था उस व्यवहार के माध्यम से उनके कार्टून बनाने का मुक़ाबला होगा, यद्यपि यह इस्लामी प्रतिक्रिया नहीं है, यह ढंग इस्लामी नहीं है परन्तु पश्चिमी देश जो स्वतंत्रता का नारा लगाते हैं और प्रत्येक प्रकार की अश्लीलता को अख़बार में प्रकाशित करने को पत्रकारिता की स्वतंत्रता का नाम देते हैं उनको इस पर बुरा नहीं मनाना चाहिए जो मनाया गया। या तो बुरा न मनाते या फिर यह उत्तर देते कि जिस ग़लती से विश्व में उपद्रव पैदा हो गया है हमें चाहिए कि अब किसी धर्म या उसके प्रवर्तक एवं नबी अथवा किसी जाति के संबंध में ऐसी मानसिकता को समाप्त करके प्रेम और मुहब्बत का वातावरण पैदा करें परन्तु इस प्रकार के उत्तर के स्थान पर डेनमार्क के एक अख़बार के सम्पादक ने जिसमें यह कार्टून प्रकाशित

होने पर विश्व में सारा उपद्रव आरंभ हुआ है उसने ईरान की इस घोषणा पर यह कहा है कि वहां जो अख़बारों में कार्टून बनाने की प्रतियोगिता कराने की घोषणा की गई है अर्थात् द्वितीय विश्व युद्ध में यहूदियों से संबंधित जो भी कार्टून बनने थे वह एक जाति पर अत्याचार होने या न होने के बारे में कार्टून बनने थे किसी नबी के अपमान या तिरस्कार के बारे में नहीं बनने थे तो बहरहाल सम्पादक साहिब लिखते हैं कि हम इस में बिल्कुल भाग नहीं लेंगे और अपने पाठकों को संतुष्ट करते हुए कहते हैं कि हमारे पाठक धैर्य रखें कि हमारे नैतिक मापदण्ड अभी तक क़ायम हैं। हम ऐसे नहीं कि ईसा के या हालोकास्ट के कार्टून प्रकाशित करें। इसलिए यह प्रश्न ही पैदा नहीं होता कि किसी भी अवस्था में ईरानी अख़बार या मीडिया की इस अप्रिय प्रकार की प्रतियोगिता में भाग लें। ये हैं उनके मापदण्ड जो अपने लिए और हैं तथा मुसलमानों की भावनाओं से खेलने के लिए और हैं। बहरहाल ये उनके काम हैं किए जाएं।

मुसलमानों की विवशता की अत्यन्त भयावह अवस्था

अब देखें मापदण्डों की यह दशा पिछले दिनों यहां के एक लेखक ने सत्रह वर्ष पूर्व एक घटना का उल्लेख किया था। लिखा था - आस्ट्रेलिया में गया और वहां जाकर उस पर मुकद्दमा हो गया तीन वर्ष का कारावास हो गया। तो बहरहाल ये तो उनके अपने ढंग हैं। अपने लिए सहन नहीं करते परन्तु हमें भी देखना चाहिए कि हमारी अपनी दशा क्या है ? यह साहस जो उन्हें अर्थात् पश्चिमी संसार में पैदा हो रहे हैं हमारी अपनी स्थिति के कारण तो नहीं हो रहे। हमें जो स्थिति दिखाई देती है उससे स्पष्ट दिखाई देता है कि पश्चिम संसार को पता है कि मुसलमान देश उनके अधीन हैं उन्होंने अन्ततः उनके पास ही आना है। आपस में लड़ते

हैं तो उन लोगों से सहायता लेते हैं। यूरोप के कुछ देशों के सामान पर यह तो प्रतिबंध लगाए गए हैं उसके विरुद्ध विरोध के तौर पर यह भी उन लोगों को ज्ञात है कि कुछ दिन तक मामला ठण्डा जो जाएगा और वही वस्तुएं जो बाज़ार से उठा ली गई हैं इस समय बाज़ार से लुप्त हैं वही इन देशों में दोबारा बाज़ार में आ जाएंगी। अब इन देशों में जो मुसलमान रहते हैं वे भी ये वस्तुएं सेवन कर रहे हैं, प्रयोग कर रहे हैं। डेनमार्क में ही (डेनमार्क के विरुद्ध सर्वाधिक विरोध है) लगभग दो लाख मुसलमान हैं और काफी बड़ी संख्या पाकिस्तानी मुसलमानों की है वे भी तो वे वस्तुएं प्रयोग कर रहे हैं। बहरहाल ये अस्थायी प्रतिक्रियाएं हैं और समाप्त हो जाएंगी।

अब देखें हमारी दशा। इराक़ में जो ताज़ा घटना हुई है कि इमाम बारगाह का गुम्बद बम धमाके से उड़ाया गया है तो परिणामस्वरूप सुन्नियों की मस्जिदों पर भी आक्रमण हुए और वे भी नष्ट हो रही हैं। किसी ने यह देखने और विचार करने का प्रयत्न नहीं किया कि छान-बीन कर लें कि कहीं हमें लड़ाने के लिए शत्रु का षडयंत्र ही न हो क्योंकि ये बम ये शस्त्र जो सब कुछ लिया जा रहा है यह भी तो उन्हीं देशों से लिया जाता है परन्तु ये इस प्रकार सोच ही नहीं सकते। एक तो बुद्धि से अंधे हो जाते हैं, उन को क्रोध और साम्प्रदायिकता में समझ ही नहीं आती कि क्या करना है। दूसरे दुर्भाग्य से जो द्वैमुखता से काम लेने वाले हैं वे भी शत्रु से मिल जाते हैं जिससे शत्रु लाभ उठाता है और उन्हें सोचने की ओर आने ही नहीं देता। बहरहाल इराक़ में जो ये नई परिस्थितियों ने जन्म लिया है, यह देश को अराजकता (Civil War) की ओर ले जा रही हैं। आजकल तो लगभग आरंभ है। अब वहां राजनेताओं को यह

बड़ी कठिनाई का सामना है कि परिस्थिति अब संभाली नहीं जाएगी। मुसलमान से मुसलमान के लड़ने की यह स्थिति अफ़ग़ानिस्तान में भी है, पाकिस्तान में भी है। प्रत्येक फिरक़ा दूसरे फ़िर्के के बारे में आतंकपूर्ण वातावरण पैदा करने का प्रयास करता है। धर्म के नाम पर आपस में एक दूसरे को मार रहे होते हैं जबकि अल्लाह तआला तो कहता है कि -

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا۝

(अन्निसा - 94)

अर्थात् जो व्यक्ति किसी मोमिन को जान-बूझ कर क़त्ल कर दे तो उसका दण्ड नरक होगा और वह उसमें देर तक रहता चला जाएगा और अल्लाह उस से अप्रसन्न होगा तथा उसे अपने पास से दूर कर देगा। उसके लिए बहुत बड़ा अज़ाब तैयार होगा।

मुसलमानों के अस्त-व्यस्त होने और कमज़ोरी का मुख्य कारण आंहज़रत[स.अ.व.] और मसीह मौऊद का इन्कार है।

अतः देखें अब ये एक-दूसरे को मार रहे हैं उपद्रव पैदा करने वाले, भड़काने वाले इन नेताओं के कहने पर जिनमें अधिकतर धार्मिक नेता हैं यह सब उपद्रव उनसे पैदा हो रहे हैं, मार-धाड़ हो रही है, क़त्ल और लूट-पाट हो रही है कि वध करो तो पुण्य कमाओ तथा स्वर्ग के वारिस बनोगे जबकि अल्लाह तआला नरक में डाल रहा है और ला'नत भेज रहा है।

पाकिस्तान में, बंगलादेश में या दूसरे देशों में जहां अहमदियों को भी शहीद किया जाता है। ये ही हैं जो स्वर्ग का लालच देकर नरक में ले

जाने वाले कार्य करवाए जाते हैं। बहरहाल मैं यह कह रहा था कि ये जो मुसलमानों की गतिविधियां हैं उनसे मुसलमानों के शत्रु लाभ उठाते हैं और मुसलमानों की शक्ति कम करते चले जा रहे हैं और उन मुसलमानों को समझ नहीं आ रही। बहरहाल यह तो स्पष्ट और प्रकट है कि यह बुद्धि का भ्रष्ट होना और यह फटकार इसलिए है कि आंहज़रत[स.अ.व.] के आदेश को नहीं माना और न ही मान रहे हैं, न उस ओर आते हैं और आप[स.] के मसीह एवं महदी को झुठला रहे हैं। अल्लाह तआला से दुआ ही है और वह हर अहमदी को करनी चाहिए। मैंने इस ओर पूर्व में भी ध्यानाकर्षण किया था कि ख़ुदा उन्हें बुद्धि और बोध दे तथा ये द्वैमुखी लोगों तथा शत्रुओं के हाथों में खिलौना बन कर इस्लाम को बदनाम करने वाले और एक-दूसरे का गला काटने वाले न बनें।

बहरहाल जो कुछ भी है जब इस्लाम के शत्रु इन मुसलमानों को किसी न किसी माध्यम से अपमानित और बदनाम करने का प्रयत्न करते हैं तो अहमदी बहरहाल दर्द महसूस करता है क्योंकि ये लोग हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] की ओर सम्बद्ध होते हैं या सम्बद्ध होने का दावा करते हैं और इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन भटके हुए मुसलमानों में से एक बहुत बड़ी संख्या ज्ञान की कमी के कारण इन नेताओं और उलेमा की बातों में आकर ऐसी अनुचित गतिविधियां और कार्यवाहियां कर जाती है जिस से इस्लाम का दूर का भी संबंध नहीं है। अल्लाह तआला हमारी दुआएं सुनते हुए उन लोगों को उन केवल नाम के उलेमा से छुड़ाए और यह इस्लाम की सुन्दर शिक्षा की वास्तविकता को समझते हुए अनजाने में या मूर्खतावश तथा इस्लामी प्रेम के जोश में आकर इस्लाम की बदनामी का कारण बन रहे हैं वह न बनें। अल्लाह

तआला उनको सद्मार्ग भी दिखाए, क्योंकि उनकी इन कार्यवाहियों के कारण शत्रु को इस्लाम पर कीचड़ उछालने का अवसर मिलता है और आंहज़रत[स.अ.व.] के अस्तित्व पर भी अपमानजनक आक्रमण करने का अवसर प्राप्त होता है। इसलिए प्रत्येक अहमदी को आजकल दुआओं की ओर बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि इस्लामी विश्व ही अपनी ही ग़लतियों के कारण अत्यन्त भयावह स्थिति से दोचार है। यदि हमारे अन्दर आंहज़रत[स.अ.व.] से सच्चा प्रेम और अनुराग है तो हमें उम्मत के लिए भी बहुत अधिक दुआएं करनी चाहिएं। इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है जो हम पहले भी कर रहे हैं।

दुआ करने और बरकतें प्राप्त करने का मूल उपाय

परन्तु आज मैं ध्यान दिलाना चाहता हूं कि हमें किस प्रकार दुआएं करनी चाहिएं ये दुआ करने के उपाय और ढंग हमें आंहज़रत[स.अ.व.] ने ही सिखाए हैं जिन से हमारा भी सुधार होता है और दुआ की स्वीकारिता के दृश्य भी हम देख सकते हैं।

एक हदीस में आता है हज़रत उमर[रज़ि.] बिन ख़त्ताब कहते हैं कि आंहज़रत[स.अ.व.] ने फ़रमाया कि दुआ आकाश और पृथ्वी के मध्य ठहर जाती है जब तक तू अपने नबी[स.अ.व.] पर दरूद न भेजे। उसमें से कोई भाग भी (ख़ुदा के समक्ष प्रस्तुत होने के लिए) ऊपर नहीं जाता।

(तिरमिज़ी किताबुस्सलात बाब मा जाआ फ़ी फ़ज़्लिस्सलात अलन्नबिय्ये[स.अ.व.])

यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसके बारे में अल्लाह तआला ने भी क़ुर्आन करीम में स्पष्ट तौर पर कहा है। जो आयत मैंने अभी पढ़ी है कि اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا

عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِـيْمًا (अहअहज़ाब - 57) कि निश्चय ही अल्लाह और उसके फ़रिश्ते भी नबी पर दया भेजते हैं। हे लोगो जो ईमान लाए हो तुम भी उस पर दरूद और सलाम भेजो।

क़ुर्आन करीम में असंख्य आदेश हैं जिन्हें करने की आज्ञा है तथा उनका पालन करने के परिणामस्वरूप क्या होता है कि अल्लाह तआला के प्रिय बन जाओगे, अल्लाह तआला की ने'मतों के वारिस ठहरोगे, अल्लाह का सानिध्य पाने वाले बन जाओगे, नरक से बचाए जाओगे, स्वर्ग में प्रवेश करोगे यहां यह आदेश है कि यह इतना बड़ा और महान कार्य है कि अल्लाह तआला ने अपने फ़रिश्तों और अल्लाह तआला स्वयं भी अपने प्रिय नबी[स.अ.व.] पर दरूद और सलाम भेजता है। इसलिए यह ऐसा कार्य है जिसे करके तुम उस कर्म का अनुसरण कर रहे हो जो ख़ुदा तआला का कार्य है। अत: जब अल्लाह तआला हमें अपने आदेशों का पालन करने से इतने बड़े प्रतिफलों से सम्मानित करता है तो उस कार्य के करने से जो स्वयं ख़ुदा तआला करता है कितना अधिक सम्मानित करेगा और निश्चय ही यह निष्कपट होकर भेजा गया दरूद उम्मत के सुधार का कारण भी बनेगा। उम्मत को बदनामी से बचाने का कारण भी बनेगा, हमारे सुधार का कारण भी बनेगा और हमारी दुआओं की स्वीकारिता का भी माध्यम बनेगा, हमें दज्जाल के उपद्रवों से बचाने का साधन भी बनेगा।

हदीसों में विभिन्न रिवायतों में दरूद के लाभ मिलते हैं। एक रिवायत में आंहज़रत[स.अ.व.] ने फ़रमाया कि प्रलय के दिन लोगों में से सब से अधिक मेरे निकट वह व्यक्ति होगा जो उनमें से मुझ पर सब से अधिक दरूद भेजने वाला होगा।

(तिरमिज़ी किताबुस्सलात, बाब मा जाआ फ़ी फ़ज़्लिस्सलाते अल न्नबिय्ये[स.अ.व.])

फिर कहा :- जो व्यक्ति मुझ पर हार्दिक निष्कपटता से एक बार दरूद भेजेगा उस पर अल्लाह दस बार दरूद भेजेगा और उसे दस श्रेणियों की बुलन्दी प्रदान करेगा (और उसकी दस नेकियां लिखेगा) और दस पाप क्षमा करेगा।

(सुनन अन्निसाई, किताबुस्सहव, बाबुल फ़ज़्ल फिस्सलाते अलन्नबिय्य[स.अ.व.])

अतः देखें कि हार्दिक निष्कपटता शर्त है। बहुत से लोग दुआएं करने या करवाने वाले यह लिखते हैं कि हम दुआएं भी बहुत कर रहे हैं आप भी दुआ करें और दरूद भी पढ़ते परन्तु लम्बा समय हो गया है हमारी दुआएं स्वीकार नहीं हो रहीं। आंहज़रत[स.अ.व.] ने फ़रमाया कि दरूद किस प्रकार भेजो। फ़रमाया कि صَادِقًا مِّنْ نَّفْسِهٖ इस प्रकार भेजो कि शुद्ध हो जाओ। दरूद भेजते हुए प्रत्येक स्वयं को टटोले, अपने हृदय को टटोले कि इस में संसार की कितनी मिलावटें हैं और कितना शुद्ध होकर दरूद भेजने की ओर ध्यान है, कितना निष्कपट हो कर दरूद भेजा जा रहा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में कहते हैं कि :-

"दरूद शरीफ़ जो दृढ़ता-प्राप्त करने का एक शक्तिशाली माध्यम है बहुत अधिक पढ़ो परन्तु न रस्म और आदत के तौर पर अपितु रसूलुल्लाह[स.अ.व.] की सुन्दरता और उपकार को दृष्टिगत रखकर तथा आप[स.] की श्रेणियों और पदों की उन्नति के लिए तथा आपकी सफलताओं के लिए। इस का परिणाम यह होगा कि दुआ की स्वीकारिता का स्वादिष्ट और मधुर फल तुम्हें मिलेगा।"

(रीवियू आफ़ रिलीजन्ज़ उर्दू, जिल्द-3, नम्बर-1, पृष्ठ-115)

यह हैं दरूद भेजने के ढंग।

फिर आपने कहा कि :-

"(हे लोगो !) उस उपकारी नबी पर दरूद भेजो जो कृपालु और उपकारी ख़ुदा की विशेषताओं का द्योतक है, क्योंकि उपकार का बदला

उपकार ही है और जिस हृदय में आपके उपकारों का अहसास नहीं उसमें या तो ईमान है ही नहीं और या फिर ईमान को नष्ट करने पर तत्पर है। हे अल्लाह ! उस अनपढ़ रसूल और नबी पर दरूद भेज, जिसने पिछलों को भी पानी से तृप्त किया है जिस प्रकार उसने पहलों को तृप्त किया और उन्हें अपने रंग में रंगीन किया था और उन्हें पवित्र लोगों में सम्मिलित किया था।"

(एजाज़ुल मसीह अरबी से अनुवाद, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-18, पृष्ठ - 5,6)

इस प्रकार निष्कपट होकर दरूद भेजेंगे जिस से एक जमाअती रंग भी पैदा हो जाए तो वह ऐसा दरूद हो जो अपने प्रभाव भी दिखाता है। ऐसे लोग जो कहते हैं कि दरूद का प्रभाव नहीं होता उन पर इस हदीस से भी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस कलाम से भी बात स्पष्ट हो जानी चाहिए और कभी भी दरूद भेजने से तंग नहीं आना चाहिए वरन् स्वयं को टटोलना चाहिए। आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा है जो मुझ पर दरूद न भेजे वह बड़ा कंजूस है और उस कंजूसी के कारण जहां वह कंजूसी का पाप अपने ऊपर ले रहा होता है वहां ख़ुदा की कृपाओं से भी वंचित हो रहा होता है। जैसा कि हम देख चुके हैं कि एक बार दरूद भेजने वाले पर अल्लाह तआला दस बार दरूद भेजता है।

(जिलाउलअफ़्हाम, पृष्ठ - 318, सुननुन्निसाई के उद्धरण से)

यह अल्लाह तआला की सुरक्षा प्राप्त करना ऐसा सौदा है कि आंहज़रत[स.अ.व.] के सहाबा[रज़ि.] भी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ सहाबा[रज़ि.] भी सब दुआएं छोड़ कर केवल दरूद भेजा करते थे।

एक रिवायत में आप[स.] ने कहा कि यह एक अशिष्टता और अविश्वसनीयता की बात है कि एक व्यक्ति के पास मेरी चर्चा हो और

वह मुझ पर दरूद न भेजे।

(जिलाउल अफ़्हाम, पृष्ठ-327, प्रकाशित - 1897 ई. अमृतसर)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़[रज़ि.] कहते हैं कि

"आंहज़रत[स.अ.व.] पर दरूद भेजना गर्दनों को आज़ाद करने से भी अधिक श्रेष्ठता रखता है और आप की संगत अल्लाह तआला के मार्ग में प्राण देने या जिहाद करने से भी श्रेष्ठ है।"

(तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर, तारीख ख़तीब व तरग़ीब इस्फ़हानी के हवाले से, दरूद शरीफ़ के उद्धरण से, पृष्ठ-160)

यह जो आजकल मात्र नाम के जिहाद हो रहे हैं, दूसरों से भी युद्ध हैं और आपस में भी एक दूसरे की गर्दनें काटी जा रही हैं। अब इन उलेमा से कोई पूछे कि तुम तो अशिक्षित और अनपढ़ मुसलमानों की भावनाओं को भड़का कर (जो धार्मिक जोश में आकर अपनी ओर से इस्लामी स्वाभिमान का प्रदर्शन करते हुए ग़लत कार्यवाहियां करते हैं) तुम उनका जो ग़लत मार्ग-दर्शन करते हो तो यह कौन सा इस्लाम है ? इस्लाम की शिक्षा तो यह है कि जब तुम आंहज़रत[स.अ.व.] के बारे में अश्लील वाक्य सुनो तो आपकी ख़ूबियां वर्णन करो, आप[स.] पर दरूद भेजो। यह तुम्हारे जिहाद से अधिक श्रेष्ठ है। प्राण देने से अधिक उत्तम है कि दुआओं और दरूद की ओर ध्यान दो।

इस युग में जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का युग है यह और भी अधिक आवश्यक है कि आतंक के स्थान पर दुआओं और दरूद पर ज़ोर दो और इसके साथ ही अपने सुधार का भी प्रयत्न करो। अपने हृदयों को टटोलो कि किस सीमा तक हम आंहज़रत[स.अ.व.] से प्रेम करने वाले हैं। यह सामयिक जोश तो नहीं है जो कुछ वर्गों के व्यक्तिगत

हित के कारण हमें भी उस अग्नि की चपेट में ले रहा है ?

इसलिए हमें चाहिए कि जहां अपने सुधार की ओर ध्यान दें वहां अपने वातावरण में यदि मुसलमानों को समझा सकते हों तो अवश्य समझाएं कि ग़लत ढंग न अपनाओ अपितु वह मार्ग अपनाओ जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने पसन्द किया है और हमें वह मार्ग बताया है जो यह है कि आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा - यदि तुमने मेरी प्रसन्नता प्राप्त करनी है, स्वर्ग में जाना है तो मुझ पर दरूद भेजो।

एक रिवायत में आता है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद[रज़ि.] से रिवायत है कि आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा कि -

"जो व्यक्ति मुझ पर दरूद नहीं भेजेगा उसका कोई धर्म ही नहीं।"

(जिलाउलअफ़्हाम मुहम्मद बिन हमदान मरूज़ी के उद्धरण से)

फिर एक अवसर पर कहा :-

"अल्लाह को बड़ी प्रचुरता के साथ स्मरण करना और मुझ पर दरूद भेजना तंगी से दूर करने का माध्यम है।"

(इन्द-अल्मामिल फ़क्र वल हाजत औ ख़ौफ़)

अब यह जो आजीविका की तंगी है आजकल मुसलमानों पर भी जो तंगियां आ रही हैं पश्चिम ने अपने लिए और सिद्धान्त रखे हैं तथा मुसलमानों के लिए और सिद्धान्त रखे हुए हैं और इन मुसलमान देशों के लिए और सिद्धान्त रखे हैं। इसका उत्तम हल यह है कि आंहज़रत[स.अ.व.] पर अधिक से अधिक दरूद भेजा जाए और उन बरकतों से लाभान्वित हुआ जाए जो दरूद पढ़ने के साथ अल्लाह तआला ने सम्बद्ध कर रखी हैं।

एक रिवायत है (कुछ भाग पहले भी वर्णन किया है) इसका विवरण

एक अन्य स्थान पर भी आता है। हज़रत अनस[रज़ि.] से रिवायत है कि आप[स.] ने कहा -

"प्रलय के दिन उस दिन के प्रत्येक भयावह स्थान में तुम में से सब से अधिक मुझ से निकट वह व्यक्ति होगा जिसने संसार में मुझ पर सब से अधिक दरूद भेजा होगा।"

(तफ़्सीर दुर्रेमन्सूर हवाला शै'बुलईमान लिलबैहक़ी व तारीख़ इब्ने असाकिर)

देखें अब कौन नहीं चाहता कि प्रलय के दिन आंहज़रत[स.अ.व.] के सानिध्य में स्थान पाए और हर भयानक स्थान से आप[स.] का दामन पकड़ कर निकलता चला जाए। निश्चय ही प्रत्येक अल्लाह तआला के प्रकोप से बचना चाहता है तो फिर यह उससे बचने का और आप[स.अ.व.] के सानिध्य में रहने का उपाय है जो आप[स.] ने हमें बताया है। इसलिए हर समय मोमिन को दरूद भेजने की ओर ध्यान देना चाहिए और प्रत्येक अवसर पर लाभ उठाते हुए दरूद भेजना चाहिए।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत अनस[रज़ि.] से रिवायत है कि आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा है -

"जो व्यक्ति एक दिन में मुझ पर हज़ार बार दरूद भेजेगा वह इसी जीवन में स्वर्ग के अन्दर अपना स्थान देख लेगा।"

(जिलाउलअफ़्हाम हवाला - इब्नुल ग़ाज़ी व किताबुस्सलात अलन्नबिय्ये लिअबी अब्दिल्लहिल मुक़द्दसी)

अत: दरूद की बरकत से जो परिवर्तन होंगे वे इस संसार के जीवन को भी स्वर्ग बनाने वाले होंगे और यही कर्म और नेकियां और पवित्र परिवर्तन हैं जो जहां इस संसार में स्वर्ग बना रहे होंगे, अगले संसार में भी स्वर्ग के वारिस बना रहे होंगे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर[रज़ि.] बिन अलआस से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत नबी[स.अ.व.] को यह कहते हुए सुना :-

"जब तुम अज़ान देने वाले को अज़ान देते हुए सुनो तो तुम भी वही शब्द दुहराओ जो वह कहता है फिर मुझ पर दरूद भेजो। जिस व्यक्ति ने मुझ पर दरूद पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस गुना रहमतें उतारेगा। फिर कहा - मेरे लिए अल्लाह से माध्यम मांगो यह स्वर्ग की श्रेणियों में से एक श्रेणी है जो अल्लाह तआला के बन्दों में से एक बन्दे को मिलेगी और मैं आशान्वित हूं कि वह मैं ही हूंगा। जिस किसी ने भी मेरे लिए अल्लाह से माध्यम मांगा उसके लिए सिफ़ारिश वैध हो जाएगी।"

(सही मुस्लिम किताबुस्सलात, बाब इस्तिहबाबिल क़ौल मिस्ल कौलिल मुअज़्ज़न लिमन समिअहू युसल्ली अलन्नबिय्ये[स.अ.व.])

अतः यह जो अज़ान के बाद की दुआ है उसे हर अहमदी को याद करना चाहिए और पढ़ना चाहिए। दरूद भेजने का महत्त्व और दरूद के लाभ तो स्पष्ट हो गए परन्तु कुछ लोग यह भी प्रश्न करते हैं कि दरूद किस प्रकार भेजें। विभिन्न लोगों के विभिन्न दरूद बनाए हुए हैं, परन्तु इस बारे में एक हदीस है -

हज़रत कअब उजरा[रज़ि.] वर्णन करते हैं कि हमने कहा कि हे अल्लाह के रसूल आप पर सलाम भेजने का तो हमें ज्ञान है परन्तु आप पर दरूद कैसे भेजें। कहा कि यह कहो कि -

اللھم صلی علی محمد و علی اٰل محمد کما صلیت علی ابراھیم و علی اٰل ابراھیم انک حمید مجید و بارک علی محمد کما بارکت علی ابراھیم انک حمید مجید

(सही तिरमिज़ी)

अतः यह है जो नमाज़ का दरूद है वह कुछ और विस्तार में है।

फिर इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किसी को पत्र में नसीहत करते हुए कहते हैं कि :-

"तहज्जुद की नमाज़ तथा सामान्य वज़ीफ़ों में आप व्यस्त रहें। तहज्जुद में बहुत सी बरकते हैं, बेकारी कुछ वस्तु नहीं। बेकार और आरामप्रिय होना कुछ महत्त्व नहीं रखता। अल्लाह तआला का कथन है وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अलअन्कबूत - 70) दरूद शरीफ़ वही उत्तम है कि जो आंहज़रत के मुबारक मुख से निकला है और वह यह है :-

اللهم صلّ علی محمد و علی اٰل محمد كما صلّیت علٰی ابراهیم و علی اٰل ابراهیم انک حمید مجید۔ اللهم بارک علی محمد و علی اٰل محمد كما بارکت علی ابراهیم و علی اٰل ابراهیم انک حمید مجید۔"

फ़रमाया कि :-

"जो शब्द एक संयमी के मुख से निकलते हैं उनमें कुछ बरकत अवश्य होती है अतः विचार कर लेना चाहिए कि जो संयमियों का सरदार और नबियों का सेनापति है उसके मुख से जो शब्द निकले हैं वे कितने शुभ होंगे। अतः दरूद शरीफ़ के समस्त प्रकारों में से यही दरूद शरीफ़ अधिक मुबारक है।"

(विभिन्न प्रकार हैं दरूद शरीफ़ के उनमें से यही दरूद शरीफ़ अधिक मुबारक है) "यही इस विनीत का वज़ीफ़ा है तथा किसी संख्या

की पाबन्दी आवश्यक नहीं। निष्कपटता, प्रेम, एकाग्रचित्त होकर तथा विनयपूर्वक पढ़ना चाहिए और उस समय तक अवश्य पढ़ते रहें कि जब तक एक आर्द्रता और बेसुधी तथा प्रभाव की अवस्था पैदा हो जाए और सीने में प्रफुल्लता और रुचि पाई जाए।"

(मक्तूबाते अहमदिया जिल्द प्रथम, पृष्ठ 17, 18)

अतः यह वही वज़ीफ़ा है जो हम नमाज़ में पढ़ते हैं। जैसा कि मैंने कहा और अधिकतर इसी का वज़ीफ़ा करना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा है कि संख्या नहीं देखनी चाहिए।

हदीस में आता है कि जो एक हज़ार बार करता है उसका तात्पर्य है कि जितना अधिक से अधिक करता है परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी कुछ लोगों को संख्या बताई। किसी को सात सौ बार प्रतिदिन पढ़ना या ग्यारह सौ बार पढ़ना बताया। अतः यह आदेश प्रत्येक की अपनी परिस्थितियों और स्तर के अनुसार है परिवर्तित होता रहता है। बहरहाल यह दरूद शरीफ़ हमें पढ़ना चाहिए। इसलिए मैंने जुबली का दुआओं में भी एक तो वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इल्हामी दुआ है :-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ - اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَ اٰلِ مُحَمَّدٍ۔

इसके अतिरिक्त मैंने कहा था कि दरूद शरीफ़ भी पूरा पढ़ा जाए तो इसलिए कहा था कि मूल दरूद शरीफ़ जो आंहज़रत[स.अ.व.] ने पढ़ा उसको हमें अपनी दुआओं में अवश्य सम्मिलित रखना चाहिए, परन्तु वही बात जिस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद[अ.] ने कहा कि इतना डूब कर पढ़ें कि

एक विशेष अवस्था पैदा हो जाए और जब इस प्रकार होगा तो फिर अल्लाह तआला की कृपाओं के वारिस बन रहे होंगे।

विजयों की प्राप्ति केवल और केवल दुआ से ही हो सकती है

यह युग जो अन्त में आने वालों का युग है जिस से इस्लाम की विजयें सम्बद्ध हैं और यह विजयें हम सभी जानते हैं कि तलवारों, बन्दूकों, तोपों और गोलों से नहीं होगी। इस में सब से बड़ा शस्त्र दुआ का है, फिर प्रमाणों और तर्कों का शस्त्र है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दिया गया है और ख़ुदा ने चाहा तो इसी के द्वारा इस्लाम ने विजयी होना है। दुआओं की स्वीकारिता के लिए और अल्लाह तआला का सानिध्य तथा बरकतें प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला ने हमें बता दिया है, हम आयत में देख चुके हैं कि नबी करीम[स.अ.व.] पर दरूद भेजो और विभिन्न हदीसों से भी हमने देख लिया है कि यह सब कुछ आंहज़रत[स.अ.व.] पर दरूद भेजे बिना संभव नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी यही बताया है कि मुझे जो पद मिला है इसी दरूद भेजने के कारण मिला है और इस्लाम की भविष्य में विजयों के साथ भी इस का विशेष संबंध है। अपने इस स्थान के बारे में जो अल्लाह तआला ने आप को मसीह तथा महदी बना कर संसार में भेजने के रूप में दिया। आप अलैहिस्सलाम एक इल्हाम की चर्चा करते हुए कहते हैं कि :-

"इसके बाद जो इल्हाम है वह यह है صَلِّ عَلٰی محمدٍ و اٰلِ محمّدٍ سَیِّدِ وُلْدِ اٰدَمَ و خَاتَمِ النبیّین और दरूद भेज मुहम्मद और आले मुहम्मद पर जो सरदार है आदम के बेटों का और ख़ातमुल अंबिया[स.अ.व.] है। यह इस बात की ओर संकेत है कि यह सब श्रेणियां और कृपाएं एवं

अनुकम्पाएं उसी के कारण हैं और यह उसी से प्रेम करने का प्रतिफल है। सुब्हान अल्लाह उस जगत के सरदार के कि ख़ुदा के दरबार में क्या ही उच्च पद हैं और किस प्रकार का सानिध्य है कि उस का प्रेमी ख़ुदा का प्रियतम बन जाता है और उसका सेवक एक संसार का स्वामी बनाया जाता है ..... इस स्थान पर मुझे याद आया कि एक रात इस विनीत ने इतनी अधिक संख्या में दरूद शरीफ़ पढ़ा कि उससे तन-मन सुगंधित हो गया। उसी रात स्वप्न में देखा कि आप शुद्ध और शीतल पानी के रूप पर प्रकाश की मश्कें इस विनीत के मकान में (फ़रिश्ते) लिए आते हैं और उनमें से एक ने कहा कि ये वही बरकतें हैं जो तू ने मुहम्मद की ओर भेजी थीं। सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

और ऐसा ही विचित्र एक और क़िस्सा याद आया है कि एक बार इल्हाम हुआ जिस के अर्थ ये थे कि फ़रिश्तों के स्थान के लोग संघर्ष में हैं अर्थात् ख़ुदा का इरादा धर्म को जीवित करने के लिए जोश में है, परन्तु अभी मलाए आ'ला (देवलोक) पर जीवित करने वाले व्यक्ति की नियुक्ति प्रकट नहीं हुई, इसलिए वह मतभेद में हैं। इसी मध्य स्वप्न में देखा कि लोग एक जीवित करने वाले को खोजते फिर रहे हैं। एक व्यक्ति इस विनीत के सामने आया और संकेत से उसने कहा - هَذَا رَجُلٌ يُّحِبُّ رَسُوْلَ اللّٰهِ अर्थात् यह वह व्यक्ति है जो अल्लाह के रसूल से प्रेम रखता है। इस वाक्य का अर्थ यह था कि इस पद की सबसे बड़ी शर्त रसूल से प्रेम है जो इस व्यक्ति में सिद्ध है। (अर्थात् इसमें मौजूद है) और ऐसा ही उपरोक्त इल्हाम में जो आले रसूल पर दरूद भेजने का आदेश है, इसमें भी यही भेद है कि ख़ुदा के प्रकाशों का यश पहुंचाने में अहले बैत को भी बड़ा हस्तक्षेप है। जो व्यक्ति ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त लोगों

में सम्मिलित होता है वह उन्हीं पवित्र और शुद्ध लोगों की विरासत पाता है और समस्त ज्ञानों और अध्यात्म ज्ञानों में उनका वारिस ठहरता है।"

(बराहीन अहमदिया हर चार भाग हाशिया का हाशिया नं. 3, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - प्रथम, पृष्ठ 597-598)

इस्लाम की खोई हुई श्रेष्ठता को यथावत करने के लिए मसीह मौऊद की जमाअत में सम्मिलित होकर प्रयास करना आवश्यक है

आज धर्म को जीवित करने के लिए इस्लाम का खोया हुआ वैभव और प्रतिष्ठा वापस लाने के लिए, आंहज़रत[स.अ.व.] की प्रतिरक्षा में खड़ा होने के लिए अल्लाह तआला ने जिस योद्धा को खड़ा किया है उसका अनुसरण करने से और उसके दिए हुए प्रमाण और तर्कों द्वारा जो अल्लाह तआला ने उसे बताए हैं और उसकी शिक्षा का पालन करने से तथा आप[स.] का झण्डा पूरी चमक-दमक तथा पूरी प्रतिष्ठा एवं वैभव के साथ विश्व में लहराएगा इन्शा अल्लाह और लहराता चला जाएगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस युग के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए तथा लोगों को ध्यान दिलाते हुए कहते हैं। उसका सारांश यह है कि इस्लाम पर कैसे कठोर दिन हैं इसलिए अल्लाह तआला ने एक सिलसिला स्थापित किया जो खोई हुई श्रेष्ठता को यथावत् करेगा। इसलिए मुसलमानों को कहा कि अब अपने हठ छोड़ो और विचार करो कि क्या अल्लाह तआला ऐसी परिस्थितियों में भी कि आंहज़रत[स.अ.व.] की हस्ती पर चारों ओर से प्रहार हो रहे हैं उनका सम्मान स्थापित करने के लिए जोश में नहीं आया जबकि वह दरूद भेजता है ?

पूरा वक्तव्य इस प्रकार है। कहा कि :-

"यह युग कैसा मुबारक युग है कि ख़ुदा तआला ने इन आपत्तियों से

परिपूर्ण दिनों में मात्र अपनी कृपा से आंहज़रत[स.अ.व.] की श्रेष्ठता को प्रकट करने के लिए यह शुभ इरादा किया कि परोक्ष से इस्लाम की सहायता का प्रबंध किया और एक सिलसिला स्थापित किया। मैं उन लोगों से पूछना चाहता हूं जो अपने हृदय में इस्लाम के लिए एक दर्द रखते हैं और उसका सम्मान और महत्त्व उनके हृदयों में है। वे बताएं कि क्या कोई युग इस युग से बढ़कर इस्लाम पर गुज़रा है जिसमें आंहज़रत[स.अ.व.] को इतनी गालियां और अपमान किया गया हो और क़ुर्आन करीम का निरादर हुआ हो ? फिर मुझे मुसलमानों की दशा पर बहुत खेद और हार्दिक शोक होता है और प्राय: मैं उस पीड़ा से बेचैन हो जाता हूं कि उन में इतनी चेतना भी शेष न रही कि अब अपमान को महसूस कर लें। क्या अल्लाह तआला को आंहज़रत[स.अ.व.] का इतना भी सम्मान स्वीकार न था कि इतनी गाली-गलौज पर भी वह कोई आकाशीय सिलसिला स्थापित न करता और उन इस्लाम के विरोधियों के मुख बन्द करके आप की श्रेष्ठता और पवित्रता को संसार में फैलाता, जबकि स्वयं अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते आंहज़रत[स.अ.व.] पर दरूद भेजते हैं कि इस अपमान के समय में इस सलामती का प्रकटन कितना आवश्यक है तथा उस का प्रकटन अल्लाह तआला ने इस सिलसिले के रूप में किया है।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द - 3, पृष्ठ - 8,9 नवीन संस्करण)

यह वाक्य देखें कि इस प्रकार जमाअत अहमदिया पर बहुत बड़ा दायित्व आता है जो स्वयं को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर सम्बद्ध करते हैं।

इसलिए जहां ऐसे समय में जब आप[स.अ.व.] के विरुद्ध एक असभ्यतापूर्ण तूफ़ान मचा हुआ है निश्चय ही अल्लाह तआला के फ़रिश्ते आप[स.अ.व.]

पर दरूद भेजते होंगे, भेज रहे होंगे, भेज रहे हैं। हमारा भी कर्त्तव्य है जिन्होंने स्वयं को आंहज़रत[स.अ.व.] के सच्चे प्रेमी तथा युग के इमाम के सिलसिले और उसकी जमाअत से संलग्न किया है कि अपनी दुआओं को दरूद में ढाल दें और अंतरिक्ष में हार्दिक निष्ठा के साथ इतना दरूद बिखेरें कि अंतरिक्ष का प्रत्येक कण दरूद से सुगंधित हो उठे और हमारी समस्त दुआएं उस दरूद के माध्यम से ख़ुदा तआला के दरबार में पहुंच कर स्वीकारिता की श्रेणी पाने वाली हों। यह है उस प्रेम और अनुराग का प्रकटन जो हमें आप[स.] की हस्ती से होना चाहिए तथा आप की सन्तान से होना चाहिए। अल्लाह तआला उम्मते मुस्लिमा को भी बुद्धि दे कि उसके इस चुने हुए व्यक्ति को पहचानें और आप[स.] के इस अध्यात्मिक पुत्र की जमाअत में सम्मिलित हों जो मैत्री, अमन, प्रेम का वातारवरण संसार में पुनः पैदा करके आप[स.] के पद को ऊंचा कर रहा है। अल्लाह तआला उन लोगों को बुद्धि दे कि आप[स.] की ओर सम्बद्ध होने के बावजूद आज फिर देख लें चौदह सौ वर्ष के पश्चात् भी इसी माह में जब मुहर्रम का महीना चल रहा है और इसी पृथ्वी में फिर मुसलमान मुसलमान का रक्त बहा रहा है परन्तु नसीहत कभी प्राप्त नहीं की और अभी तक रक्त बहाते चले जा रहे हैं। अल्लाह तआला इन्हें बुद्धि प्रदान करे और इस कृत्य से रुक जाएं और अपने हृदय में ख़ुदा का भय पैदा करें और इस्लाम की सच्ची शिक्षा का पालन करने वाले हों। यह सब कुछ जो ये कर रहे हैं युग के इमाम को न पहचानने के कारण हो रहा है। आंहज़रत[स.अ.व.] के आदेश से इन्कार के कारण हो रहा है।

अतः आज प्रत्येक अहमदी का दायित्व है, बहुत बड़ा दायित्व है कि जिसने इस युग के इमाम को पहचाना है कि आप[स.] के प्रेम की भावना

के कारण बहुत अधिक दरूद पढ़ें, दुआएं करें अपने लिए भी और दूसरे मुसलमानों के लिए भी ताकि अल्लाह तआला उम्मते मुस्लिमा को विनाश से बचा ले।

आंहज़रत[स.अ.व.] से प्रेम की मांग यह है कि हम अपनी दुआओं में उम्मत को अधिक स्थान दें। ग़ैरों के इरादे भी ठीक नहीं हैं। अभी मालूम नहीं कि किन-किन अतिरिक्त कठिनाइयों और परीक्षाओं में और कष्टों में इन लोगों को सामना करना है तथा क्या-क्या योजनाएं इनके विरुद्ध हो रही हैं। अल्लाह ही दया करे।

अल्लाह तआला हमें सदैव सद्मार्ग पर चलाता रहे, हम उसके कृतज्ञ बन्दे हों तथा उसका धन्यवाद करें कि उसने हमें इस युग के इमाम को स्वीकार करने की शक्ति दी है और अब स्वीकार करने के पश्चात् उसका हक़ अदा करने की भी शक्ति प्रदान करे और सदैव अपने प्रसन्नता के मार्गों पर चलाने वाला हो।

- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर जिहाद को निरस्त करने, इस्लामी आदेशों को परिवर्तित करने और आंहज़रत[स.अ.व.] की शिक्षाओं और आप के युग के अन्त का आरोप सरासर झूठा और घिनौना इल्ज़ाम है।
- हमारे हृदयों में अल्लाह तआला की कृपा से रसूल करीम[स.अ.व.] का प्रेम उन लोगों के प्रेम से लाखों, करोड़ों गुना अधिक है जो हम पर इस प्रकार के आरोप और इल्ज़ाम लगाते हैं।
- डेनमार्क के अख़बार में आंहज़रत[स.अ.व.] के अनादर पर आधारित कार्टूनों के प्रकाशन के हवाले से दैनिक "जंग" में जमाअत अहमदिया के विरुद्ध सर्वथा झूठी और वास्तविकता के विपरीत ख़बर का प्रकाशन शरारत और उपद्रव फैलाना है।
- ऐसी झूठी ख़बर फैलाने वाले के बारे में मैं यही कहता हूं कि झूठों पर ख़ुदा की ला'नत। अल्लाह तआला अब इन दुष्ट स्वभाव लोगों को नसीहत का निशान बना दे।

ख़ुत्ब: जुमा दिनांक 3 मार्च 2006 ई.

स्थान - बैतुलफ़ुतूह मस्जिद, लन्दन, यू.के.

ख़ुत्बः जुमा

दिनांक 3 मार्च 2006 ई.

स्थान - बैतुलफ़ुतूह मस्जिद, लन्दन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَہٗ لا شَرِیکَ لَہٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَ رَسُوْلُہٗ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ-اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ-مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ- اِیَّا کَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ- اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ- صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ غَیْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَاالضَّآلِّیْنَ ۔

अख़बार 'जंग' लन्दन में जमाअत अहमदिया के बारे में झूठी और निराधार ख़बर का प्रकाशन मात्र शरारत और परस्पर फूट डालना है

कल लन्दन से प्रकाशित होने वाले 'जंग' अख़बार ने एक ऐसी ख़बर प्रकाशित की है जिसका जमाअत अहमदिया की आस्थाओं से दूर का भी संबंध नहीं है और सरासर शरारत से यह ख़बर प्रकाशित की गई है न केवल आस्थाओं के विपरीत है अपितु जिस घटना का वर्णन किया गया है उस का भी वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है, कोई अस्तित्व नहीं है। यह ख़बर शायद यहां के हवाले से पाकिस्तान आदि में भी प्रकाशित हुई होगी क्योंकि यह अख़बार अपना विक्रय बढ़ाने के लिए ऐसी ख़बरें

प्रकाशित करने में बड़ी जल्दी करते हैं। सरकुलेशन बढ़ाने के लिए नैतिकता से गिरी हुई कार्यवाहियां करने तथा झूठ के भण्डार प्रकाशित करने के अभ्यस्त हो चुके हैं। इन का जो पाकिस्तान का संस्करण है उसके बारे में हम सब को मालूम है कि प्रतिदिन हमारे बारे में व्यर्थ की बातें करते रहते हैं। झूठ बोलते रहते हैं।

पिछले दिनों डेनमार्क के अख़बार में जो व्यर्थ और अश्लील कार्टून बनाए गए थे और फिर दूसरे विश्व में भी बनाए गए थे, उनके कारण मुसलमानों में एक अत्यन्त क्रोध और शोक की लहर पैदा हुई है। हड़तालें हो रही हैं, जुलूस निकाले जा रहे हैं। बहरहाल क्रोध का जो भी प्रदर्शन है जब उसे कोई संभालने वाला न हो, उस वेग को कोई रोकने वाला न हो, उसे उचित दिशा देने वाला न हो तो प्रतिक्रियाएं इसी प्रकार प्रकट हुआ करती हैं क्योंकि मुसलमान जैसा भी हो, नमाज़ें पढ़ने वाला है या नहीं, उचित कर्म करने वाला है या नहीं परन्तु जहां रिसालत की मर्यादा का प्रश्न आता है तो बड़ा स्वाभिमान रखने वाला है, मर-मिटने के लिए तैयार हो जाता है। इन परिस्थितियों में इस ख़बर को प्रकाशित करना और फिर कल जुमेरात के दिन प्रकाशित करना जबकि आज जुमे के दिन अधिकांश स्थानों पर फिर जुलूस निकालने और हड़तालें करने और इस प्रकार की प्रतिक्रियाओं का कार्यक्रम है तो यह बात शुद्ध रूप से इसलिए की गई थी कि अहमदियों के विरुद्ध वातावरण पैदा करने का प्रयत्न किया जाए। यह अत्यन्त अन्यायपूर्ण तथा उपद्रव फैलाने का प्रयत्न है ताकि इस ख़बर का लाभ उठाते हुए कम ज्ञान रखने वाले मुसलमानों को भड़का कर अहमदियों को आतंक का निशाना बनाया जाए। बहरहाल ये उनके प्रयत्न हैं कि कोई अवसर हाथ से न जाने दिया

जाए जब अहमदियों के विरुद्ध कम ज्ञान रखने वाले मुसलमानों को भड़काया न जाए।

आप में से कई लोगों ने यह ख़बर पढ़ी होगी परन्तु चूंकि सब पढ़ते नहीं हैं इसलिए मैं यह ख़बर पढ़ देता हूं। कोपन हैगन के हवाले से यह ख़बर प्रकाशित हुई है उनके रिपोर्टर जावेद कंवल साहिब हैं। वह कहते हैं कि "डेनमार्क के सी. आई. डी. विभाग के एक ज़िम्मेदार अफ़सर ने अपना नाम और पद गुप्त रखने की शर्त पर कार्टून के मुद्दे पर बात करते हुए 'जंग' अख़बार को बताया कि सितम्बर 2005 ई. में क़ादियानियों का वार्षिक अधिवेशन डेनमार्क में हुआ जिसमें क़ादियानियों के केन्द्रीय ज़िम्मेदार लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर क़ादियानियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने एक डेनिश मंत्री से भेंट के बीच जिहाद के विषय पर वार्तालाप करते हुए उन्हें बताया कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं के वही दावेदार हैं।"

यहां तक तो ठीक है हम ने उन्हें विशेष तौर पर तो नहीं बताया परन्तु हमारा दावा यही है कि जमाअत अहमदिया ही इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं की दावेदार है।

आगे लिखते हैं कि उन के नबी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी ने नऊज़ुबिल्लाह इस्लामी आदेश परिवर्तित कर दिए हैं। यह सरासर आरोप है इसलिए कि मुहम्मद[स.अ.व.] की शिक्षाएं तथा उनका युग समाप्त हो चुका है।

नऊज़ुबिल्लाह अख़बार लिखता है कि क़ादियानियों के इस विश्वास दिलाने पर कि मुहम्मद[स.अ.व.] के अनुयायी सऊदी अरब तक सीमित हैं। 30 सितम्बर को डेनिश अख़बार ने मुहम्मद[स.अ.व.] के हवाले से बाहर

कार्टून प्रकाशित किए जिनका केन्द्रीय लक्ष्य जिहाद की फ़िलास्फ़ी पर आक्रमण करना था। उच्च डेनिश अधिकारी ने कहा - हमें जनवरी के आरंभ तक इस बात का विश्वास था कि क़ादियानियों का दावा सच्चा था, क्योंकि जनवरी तक सऊदी अरब के अतिरिक्त किसी इस्लामी देश ने हम से नियमित रूप से विरोध प्रकट नहीं किया था। ओ. आई. सी. की खामोशी हमारे विश्वास को दृढ़ कर रही थी। इस ज़िम्मेदार अफ़सर ने उस प्रतिनिधि को उस भेंट की वीडियो टेप भी सुनाई जिसमें डेनिश उर्दू और अंग्रेज़ी भाषा में बातचीत रिकार्ड थी।

(दैनिक 'जंग' लन्दन, 2 मार्च 2006 पृष्ठ 1 तथा 3)

जैसे उससे बातें तीनों भाषाओं में हो रही थी।

झूठ के तो कोई पैर नहीं होते ऐसी निराधार ख़बर है जिसकी सीमा ही नहीं है। यह डाक्टर जावेद कंवल साहिब शायद 'जंग' के कोई विशेष प्रतिनिधि हैं। पहले तो विचार था कि डेनमार्क में हैं परन्तु अब ज्ञात हुआ है कि यह साहिब इटली में हैं वहां से 'जंग' की और 'जियो' की रिपोर्टिंग करते हैं और क़ानूनी तौर पर यह वैसे भी जो मुझे अभी तक ज्ञात हुआ है कि डेनमार्क के हवाले से यह ख़बर किसी अख़बार में नहीं दे सकते।

प्रथम बात तो यह है कि यह आरोप लगाया है कि जमाअत का सितम्बर में जलसा हुआ। जमाअत अहमदिया का पिछले वर्ष का अधिवेशन सितम्बर में तो वहां हुआ ही नहीं था। मेरे जाने के कारण स्केन्डेनेवियन देशों का संयुक्त अधिवेशन हुआ था वह स्वीडन में हुआ था और M.T.A. पर सभी ने देखा कि हमने क्या बातें कीं और क्या नहीं कीं।

डेनमार्क में मेरे जाने पर एक होटल में एक रिसेप्शन (Reception)

हुआ था, जिसमें कुछ अख़बारी और प्रेस के रिपोर्टर भी थे तथा अन्य शिक्षित वर्ग के लोग भी थे, सरकारी अफसर भी थे और एक मंत्री साहिबा भी आई हुई थीं और वहां क़ुर्आन, हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से इस्लाम की सुन्दर और शान्तिप्रिय शिक्षा की चर्चा हुई थी और वहां जो कुछ भी कहा गया था वह स्पष्ट था कोई बात गुप्त तौर पर नहीं हुई थी और अख़बारों ने वहां प्रकाशित भी किया था अपितु थोड़ा सा उनके टीवी प्रोग्राम में भी आया था तथा कोई अलग से भेंट नहीं थी और वही जो Reception में मेरा भाषण था, मेरे विचार में एम. टी. ए. ने भी दिखा दिया है नहीं दिखाया तो अब दिखा दें।

बहरहाल यह ठीक है कि कदाचित वहां भाषण में ही इन लिखने वाले सज्जन की तरह लोगों की चर्चा हुई हो कि ये कुछ लोग हैं जो इस्लाम को बदनाम करने वाले हों अन्यथा अधिकतर मुसलमान इस प्रकार के जिहाद और आतंक को अच्छा और उचित नहीं समझे। बहरहाल हमारी ओर सम्बद्ध करके बहुत बड़ा झूठ बोला गया है। कदाचित कोई बहुत झूठा व्यक्ति भी यह बात कहते हुए कुछ विचार करे क्योंकि आजकल तो प्रत्येक बात रिकार्ड होती है और इन सज्जन के कथनानुसार उर्दू, अंग्रेज़ी और डेनिश में वीडियो टेप भी मौजूद है। अत: यदि सच्चे हैं तो यह टेप्स दिखा दें, हमें भी दिखा दें मालूम हो जाएगा कि कौन बोलने वाले हैं, क्या हैं।

इस झूठी ख़बर फैलाने वाले को मैं यही कहता हूं कि यह सरासर झूठ है और झूठों पर ख़ुदा की ला'नत

बहरहाल इस झूठी ख़बर फैलाने वाले को प्रथम तो मैं यही कहता

हूं कि यह सरासर झूठ है और झूठों पर ख़ुदा की ला'नत हो। यदि तुम सच्चे हो तो तुम भी यह शब्द दुहरा दो, परन्तु कभी भी नहीं दोहरा सकते। यदि थोड़ा सा भी ख़ुदा का भय होगा। वैसे तो इन लोगों में ख़ुदा का भय कम ही है परन्तु यदि नहीं भी दोहराते तब भी ये लोग इतना सख़्त झूठ बोलकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस दुआ के अन्तर्गत आ चुके हैं। जो भी हो जमाअत अहमदिया के विरुद्ध ऐसी निन्दनीय हरकतें भूतकाल में भी होती रही हैं और निरन्तर हो रही हैं और जब भी अपने गुमान में हमारी पीठ में छुरा घोंपने का प्रयत्न करते हैं अल्लाह तआला उन्हें विफलता का मुख दिखाता है और जमाअत अहमदिया से अपने प्रेम को प्रकट करता है जो पहले से बढ़कर कृपाएं लेकर आता है।

कार्टूनों के फ़ित्ने के विरुद्ध जमाअत अहमदिया की प्रतिक्रिया और प्रयास

जब से यह कार्टून का फ़ित्ना उठा है सर्वप्रथम जमाअत अहमदिया ने यह बात उठाई थी और इस अख़बार को इससे रोकने का प्रयत्न किया था। इसकी मैं पूर्व में भी चर्चा कर चुका हूं। फिर दिसम्बर, जनवरी में हमने दोबारा उन अख़बारों को लिखा था और बड़े स्पष्ट तौर पर अपनी भावनाओं को प्रकट किया था उन दिनों मैं क़ादियान में था जब हमारे प्रचारक ने वहां अख़बार को लिखा था हमारे प्रचारक का अख़बार में इन्टरव्यू प्रकाशित हुआ था। तो उस अख़बार ने यह लिखने के पश्चात् कि इस बारे में जमाअत अहमदिया की प्रतिक्रिया क्या है और ये लोग तोड़-फोड़ की बजाए आंहज़रत[स.अ.व.] के उत्तम आदर्श को अपने जीवन में ढाल कर प्रस्तुत करना चाहते हैं। आगे वह लिखता है कि इसका तात्पर्य यह नहीं (इमाम साहिब का इन्टरव्यू था) कि इमाम को इन कार्टूनों से

कष्ट नहीं पहुंचा अपितु उनका हृदय कार्टूनों के घाव से टुकड़े-टुकड़े है। इस कष्ट ने उन्हें इस बात पर तत्पर किया कि वह तुरन्त इस कार्टूनों के बारे में एक लेख लिखें। अतः उन्होंने वह लेख लिखा और वहां डेनमार्क के अख़बारों में प्रकाशित हुआ।

फिर आंहज़रत[स.अ.व.] से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का प्रेम ही है जिसने जमाअत में भी उस प्रेम की इतनी आग लगा दी है कि यूरोप में ईसाइयत से अहमदियत अर्थात् वास्तविक इस्लाम में आने वाले यूरोपियन लोग भी इस प्रेम और मुहब्बत से ओत-प्रोत हैं।

अतः डेनमार्क के हमारे एक अहमदी मुसलमान अब्दुस्सलाम मैग्सन साहिब का इन्टरव्यू भी अख़बार Venster Bladet ने 16 फ़रवरी 2006 ई. को प्रकाशित किया है। एक लम्बा इन्टरव्यू है इसका कुछ भाग मैं आप को सुनाता हूं

उसका अनुवाद यह है कि मैडसन साहिब ने अतिरिक्त कहा था कि डेनमार्क के प्रधानमंत्री को मुस्लिम देशों के राजदूतों से बात करना चाहिए थी क्योंकि लोग उन व्यंग्य चित्रों को देख कर क्रोध में आते हैं। यदि प्रधानमंत्री ने मुस्लिम देशों के राजदूतों से बात की होती तो उन्हें ज्ञात होता कि यह समस्या कितनी महत्त्वपूर्ण थी और इसके क्या परिणाम पैदा हो सकते थे और यह जो प्रतिक्रिया सामने आई है यह बिल्कुल वही है जो उन कार्टूनों के प्रकाशित होने पर महसूस कर रहा था कि प्रतिक्रिया क्या होगी, क्योंकि नबी करीम[स.अ.व.] प्रत्येक मुसलमान के लिए जीवन के प्रत्येक पहलू और हर विभाग में आदर्श हैं। जब ऐसे अस्तित्व पर अपमानजनक आक्रमण किया जाए तो यह प्रत्येक मुसलमान के लिए कष्टदायक बात है और वह उस पर दुख महसूस करता है।

अब्दुस्सलाम मैडसन साहिब यह कहते हैं कि यूलैन्ड पोस्टन जो वहां का अख़बार था उसे उन कार्टूनों के प्रकाशन से क्या प्राप्त हुआ है। फिर आगे वह लिखता है कि मैडसन साहिब को भी इस बात से बहुत कष्ट पहुंचा है कि नबी करीम स.अ.व. के कार्टून प्रकाशित किए गए हैं। फिर कहता है कि मैडसन साहिब ने कहा कि आंहज़रत स.अ.व. के हुलिए के बारे में बड़े विस्तार से मिलता है कि उन का हुलिया मुबारक क्या था, कैसा था। फिर उन्होंने लिखा कि यह एक गन्दी और बच्चों वाली हरकत है।

फिर उन्होंने लिखा है कि डेनमार्क में मानहानि का कानून मौजूद है। पहले मेरे विचार में इसकी आवश्यकता न थी परन्तु अब मेरे विचार में उपद्रव को रोकने के लिए इस कानून को लागू करने की आवश्यकता है ताकि उपद्रव न हो। कहते हैं कि रहा नबी करीम स.अ.व. का अपमान तो यह ख़ुदा का मामला है वह स्वयं ही उसका दण्ड देगा। देखें यह यूरोपियन अहमदी मुसलमान का कितना दृढ़ ईमान है।

अतः आंहज़रत स.अ.व. के बारे में इस घृणित हरकत करने पर ये हमारी प्रतिक्रियाएं थीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का हज़रत मुहम्मद स.अ.व. से प्रेम

हमारे हृदयों में ख़ुदा की कृपा से आंहज़रत स.अ.व. से प्रेम उन लोगों से लाखों करोड़ों गुना अधिक है जो हम पर इस प्रकार के आरोप लगाते हैं और यह सब कुछ हमारे हृदयों में आंहज़रत स.अ.व. की इस सुन्दर शिक्षा के कारण है जिसका चित्रण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किया है। जिसे सुन्दर करके आप स. ने हमें दिखाया है। कोई भी अहमदी यह नहीं सोच सकता कि नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

की तो आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम में यह दशा थी कि हस्सान बिन साबित[रज़ि.] का यह शे'र पढ़कर आप की आंखें आंसू बहाया करती थीं। वह शे'र यह है कि :-

كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِی فَعَمِیَ عَلَیْکَ النَّاظِرُ
مَنْ شَاءَ بَعدَکَ فَلْیَمُتْ وَعَلَیْکَ کُنتُ اُحَاذِرُ

(दीवान हस्सान बिन साबित[रज़ि.])

तू तो मेरी आंख की पुतली था जो तेरी मृत्यु हो जाने के पश्चात् अन्धी हो गई अब तेरे बाद जो चाहे मरे, मुझे तो तेरी मृत्यु का भय था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं कि काश यह शे'र मैंने कहा होता। अतः ऐसे व्यक्ति के बारे में यह कहना कि नऊज़ुबिल्लाह स्वयं को आंहज़रत[स.अ.व.] से बड़ा समझता है या उसके अनुयायी उसे आंहज़रत[स.अ.व.] से अधिक स्थान देते हैं बहुत ही घिनौना आरोप है। हमें तो पग-पग पर आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम में मुग्ध होने के दृश्य आप[अ.] में दिखाई देते हैं। आप[अ.] एक स्थान पर कहते हैं -

उस नूर पर फ़िदा हूं उसका ही मैं हुआ हूं
वह है मैं चीज़ क्या हूं

('क़ादियान के आर्य और हम' रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 20, पृष्ठ - 456)

अतः जो व्यक्ति अपना सर्वस्व उस प्रकाश पर न्यौछावर कर रहा हो उनके बारे में यह कहना कि नऊज़ुबिल्लाह आंहज़रत[स.अ.व.] का स्थान अब नहीं रहा और उन्होंने यह कहा कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी का स्थान अधिक ऊंचा हो गया है तथा अहमदियों के निकट हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम अन्तिम नबी हैं

और फिर यह कि हमने उनको यह कह दिया कि ठीक है यह हमारी आस्था है कि आप अन्तिम नबी हैं। अब हम अख़बार को खुली छुट्टी देते हैं कि नऊज़ुबिल्लाह तुम आंहज़रत[स.अ.व.] के कार्टून बनाओ - اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ और झूठों पर ख़ुदा की ला'नत अत्यन्त बच्चों वाली बात है कि हमारे कहने पर केवल इस प्रतीक्षा में बैठे थे कि हम आज्ञा दें और वे कार्टून प्रकाशित कर दें जिसकी संख्या डेनमार्क में कुछ सौ है। ख़बर लगाते हुए यह उर्दू अख़बार कुछ आगे-पीछे भी विचार कर लिया करे।

मुसलमान सरकारों को स्वार्थी तत्वों एवं मुल्ला की चाल में नहीं आना चाहिए

डेनमार्क की बेचारी सरकार तो कदाचित बुद्धि से इतनी खाली न हो परन्तु यह ख़बर लिखने वाले और प्रकाशित करने वाले बहरहाल बुद्धि से खाली लगते हैं तथा उनके हृदयों में उपद्रवों के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता कि इस नाम पर मुसलमान उत्तेजित हो जाते हैं। इसलिए जिन मुसलमान देशों में, बंगला देश में, इन्डोनेशिया में या पाकिस्तान में वातावरण अहमदियों के विरुद्ध है वहां और उपद्रव पैदा किया जाए। कुछ असंभव नहीं है कि कुछ स्वार्थी तत्वों ने इस बहाने उन देशों में यह आन्दोलन आरंभ किया हो कि सरकारों के विरुद्ध आन्दोलन चलाया जाए, क्योंकि हमने अभी तक सामान्यतया यही देखा है कि अहमदियों के विरुद्ध चला आन्दोलन अन्त में सरकारों के विरुद्ध उलट जाता है। इसलिए उन देशों की सरकारों को बुद्धि से काम लेना चाहिए और मुल्ला एवं स्वार्थी तत्वों की चाल में नहीं आना चाहिए जहां तक हमारे निकट आंहज़रत[स.अ.व.] के स्थान का संबंध है हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम के जो शे'र पढ़े थे उस से हम ने देख लिया, कुछ अनुमान हो गया और हर अहमदी के हृदय में जो स्थान है वह हर अहमदी जानता है। पिछले ख़ुत्बों में मैं इसे वर्णन भी कर चुका हूं। इस सन्दर्भ में ख़ुत्बे दे चुका हूं। कष्ट को हम प्रकट कर चुके हैं और कर रहे हैं। समस्त संसार में हमारी ओर से विरोधी बयान भी प्रकाशित हुए हैं प्रेस रिलीज़ भी प्रकाशित हुई हैं और सब बयान हमने किसी को दिखाने के लिए अथवा किसी के लिए या मुसलमानों के भय या डर के कारण नहीं दिए अपितु यह हमारे ईमान का एक भाग है और आंहज़रत[स.अ.व.] से संबंध-विच्छेद करके हमारे जीवन की कोई हैसियत नहीं रहती। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ हवाले मैं पढ़ूंगा। इस से बात और अधिक स्पष्ट करता हूं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षाओं का सारांश

आप[अ.] फ़रमाते हैं :-

"हमारे धर्म का सारांश और निचोड़ यह है कि ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह। हमारी आस्था जो हम इस सांसारिक जीवन में रखते हैं जिसके साथ हम ख़ुदा की कृपा और सामर्थ्य से इस संसार से कूच करेंगे यह है कि हज़रत सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] ख़ातमुन्नबिय्यीन तथा समस्त रसूलों में श्रेष्ठ हैं, जिनके हाथ से धर्म पूर्ण हो चुका और वह ने'मत अपनी पूर्णता को पहुंच चुकी जिसके द्वारा मनुष्य सद्मार्ग धारण करके ख़ुदा तआला तक पहुंच सकता है।"

(इज़ाला औहाम - रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 3, पृष्ठ - 169, 170)

तो यह है हमारे ईमान का भाग और यह हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम ने हमें शिक्षा दी है। अतः जिस का यह ईमान हो उसके बारे में किस प्रकार कहा जा सकता है कि उसके माध्यम के बिना वह ख़ुदा तक पहुंच सकता है या नुबुव्वत मिल गई। फिर आप कहते हैं :-

"सद्मार्ग केवल इस्लाम धर्म है और अब आकाश के नीचे एक ही नबी और एक ही किताब है अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] जो सब नबियों से श्रेष्ठ, श्रेष्ठतम, सब रसूलों से पूर्णतम, ख़ातमुल अंबिया तथा समस्त लोगों से उत्तम है। जिन के अनुसरण से ख़ुदा तआला मिलता है और अंधकार के पर्दे उठते हैं तथा इसी संसार में सच्ची मुक्ति के लक्षण प्रकट होते हैं और क़ुर्आन करीम जो पूर्ण निर्देशों और प्रभावों पर आधारित है जिसके द्वारा ख़ुदाई ज्ञान एवं अध्यात्म ज्ञान प्राप्त होते हैं तथा मानव अपवित्रताओं से हृदय पवित्र होता है तथा मनुष्य मूर्खता, लापरवाही तथा सन्देहों के आवरणों से मुक्ति पाकर पूर्ण विश्वास के स्थान तक पहुंच जाता है।"

(बराहीन अहमदिया चार भाग, हाशिए का हाशिया नं. 3, रूहानी ख़ज़ायन पृष्ठ - 557, 558)

अर्थात् अब जो कुछ भी प्राप्त होना है आंहज़रत के कारण मिलना है और आप पर ही नुबुव्वत पूर्ण होती है। आप की शिक्षा से ही सारे अंधकार दूर होते हैं और प्रकाश मिलता है और अल्लाह तआला का सानिध्य भी उसी से मिलता है। वास्तविक मुक्ति भी उसी से प्राप्त होती है तथा हृदय की अपवित्रताएं उसी से साफ होती हैं जो शिक्षा आंहज़रत[स.अ.व.] लेकर आए।

फिर आप कहते हैं :-

"हमारे नबी[स.अ.व.] सच्चाई प्रकट करने के लिए एक महान मुजद्दिद थे जो लुप्त हो चुकी सच्चाई को पुनः संसार में लाए इस गर्व में हमारे

नबी[स.अ.व.] के साथ कोई भी नबी भागीदार नहीं कि आपने समस्त संसार को एक अंधकार में पाया और फिर आप के प्रादुर्भाव से वह अंधकार प्रकाश में परिवर्तित हो गया। जिस जाति में आप प्रकट हुए आप की मृत्यु न हुई जब तक कि उस सम्पूर्ण जाति ने शिर्क का चोला उतार कर एकेश्वरवाद का लिबास न पहन लिया और न केवल इतना अपितु वे लोग ईमान की उच्च श्रेणियों तक पहुंच गए और श्रद्धा, वफ़ा और विश्वास के कार्य उन के द्वारा हुए कि जिन का उदाहरण संसार के किसी भाग में नहीं पाया जाता। यह सफलता तथा इतनी सफलता आंहज़रत[स.अ.व.] के अतिरिक्त किसी नबी को प्राप्त नहीं हुई। यही एक बड़ा प्रमाण आंहज़रत[स.अ.व.] की नुबुव्वत पर है कि आप ऐसे युग में अवतरित हुए जब कि युग नितान्त अंधकार में पड़ा हुआ था और स्वाभाविक तौर पर एक महान सुधारक का अभिलाषी था। फिर आपने ऐसे समय में संसार से कूच किया जबकि लाखों लोग शिर्क और मूर्तिपूजा को त्याग कर एकेश्वरवाद और सद्मार्ग धारण कर चुके थे तथा वास्तव में यह पूर्ण सुधार आप ही से विशेष था कि आप ने एक वहशी चरित्र वाली तथा जानवरों की प्रकृति वाली जाति को मानवीय शिष्टाचार सिखाए अथवा दूसरे शब्दों में यों कहें कि जानवरों को इन्सान बनाया और फिर इन्सानों से शिक्षित इन्सान बनाया और फिर शिक्षित इन्सानों से ख़ुदा वाला इन्सान बनाया तथा आध्यात्मिकता की रूह उनमें फूंक दी और सच्चे ख़ुदा के साथ उन का संबंध पैदा कर दिया। वे ख़ुदा के मार्ग में बकरियों के समान ज़िब्ह किए गए और चींटियों के समान पैरों तले कुचले गए परन्तु ईमान को हाथ से न जाने दिया अपितु प्रत्येक संकट में आगे क़दम बढ़ाया। अतः निःसन्देह हमारे नबी[स.अ.व.] आध्यात्मिकता स्थापित करने की दृष्टि

से द्वितीय आदम थे अपितु वास्तविक आदम वही थे जिनके द्वारा और कारण से समस्त मानव श्रेष्ठताएं चरम सीमा को पहुंच गईं और समस्त शुभ शक्तियां अपने-अपने कार्य में लग गईं और मानव-प्रकृति की कोई शाखा फलीभूत हुए बिना न रही तथा आप पर ख़तमे नुबुव्वत न केवल युग के बाद में होने के कारण हुआ अपितु इस कारण भी कि नुबुव्वत की समस्त विशेषताएं समाप्त हो गईं और चूंकि आप ख़ुदा की विशेषताओं के पूर्ण द्योतक थे इसलिए आप की शरीअत प्रतापी और सौन्दर्यपूर्ण दोनों विशेषताएं रखती थी तथा आपके दो नाम मुहम्मद और अहमद[स.अ.व.] इसी उद्देश्य से हैं। आपकी सामान्य नुबुव्वतों में कंजूसी का कोई भाग नहीं अपितु वह आरंभ से समस्त संसार के लिए है।"

(लेक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 20, पृष्ठ - 206, 207)

यह है जमाअत अहमदिया की शिक्षा कि आंहज़रत[स.अ.व.] की दानशीलता आज तक स्थापित है। फिर आप कहते हैं कि :-

"आंहज़रत[स.अ.व.] ख़ातमुल अंबिया हैं अर्थात् हमारे नबी[स.अ.व.] के बाद कोई नवीन शरीअत, नई किताब न आएगी, नए आदेश न आएंगे (ये कहते हैं कि नई शरीअत ले आए और मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद को श्रेष्ठ समझते हैं) यही किताब और यही आदेश रहेंगे। जो शब्द मेरी पुस्तक में नबी या रसूल के मेरे बारे में पाए जाते हैं उसमें कदापि यह उद्देश्य नहीं है कि कोई नई शरीअत या नए आदेश सिखाए जाएं अपितु उद्देश्य यह है कि अल्लाह तआला जब किसी वास्तविक आवश्यकता के समय किसी नबी को भेजता है तो इन अर्थों से कि ख़ुदा से वार्तालाप का सम्मान उसे प्रदान करता है (अर्थात् उससे बोलता है) और परोक्ष की ख़बरें उसको देता है उस पर नबी का शब्द बोला जाता है और वह मामूर नबी की संज्ञा

पाता है। यह अर्थ नहीं कि नई शरीअत देता है या वह आंहज़रत[स.अ.व.] की शरीअत को नऊज़ुबिल्लाह निरस्त करता है अपितु यह जो कुछ उसे मिलता है वह आंहज़रत[स.अ.व.] ही के सच्चे और पूर्ण अनुसरण से मिलता है और उसके बिना मिल ही नहीं सकता।"

(अलहकम 10 जनवरी - 1904 ई. पृष्ठ - 2)

अत: जब दावा करने वाला दो टूक शब्दों में कह रहा है कि मैं सब कुछ उस से प्राप्त कर रहा हूं और उसके बिना कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता और उसके अनुयायी भी इस विश्वास पर स्थापित हैं कि यह आंहज़रत[स.अ.व.] का सच्चा दास है तो फिर झूठ और झूठ घड़ने पर आधारित बातें इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि मुसलमानों में बेचैनी पैदा की जाए और ऐसे लोग सदैव से करते चले आ रहे हैं। उपद्रव पैदा करने के अतिरिक्त यह शैतानी शक्तियों को ईर्ष्या की अग्नि उन्हें जलाती रहती है। ये जमाअत की उन्नति देख नहीं सकते। उनकी आंखों में जमाअत की उन्नति खटकती है। ये लोग चाहे जितनी घटिया गतिविधियां कर लें और पहले भी करते आए हैं और भविष्य में भी शायद करते रहेंगे। इस प्रकार के लोग पैदा होते रहेंगे। शैतान ने तो क़ायम रहना है। यह उन्नति इनकी अधम और नीच हरकतों से रुकने वाली नहीं है इन्शाअल्लाह।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दृष्टि में आंहज़रत[स.अ.व.] का महान स्थान

आंहज़रत[स.अ.व.] के स्थान के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं कि :-

"वह उच्च श्रेणी का प्रकाश जो मनुष्य को प्रदान किया गया अर्थात्

पूर्ण इन्सान को। वह फ़रिश्तों में नहीं था, सितारों में नहीं था, चन्द्रमा में नहीं था, सूर्य में भी नहीं था, वह पृथ्वी के सागरों और नदियों में भी नहीं था, वह ला'ल और याक़ूत, ज़मर्रुद, हीरे और मोती में भी नहीं था अतः वह पृथ्वी और आकाश की किसी वस्तु में नहीं था अर्थात् पूर्ण इन्सान में जिसका पूर्ण, पूर्णतम, उच्चतम सदस्य हमारे सरदार और स्वामी नबियों और जीवितों के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] हैं। अतः वह प्रकाश उस इन्सान को दिया गया और उसके पदों के अनुसार उसके समस्त समरंगों को भी अर्थात् उन लोगों को भी जो किसी सीमा तक वह रंग रखते हैं और अमानत से अभिप्राय पूर्ण इन्सान की वे समस्त शक्तियां, बुद्धि, ज्ञान, तन, मन, चेतना, भय, प्रेम, सम्मान, वैभव तथा समस्त आध्यात्मिक और भौतिक ने'मतें हैं जो ख़ुदा तआला पूर्ण इन्सान को प्रदान करता है और फिर पूर्ण इन्सान इस आयत के अनुसार - اِنَّ اللّٰہَ یَاۡمُرُکُمۡ اَنۡ تُؤَدُّو االۡاَمٰنٰتِ اِلٰۤی اَھۡلِھَا इस सारी अमानत को ख़ुदा तआला को वापस दे देता है अर्थात् उसमें लीन होकर उसके मार्ग में समर्पित कर देता है ..... यह उच्चतम पूर्णतम ज्ञान के तौर पर हमारे सरदार तथा स्वामी, हमारे पथ-प्रदर्शक अनपढ़ नबी सच्चा और सत्यापित मुहम्मद[स.अ.व.] में पाई जाती थीं।"

(आईना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 5, पृष्ठ - 160 से 162)

अतः ये लोग जो स्वयं को आंहज़रत[स.अ.व.] का प्रेमी समझते हैं और हम पर आरोप लगाते हैं कि हम नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को उन से श्रेष्ठ समझते हैं। यह बताएं उन के तो उद्देश्य ही केवल ये हैं कि व्यक्तिगत हित प्राप्त किए जाएं इनके अतिरिक्त कुछ भी नहीं। यह अपने उलेमा में से किसी एक के मुख से भी उस शान क्या,

उस शान के लाखवें भाग के बराबर भी कोई शब्द अदा किए हुए दिखा सकें जो आंहज़रत[स.अ.व.] के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं। यह उस सच्चे प्रेमी के शब्द हैं आंहज़रत[स.अ.व.] की मुबारक हस्ती के बारे में जिसे तुम झूठा कहते हो। उस व्यक्ति की तो हर गति और हर स्थिरता अपने स्वामी और अनुकरणीय हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] के अनुसरण में थी। यह गहराई, यह बोध, यह समझ आंहज़रत[स.अ.व.] की हस्ती का कभी, कहीं अपने लिट्रेचर में तो दिखाओ। जिस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने प्रस्तुत किया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं और जमाअत की हमेशा यही शिक्षा है और उसी पर चलते हैं कि हम कानून के अधीन रहते हुए सहन कर लेते हैं।

आप[अ.] ने कहा कि :-

"हमारे धर्म का सारांश यही है परन्तु जो लोग अकारण ख़ुदा से निर्भय होकर हमारे बुज़ुर्ग नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] को बुरे शब्दों से याद करते और आप[स.] पर अपवित्र आरोप लगाते और गालियाँ देने से नहीं रुकते उनसे हम क्योंकर संधि कर लें। मैं सच-सच कहता हूं कि हम कल्लर पृथ्वी के सांपों और जंगली भेड़ियों से सुलह कर सकते हैं परन्तु हम उन लोगों से सुलह नहीं कर सकते जो हमारे प्यारे नबी पर जो हमें अपने प्राण और मां-बाप से भी अधिक प्यारा है गन्दे आक्रमण करते हैं। ख़ुदा हमें इस्लाम पर मृत्यु दे। हम ऐसा कार्य करना नहीं चाहते जिसमें ईमान जाता रहे।"

(पैग़ामे सुलह, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-23, पृष्ठ-459)

अतः यह है हमारी शिक्षा। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

की दी हुई शिक्षा है और यह है हमारे हृदयों में आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम की भड़काई हुई अग्नि और उस का सही बोध और समझ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें दी तत्पश्चात् भी यह कहना कि नऊज़ुबिल्लाह व्यंग्य चित्र बनाने के सिलसिले में अख़बार और डेनमार्क की सरकार को अहमदियों ने Encourage किया था। इसके पश्चात् उन्होंने व्यंग्य चित्र प्रकाशित किए। अतः उन लोगों पर अल्लाह तआला की ला'नत के अतिरिक्त और कुछ नहीं डाला जा सकता।

तलवार द्वारा जिहाद की समस्या की वास्तविकता

अब दूसरी बात यह है कि जिहाद को निरस्त कर दिया है। उसने पहले बात यह लिखी है परन्तु महत्त्वपूर्ण बात वह थी कि हम आंहज़रत[स.अ.व.] को नऊज़ुबिल्लाह नबी नहीं मानते या उनकी शिक्षा अब निरस्त हो गई है। दूसरी बात उसने जिहाद के निरस्त होने की लिखी है। इस बारे में मुसलमानों के अपने नेता पिछले दिनों में जब उन पर पड़ी है और जिन शक्तियों के यह पोषित हैं तथा जिन से लेकर खाते हैं उन्होंने जब इनको दबाया तो उन्हीं के कहने पर ये बयान दे चुके हैं कि यह जो आजकल जिहाद की परिभाषा की जाती है और यह कि कुछ मुस्लिम संगठन प्रतिदिन कार्यवाहियां करते रहते हैं यह जिहाद नहीं है और इस्लाम की शिक्षा के सर्वथा विरुद्ध है। अख़बारों में उन लोगों के बयान प्रकाशित हो चुके हैं। जमाअत अहमदिया का तो प्रथम दिवस से ही यह दृष्टिकोण है और यह शिक्षा है कि प्रत्येक युग में इन परिस्थितियों में जिहाद बन्द है और यह बिल्कुल इस्लामी शिक्षा के अनुसार है।

इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं :-

"हमारे नबीस.अ.व. और आप के महान सहाबारज़ि की लड़ाइयां या तो इसलिए थीं कि स्वयं को काफ़िरों के आक्रमण से बचाया जाए और या इसलिए थीं कि शान्ति स्थापित की जाए और जो लोग तलवार से धर्म को रोकना चाहते हैं उनको तलवार से पीछे हटाया जाए। परन्तु अब कौन विरोधियों में से धर्म के लिए तलवार उठाता है और मुसलमान होने वाले को कौन रोकता है और मस्जिदों में नमाज़ पढ़ने और अज़ान देने से कौन मना करता है।"

(तिरयाक़ुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-15, पृष्ठ 159-160)

अर्थात् अज़ान देने से कौन मना करता है। केवल पाकिस्तान में अहमदियों को ही मना किया जा रहा है परन्तु इसके बावजूद हम ख़ामोश हैं हमने तो कोई शोर नहीं मचाया। बिना अज़ान के नमाज़ पढ़ लेते हैं।

फिर आपअ. कहते हैं :-

"सही बुख़ारी (किताबुल अंबिया बाब नुज़ूल ईसा इब्ने मरयम) में मसीह मौऊद की शान में स्पष्ट हदीस मौजूद है कि يَضَعُ الْحَرْب अर्थात मसीह मौऊद लड़ाई नहीं करेगा। अत: कितने आश्चर्य की बात है कि एक ओर तो आप अपने मुंह से कहते हैं कि सही बुख़ारी क़ुर्आन करीम के बाद सब से अधिक सही किताब है और दूसरी ओर सही बुख़ारी की तुलना में ऐसी हदीसों पर आस्था कर बैठते हैं जो सही बुख़ारी की हदीसों के विपरीत हैं।"

(तिरयाक़ुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 15, पृष्ठ - 159)

अत: यह जमाअत अहमदिया की आस्था है और क़ुर्आन तथा हदीस के अनुसार है और हम डंके की चोट पर स्पष्ट तौर पर यह घोषणा करते हैं और कहते रहे हैं कि अब ये लोग जो जिहाद-जिहाद करते फिर रहे

हैं जिसकी आड़ में आतंकवाद के अतिरिक्त कुछ नहीं होता। यह जिहाद नहीं है और सरासर इस्लामी शिक्षाओं के विपरीत है।

अभी कल ही कराची में जो मानव-बम का आक्रमण हुआ है, यही लोग हैं जो इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं फिर ऐसे आक्रमण में अपने देश के निर्दोष लोगों के भी ये लोग प्राण ले लेते हैं। अनुचित गतिविधियों द्वारा ये लोग इस्लाम और आंहज़रत[स.अ.व.] की शिक्षा के इन्कारी तो स्वयं हो रहे हैं। अहमदी तो आज आंहज़रत[स.अ.व.] के सन्देश को इस प्रकार संसार के कोने-कोने में पहुंचा रहा हो तुम्हारी इन आतंकवादी गतिविधियों तथा इस्लाम को बदनाम करने वाले जिहादी प्रयत्नों में अहमदी न कभी पहले सम्मिलित हुए हैं और न भविष्य में होंगे। बहरहाल यह जमाअत अहमदिया को बदनाम करने के निन्दनीय प्रयत्न हैं जो होते रहे हैं।

जमाअत के विरुद्ध झूठी ख़बर तथा घृणित षडयंत्र पूर्ण छान-बीन कराई जाएगी ताकि मूल उद्देश्य सामने आ सके।

अत: मैं उस अख़बार को भी कहता हूं, उनको यह स्मरण रखना चाहिए कि यह वह देश नहीं है जहां कानून का शासन न हो। पाकिस्तान की तरह कि यदि मुल्ला चाहेगा कि कानून कार्यान्वित हो तो हो जाएगा और न्याय नहीं होगा। बहरहाल किसी न किसी सीमा तक इन लोगों में इन्साफ़ है। हम सारा विवरण एकत्र कर रहे हैं, रिपोर्ट मंगवा रहे है। यह ख़बर देकर उन अफ़सर के हवाले से कि डेनमार्क के अफसर ने कहा है कि अहमदियों के विश्वस्त करने पर कि नऊज़ुबिल्लाह आंहज़रत[स.अ.व.] की शिक्षा निरस्त हो गई है हम ने ये कार्टून प्रकाशित किए थे। जैसे

डेनमार्क की सरकार पर भी इससे आरोप सिद्ध हो रहा है कि वहां की सरकार भी इस कार्य में लिप्त है। जब वहां के प्रधानमंत्री शोर मचा रहे हैं, कई बार बयान दे चुके हैं कि यह अख़बार का काम है हम इसे पसन्द नहीं करते हैं परन्तु पत्रकारिता की स्वतंत्रता के कारण कुछ कह नहीं सकते। पत्रकारिता की स्वतंत्रता क्या वस्तु है क्या नहीं, वह एक पृथक मामला है परन्तु बहरहाल वे इस बात से इन्कारी हैं और यह अख़बार कह रहा है कि नहीं सरकार इसमें सम्मिलित है। अतः इस ख़बर के विरुद्ध तो डेनमार्क की सरकार भी कार्यवाही का अधिकार रखती है। आजकल जब कि मुस्लिम विश्वास में डेनमार्क के विरुद्ध आग भड़की हुई है उस अख़बार ने एक मनघड़न्त ख़बर प्रकाशित करके उनके हवाले से प्रकाशित की है यह तो उस बात पर अतिरिक्त तेल डालने वाली बात है, हवा देने वाली बात है। हमने उनसे जो सम्पर्क किए हैं डेनमार्क की उच्च सुरक्षा एजेन्सी के अफसर ने तो स्पष्ट शब्दों में कह दिया है, खण्डन किया है कि इस प्रकार बिल्कुल नहीं हुआ और न कोई हमारे पास ऐसी सूचना है। वे कहते हैं हम और छान-बीन करेंगे इस से और भी बातें स्पष्ट हो जाएंगी। उन्होंने पहले अख़बार में यह ख़बर दी कि इस की वीडियो टेप हमारे पास है परन्तु हम ने अपने जो सम्पर्क किए तो अब यह कहते हैं कि वीडियो टेप नहीं आडियो टेप हैं। अतः जैसा कि मैंने कहा कि झूठ के कोई पैर नहीं होते। ये अपने बयान परिवर्तित करते रहेंगे और यही पाकिस्तानी पत्रकारिता का यह उस पत्रकारिता का हाल है जिस पर पाकिस्तानी प्रभाव है।

परन्तु मैं बता दूं कि बात अब यहां इस प्रकार समाप्त नहीं होगी। हम पर जो इतना घिनौना आरोप लगाया है और इन परिस्थितियों में

अहमदियों के विरुद्ध जो षडयन्त्र किया गया है हम उसे जहां तक यहां का कानून अनुमति देता है इन्शाअल्लाह अन्तिम परिणाम तक लेकर जाएंगे ताकि मुसलमानों को, कम से कम उन मुसलमानों को जो सभ्य स्वभाव के लोग हैं इन नाम के शिक्षित लोगों के नैतिक स्तर का पता लग सके। हम पर तो हमेशा जैसा कि मैंने पहले भी कहा घिनौने आरोप लगाए जाते रहे हैं परन्तु हम हमेशा धैर्य के साथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उस उपदेश, उस शिक्षा को सामने रखते रहे हैं।

आप कहते हैं कि :

"मैं भली भांति जानता हूं कि हमारी जमाअत और हम तो कुछ हैं इस स्थिति में अल्लाह तआला के समर्थन और उसकी सहायता हमारे साथ होगी कि हम सद्मार्ग पर चलें और आंहज़रत[स.अ.व.] का पूर्ण और सच्चा अनुसरण करें। क़ुर्आन करीम की पवित्र शिक्षा को अपनी नियमावली बनाएं तथा इन बातों को हम अपने अमल और स्थिति से सिद्ध करें न केवल कथन से। यदि हम इस पद्धति को अपनाएंगे तो निश्चय ही स्मरण रखो कि समस्त संसार भी मिलकर हमें तबाह करना चाहे तो हम तबाह नहीं हो सकते। इसलिए कि ख़ुदा हमारे साथ होगा।" (इन्शाअल्लाह)

(अलहकम 24 सितम्बर 1904 ई. पृष्ठ - 4)

अल्लाह हमें हमेशा इस नसीहत के अनुसार अमल करने की शक्ति देता रहे और अल्लाह तआला हमेशा हमारे साथ रहे और उन दुष्ट स्वभाव रखने वालों को नसीहत का निशान बनाए।

- आजकल के जिहादी संगठनों ने बिना वैध कारणों तथा वैध अधिकारों के अपने युद्ध करने वाले नारों एवं अमल से अन्य धर्मावलम्बिलयों को यह अवसर प्रदान किया है कि उन्होंने अत्यन्त हठधर्मी और निर्लज्जता से आंहज़रत[स.अ.व.] की पवित्र हस्ती पर अश्लील आक्रमण किए हैं।
- आंहज़रत[स.अ.व.] साक्षात दया थे और आपके सीने में वह हृदय धड़क रहा था जिस से बढ़कर कोई हृदय दया के वे उच्च मापदण्ड और मांगें पूर्ण नहीं कर सकता जो आपने किए।
- आंहज़रत[स.अ.व.] का पवित्र जीवन चरित्र अभिव्यक्ति और धार्मिक स्वतंत्रता तथा धार्मिक सहनशीलता की नितान्त सुन्दर घटनाओं की मनमोहक चर्चा

ख़ुत्बः जुमा दिनांक 10 मार्च, 2006 ई.

स्थान - मस्जिद बैतुल फ़ुतूह - लन्दन यू. के.

ख़ुत्बः जुमा

दिनांक 10 मार्च, 2006 ई.

स्थान - मस्जिद बैतुल फ़ुतूह - लन्दन यू. के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لا شَرِیکَ لَہٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَ رَسُوْلُہٗ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ-بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ـ اَلْحَمْدُلِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ۔مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْنِ۔ اِیَّا کَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ۔ اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ غَیْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَاالضَّآلِّیْنَ ـ

मुसलमानों के कुछ मुसलमान वर्गों के इस्लाम के विपरीत अमल ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम पर आक्रमण करने में सहायक बनते हैं।

आंहज़रत[स.अ.व.] की हस्ती पर ग़ैर मुस्लिमों की ओर से जो यह आपत्ति की जाती है कि आप नऊज़ुबिल्लाह ऐसा धर्म लेकर आए जिसमें कठोरता, लूट-मार के अतिरिक्त कुछ और है ही नहीं और इस्लाम में धार्मिक सहनशीलता, भाईचारा और स्वतंत्रता की कल्पना ही नहीं है तथा इसी शिक्षा के प्रभाव आज तक मुसलमानों के स्वभाव का अंग बन चुके हैं। इस बारे में कई बार मैं पहले भी कह चुका हूं कि दुर्भाग्य से मुसलमानों में से ही कुछ वर्ग और गिरोह इस कल्पना को जन्म देने तथा

स्थापित करने में सहायक होते हैं और दुर्भाग्य से उनके इसी दृष्टिकोण और अमल ने ग़ैर इस्लामी संसार में और विशेष तौर पर पश्चिम में हमारे प्रिय स्वामी हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के बारे में निरर्थक और अश्लील तथा अत्यन्त अनुचित और अपवित्र विचारों को प्रकट करने का अवसर पैदा किया है, जबकि हम जानते हैं कि कुछ वर्गों और गिरोहों के अमल पूर्णतया इस्लामी शिक्षा और नैतिक व्यवस्था के विपरीत हैं। इस्लाम की शिक्षा तो एक ऐसी सुन्दर शिक्षा है जिसकी सुन्दरता और सौन्दर्य से प्रत्येक द्वेष से पवित्र व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

ग़ैर मुस्लिमों के साथ सद्व्यवहार के संबंध में इस्लाम की सुन्दर शिक्षा

क़ुर्आन करीम में अनेकों स्थान पर इस्लाम की इस सुन्दर शिक्षा का वर्णन मिलता है जिसमें ग़ैर मुस्लिमों से सद्व्यवहार, उनके अधिकारों का ध्यान रखना, उनसे न्याय करना, उनके धर्म पर किसी प्रकार की ज़बरदस्ती न करना, धर्म के बारे में कोई कठोरता न करना इत्यादि बहुत से आदेश अपनों के अतिरिक्त ग़ैर मुस्लिमों के लिए हैं। हां कुछ परिस्थितियों में युद्धों की भी अनुमति है परन्तु वह इस स्थिति में जब शत्रु पहल करे, समझौतों को भंग करे, न्याय का ख़ून करे, अत्याचार को चरम सीमा तक पहुंचा दे परन्तु उसमें भी किसी देश के किसी गिरोह या जमाअत का अधिकार नहीं है अपितु यह सरकार का कार्य है कि निर्णय करे कि क्या करना है, किस प्रकार उस अत्याचार को समाप्त करना है न कि प्रत्येक जिहादी संगठन उठे और यह कार्य करना आरंभ कर दे।

मक्का के काफ़िर तथा इस्लाम के शत्रुओं के आतंक और अत्याचार की तुलना में हज़रत मुहम्मद^{स.अ.व.} का महान एवं उत्तम आदर्श

आंहज़रत स.अ.व. के युग में भी युद्धों की विशेष परिस्थितियां पैदा की गई थीं जिन से विवश होकर मुसलमानों को प्रतिरक्षा में युद्ध करने पड़े, परन्तु जैसा कि मैंने कहा है कि आजकल के जिहादी संगठनों ने बिना वैध कारणों के एवं वैध अधिकारों के अपने युद्ध के नारों और अमल से अन्य धर्मावलम्बियों को यह अवसर दिया है और उनमें इतना साहस पैदा हो गया है कि उन्होंने नितान्त हठधर्मी और निर्लज्जता से आंहज़रत स.अ.व. की पवित्र हस्ती पर अश्लील आक्रमण किए हैं और करते रहे हैं जबकि उस सर से पैर तक साक्षात दया तथा मानवता के उपकारी और मानवाधिकारों के महान रक्षक की तो यह दशा थी कि आप स. युद्ध की अवस्था में भी हाथ से कोई ऐसा अवसर न जाने देते थे जो शत्रु को आसानी उपलब्ध न करता हो। आपके जीवन का प्रत्येक कार्य, प्रत्येक अमल, आपके जीवन का पल-पल और क्षण-क्षण इस बात का साक्षी है आप साक्षात दया थे और आपके सीने में वह हृदय धड़क रहा था कि जिस से बढ़कर कोई हृदय दया के वे उच्च मापदण्ड और मांगें पूर्ण नहीं कर सकता जो आप ने किए। अमन में भी और युद्ध में भी, घर में भी और बाहर भी दैनिक दिनचर्या में भी तथा अन्य धर्मावलम्बियों से किए गए समझौतों में भी। आप ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म और सहिष्णुता के मापदण्ड बनाने के उदाहरण स्थापित कर दिए फिर जब महान विजेता की हैसियत से मक्का में प्रवेश किया तो जहां पराजित जाति से क्षमा और दया का व्यवहार किया वहां धार्मिक स्वतंत्रता का भी पूरा हक़ अदा किया और

क़ुर्आन करीम के इस आदेश का उच्च उदाहरण स्थापित कर दिया कि لا اکراہ فی الدین (सूरह बक़रह - 257) कि तुम्हारे हृदय का मामला है मेरी इच्छा तो है कि तुम सच्चे धर्म को स्वीकार कर लो तथा अपना यह लोक और परलोक सुधार लो, अपनी क्षमा के साधन कर लो परन्तु कोई ज़बरदस्ती नहीं। आपका जीवन भाई चारा, अभिव्यक्ति और धर्म की स्वतंत्रता ऐसे असंख्य प्रकाशमान उदाहरणों से परिपूर्ण है उनमें से कुछ का मैं वर्णन करता हूं।

कौन नहीं जानता कि मक्का में आप के नबी होने के दावे के बाद का तेरह वर्षीय जीवन कितना कठोर था और कष्टों से भरा हुआ था। आप और आप के सहाबा[रज़ि.] ने कितने कष्ट और संकट सहन किए, दोपहर के समय तपती रेत पर लिटाए गए, उनके सीनों पर पत्थर रखे गए, कोड़ों से मारे गए, स्त्रियों को टांगे चीर कर मारा गया, आप पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अत्याचार किए गए, सज्दे की अवस्था में कई बार ऊंट की आंतें लाकर आप की कमर पर रख दी गईं, जिसके भार से आप उठ नहीं सकते थे, तायफ़ की यात्रा में बच्चे आप पर पथराव करते रहे, व्यर्थ और अश्लील भाषा का प्रयोग करते रहे, उनके सरदार उनको उकसाते और उत्तेजित करते रहे। आप इतने घायल हो गए कि सर से पैर तक रक्तरंजित हैं, ऊपर से बहता हुआ रक्त जूतों में भी आ गया। शअब अबी-तालिब की घटना है आप को, आपके ख़ानदान को, आप के अनुयायियों को कई वर्षों तक घेराबन्द कर दिया गया। खाने को कुछ नहीं था, पीने को कुछ नहीं था, बच्चे भी भूख-प्यास से बिलख रहे थे किसी सहाबी को इन परिस्थितियों में अन्धेरे में पृथ्वी पर पड़ी हुई कोई नर्म वस्तु पैरों में महसूस हूई तो उसी को उठा कर मुंह में डाल लिया

कि कदाचित कोई खाने की वस्तु हो। यह दशा थी भूख से व्याकुल होने का दृश्य। अतः यह परिस्थितियां थीं। अन्ततः जब इन परिस्थितियों से विवश होकर हिजरत (प्रवास) करना पड़ी और हिजरत करके मदीना में आए तो वहां भी शत्रु ने पीछा नहीं छोड़ा और आक्रमणकारी हुए। मदीना निवासी यहूदियों को आप[स.] के विरुद्ध भड़काने का प्रयत्न किया। इन परिस्थितियों में जिन का मैंने संक्षिप्त वर्णन किया है यदि युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो और पीड़ित को भी उत्तर देने का अवसर मिले तो वह यही प्रयास करता है कि इस अत्याचार का बदला भी अत्याचार से लिया जाए। कहते हैं कि युद्ध में सब कुछ वैध होता है परन्तु हमारे नबी[स.अ.व.] ने इस स्थिति में भी नर्मी और दया के उच्च मापदण्ड स्थापित किए। मक्का से आए हुए अभी कुछ समय ही गुज़रा था समस्त कष्टों के घाव अभी ताज़ा थे, आप को अपने अनुयायियों के कष्टों का अहसास अपने कष्टों से भी अधिक हुआ करता था, परन्तु फिर भी इस्लामी शिक्षा और नियमावली को आप ने नहीं तोड़ा जो नैतिक मापदण्ड आपके स्वभाव का भाग थे और जो शिक्षा का भाग थे उनको नहीं तोड़ा। आज देख लें कुछ पश्चिमी देश जिन से युद्ध हो रहा है उन से क्या कुछ नहीं करते परन्तु इसकी तुलना में आप का आदर्श देखें जिस का इतिहास में एक रिवायत में यों वर्णन है।

बदर के युद्ध के समय जिस स्थान पर इस्लामी सेना ने पड़ाव डाला था वह कोई ऐसा अच्छा स्थान न था इस पर हुबाब बिन मुन्ज़िर ने आप[स.] से पूछा कि जहां आपने पड़ाव डालने के स्थान का चयन किया है क्या यह ख़ुदा के आदेश के अन्तर्गत है। आप[स.] को अल्लाह तआला ने बताया है या यह स्थान आप ने स्वयं पसन्द किया है ? आप का विचार है कि

सैनिक रणनीति के तौर पर यह स्थान अच्छा है ? तो आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा कि यह तो मात्र युद्ध-नीति के कारण मेरा विचार था कि स्थान अच्छा है ऊंचा है तो उन्होंने कहा कि यह उचित स्थान नहीं है। आप[स.] लोगों को लेकर चलें और पानी के झरने पर अधिकार कर लें। वहां एक हौज़ बना लेंगे और फिर युद्ध करेंगे। इस स्थिति में हम तो पानी पी सकेंगे परन्तु शत्रु को पानी पीने के लिए नहीं मिलेगा तो आप[स.] ने कहा ठीक है चलो तुम्हारी राय मान लेते हैं अतः सहाबा चल पड़े और वहां पड़ाव डाला। थोड़ी देर के बाद क़ुरैश के कुछ लोग पानी पीने उस हौज़ पर आए तो सहाबा ने रोकने का प्रयत्न किया तो आप[स.] ने कहा नहीं। इनको पानी ले लेने दो।

(अस्सीरतुन्नबिय्यह लि इब्ने हिशाम जिल्द - 2, पृष्ठ - 284 गज़वह बदरुल कुबरा, मशवरतुल हुबाब अर्रुसूल[स.अ.व.])

इस्लाम तलवार के बल पर नहीं अपितु उत्तम शिष्टाचार तथा इस्लाम में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं धार्मिक शिक्षा से फैला है

यह है आंहज़रत[स.अ.व.] के शिष्टाचार का मापदण्ड कि बावजूद इसके कि शत्रु ने कुछ समय पूर्व मुसलमानों के बच्चों तक का खाना-पीना बन्द किया हुआ था परन्तु आप ने उन घटनाओं से दृष्टि हटाते हुए शत्रु की सेना के सैनिकों को जो पानी के झरने तक पानी लेने के लिए आए थे और जिस पर आप का अधिकार था उन्हें पानी लेने से न रोका क्योंकि नैतिक नियमों से गिरी हुई बात थी। इस्लाम पर सब से बड़ा आरोप यही किया जाता है कि यह तलवार के बल पर फैलाया गया। ये लोग पानी लेने आए थे उन से ज़बरदस्ती भी की जा सकती थी कि पानी लेना है

तो हमारी शर्तें मान लेना। काफ़िर कई युद्धों में इस प्रकार करते रहे हैं परन्तु नहीं, आप ने इस प्रकार नहीं कहा यहां कहा जा सकता है कि अभी मुसलमानों में पूर्ण शक्ति नहीं थी कमज़ोरी थी इसलिए शायद युद्ध से बचने के लिए यह उपकार का प्रयत्न किया है जबकि यह ग़लत बात है। मुसलमानों के बच्चे-बच्चे को यह मालूम था कि मक्का के काफ़िर मुसलमानों के रक्त के प्यासे हैं और मुसलमानों की शक्ल देखते ही उनकी आंखों में रक्त उतर आता है। इसलिए यह सुधारणा किसी को नहीं थी तथा आंहज़रत[स.अ.व.] को तो इस प्रकार सुधारणा का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। आप ने तो यह सब कुछ वह हमदर्दी का व्यवहार, साक्षात दया होने तथा मानव मूल्यों का ध्यान रखने के कारण किया था क्योंकि आप ने ही इन मूल्यों की पहचान की शिक्षा देनी थी।

फिर उस इस्लाम के शत्रु की घटना देखें जिसके वध का आदेश जारी हो चुका था परन्तु आपने न केवल उसे क्षमा किया अपितु मुसलमानों में रहते हुए उसे अपने धर्म पर क़ायम रहने की अनुमति प्रदान की। अत: इस घटना का वर्णन यों मिलता है कि :

अबू जहल का बेटा इकरमा अपने पिता के समान जीवन-पर्यन्त रसूलुल्लाह[स.अ.व.] से युद्ध करता रहा। मक्का विजय के अवसर पर भी आप[स.] की क्षमा और अमन की घोषणा के बावजूद एक टुकड़ी पर आक्रमणकारी हुआ और हरम में रक्तपात का कारण बना। अपने युद्ध अपराधों के कारण ही वह वध योग्य समझा गया था परन्तु मुसलमानों के सामने उस समय कोई नहीं ठहर सका था। इसलिए मक्का विजय के पश्चात् प्राण बचाने के लिए वह यमन की ओर भाग गया उसकी पत्नी आप[स.] से उसकी क्षमायाचक हुई तो आपने बड़ी हमदर्दी के साथ

उसे क्षमा कर दिया और जब वह अपने पति को लेने के लिए स्वयं गई तो इकरमा को उस क्षमा पर विश्वास नहीं आता था कि मैंने इतने अधिक अत्याचार किए हैं इतने मुसलमानों का वध किया अन्तिम दिन तक मैं युद्ध करता रहा तो मुझे किस प्रकार क्षमा किया जा सकता है। बहरहाल वह किसी प्रकार विश्वास दिला कर अपने पति इकरमा को वापस ले आई तो आंहज़रत[स.अ.व.] के दरबार में उपस्थित हुए और इस बात की पुष्टि चाही तो उसके आने पर आप[स.] ने उस से उपकार का आश्चर्यजनक उपकार का व्यवहार किया। प्रथम तो आप शत्रु जाति के सरदार के सम्मान के लिए खड़े हो गए और फिर इकरमा के पूछने पर कहा कि मैंने वास्तव में तुम्हें क्षमा कर दिया है।

(मुअत्ता इमाम मालिक किताबुन्निकाह, निकाहुल मुश्रिक इज़ा असलमत ज़ौजतोहू क़ब्लहू)

इकरमा ने पुनः पूछा - अपने धर्म पर रहते हुए ? अर्थात् मैं मुसलमान नहीं हुआ। इस शिर्क की दशा में मुझे आपने क्षमा किया है, आपने मुझे क्षमा कर दिया है। तो आपने कहा हां। इस पर इकरमा का सीना इस्लाम के लिए खुल गया और सहसा कह उठा कि हे मुहम्मद ! आप वास्तव में अत्यन्त शालीन, कृपालु तथा रिश्तेदारों के साथ दया करने वाले हैं। आप[स.] के अच्छे शिष्टाचार और उपकार का यह चमत्कार देख कर इकरमा मुसलमान हो गया।

(अस्सीरतुल हलबिय्यह जिल्द - 3, पृष्ठ - 109 बैरूत से प्रकाशित ज़िक्र मग़ाज़ियह[स.अ.व.] फ़तह मक्का शरफल्लाहो तआला)

अतः इस्लाम इस प्रकार उत्तम शिष्टाचार तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा धर्म को प्रकट करने की अनुमति से फैला है। अच्छे शिष्टाचार और धर्म की स्वतंत्रता का यह तीर एक पल में इकरमा जैसे

व्यक्ति को घायल कर गया। आंहज़रत[स.अ.व.] ने कैदियों और दासों तक को यह अनुमति दी थी कि जो धर्म चाहो अपनाओ परन्तु इस्लाम का प्रचार इसलिए है कि अल्लाह तआला ने आदेश दिया है कि इस्लाम की शिक्षा के बारे में बताओ क्योंकि लोगों को मालूम नहीं है। यह इच्छा इसलिए है कि यह तुम्हें अल्लाह का सानिध्य प्रदान करेगी और तुम्हारी हमदर्दी के लिए ही हम तुम से यह कहते हैं।

अतः एक क़ैदी की एक घटना इस प्रकार वर्णन हुई है :

सईद बिन अबी सईद वर्णन करते हैं कि उन्होंने हज़रत अबू हुरैरा[रज़ि.] को यह कहते हुए सुना कि रसूले करीम[स.अ.व.] ने नजद की ओर एक टुकड़ी भेजी तो बनू हनीफ़ा के एक व्यक्ति को क़ैदी बना कर लाए जिस का नाम सुमामा बिन असाल था। सहाबा ने उसे मस्जिदे नबवी के खम्भे के साथ बांध दिया रसूले करीम[स.अ.व.] उसके पास आए और कहा कि हे सुमामा ! तेरे पास क्या बहाना है या तेरा क्या विचार है कि तुझ से क्या मामला होगा। उसने कहा कि मेरा अनुमान अच्छा है। यदि आप मेरा वध कर दें तो आप एक खून बहाने वाले व्यक्ति का वध करेंगे और यदि आप इनाम करें तो आप एक ऐसे व्यक्ति पर इनाम करेंगे जो कि उपकार को बहुत महत्त्व देने वाला है। आप[स.] ने उसी वहीं छोड़ा। फिर तीसरा दिन उदय हुआ फिर आप उसके पास गए आप[स.] ने फ़रमाया - हे सुमामा ! तेरा क्या इरादा है ? उसने कहा जो कुछ मैंने कहना था वह कह चुका हूं। आप[स.] ने फ़रमाया - इसे आज़ाद कर दो। अतः सुमामा को आज़ाद कर दिया गया। इस पर वह मस्जिद के निकट खजूरों के बाग़ में गया और स्नान किया और मस्जिद में प्रवेश करके शहादत का कलिमा पढ़ा और कहा हे मुहम्मद([स.अ.व.]) ख़ुदा की क़सम मुझे संसार में सबसे अप्रिय आप

का चेहरा हुआ करता था और अब यह स्थिति है कि मेरा सर्वप्रिय धर्म आपका लाया हुआ धर्म है। ख़ुदा की क़सम मुझे सब से अधिक अप्रिय आप का शहर था, अब यही शहर मेरा अत्यन्त प्रिय शहर है। आप के घुड़सवारों ने मुझे पकड़ लिया जबकि मैं उमरा करना चाहता था। आप[स.] इसके बारे में क्या उपदेश देते हैं। तो रसूले करीम[स.अ.व.] ने उसे खुशख़बरी दी, इस्लाम स्वीकार करने की मुबारकबाद दी और उसे आदेश दिया कि उमरा करो अल्लाह स्वीकार करेगा। जब वह मक्का पहुंचा तो किसी ने कहा कि क्या तू नक्षत्रपूजक हो गया है ? तो उसने उत्तर दिया कि नहीं अपितु मैं रसूल[स.अ.व.] पर ईमान ले आया हूं और ख़ुदा की क़सम अब भविष्य में यमामा की ओर से गेहूं का एक दाना भी तुम्हारे पास नहीं आएगा यहां तक कि नबी[स.अ.व.] इसकी अनुमति प्रदान कर दें।

(बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब वफ़द बनी हनीफ़ा व हदीस सुमामा बिन असाल)

एक अन्य रिवायत में है कि इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात् वह उमरा करने गए तो मक्का के काफ़िरों ने उनके इस्लाम का मालूम होने पर उन्हें मारने का प्रयत्न किया या मारा। इस पर उन्होंने कहा कि कोई दाना नहीं आएगा और यह उस समय तक नहीं आएगा जब तक नबी करीम[स.अ.व.] की ओर से अनुमति न आ जाए। अतः उसने जाकर अपनी जाति से कहा और वहां से अनाज आना बन्द हो गया। बहुत बुरी दशा हो गई। अतः अबू सुफ़यान आंहज़रत[स.अ.व.] की सेवा में प्रार्थना पत्र लेकर पहुंचे कि इस प्रकार भूखे मर रहे हैं अपनी जाति पर कुछ दया करें। तो आप ने यह नहीं कहा कि अनाज उस समय मिलेगा जब तुम मुसलमान हो जाओ अपितु तुरन्त सुमामा को सन्देश भिजवाया कि यह प्रतिबन्ध समाप्त करो, यह अन्याय है। बच्चों, बड़ों, रोगियों, बूढ़ों को भोजन की

आवश्यकता होती है उनको उपलब्ध होना चाहिए।

(अस्सीरतु न्नबविय्यह लिब्ने हिशाम असर सुमामा बिन असाल अलहनफ़ी व इस्लामोहू, खुरूजोहू इला मक्का व क़िस्सतोहू माअ कुरैश)

दूसरे यह देखें कि क़ैदी सुमामा से यह नहीं कहा कि अब तुम हमारे अधिकार में हो तो मुसलमान हो जाओ। तीन दिन तक उनके साथ सद्व्यवहार होता रहा और फिर सद्व्यवहार के भी उच्च मापदण्ड स्थापित हुए आज़ाद कर दिया। फिर देखें सुमामा भी विवेक रखते थे उस आज़ादी को प्राप्त करते ही उन्होंने स्वयं को आप[स.] की दासता में जकड़े जाने के लिए प्रस्तुत कर दिया कि इसी दासता में मेरे धर्म और संसार का कल्याण है।

फिर एक यहूदी दास को विवश नहीं किया कि तुम दास हो मेरे अधिकार में हो, इसलिए जो मैं कहता हूं वह करो यहां तक कि उसकी रोग की स्थिति ऐसी हुई जब देखा कि उसकी हालत ख़तरे में है तो उसके शुभ अन्त की चिन्ता हुई। यह चिन्ता थी कि वह ऐसी अवस्था में संसार से कूच न करे जबकि ख़ुदा की अन्तिम शरीअत का सत्यापन न कर रहा हो। अपितु ऐसी अवस्था में जाए जब पुष्टि कर रहा हो ताकि अल्लाह तआला की क्षमा के सामान हों। तब आप उसके रोग का हाल पूछने गए और उसे बड़े प्रेम से कहा कि इस्लाम स्वीकार कर ले।

अत: हज़रत अनस[रज़ि.] से रिवायत है कि आप[स.] का एक सेवक यहूदी लड़का था जो बीमार हो गया। आप उसका हाल पूछने गए। उसके सरहाने बैठ गए और कहा - तू इस्लाम स्वीकार कर ले। एक अन्य रिवायत में है कि उसने अपने बड़ों की ओर देखा परन्तु बहरहाल उसने अनुमति मिलने पर या स्वयं ही विचार आने पर इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(सही बुख़ारी किताबुल जनायज़ बाब इजा असलमस्सबिय्यो फ़माता ..... हदीस नं. 1356)

अतः उसने जो इस्लाम स्वीकार किया यह निश्चय ही प्रेम व्यवहार और आज़ादी का प्रभाव था जो उस लड़के पर आप की दासता के कारण था कि यह निश्चय ही सच्चा धर्म है। इसलिए उसे स्वीकार करने में ही सुरक्षा है क्योंकि हो नहीं सकता कि यह साक्षात हमदर्दी और दया मेरी बुराई का सोचे। आप[स.] निश्चय ही सत्य पर हैं और हमेशा दूसरे को अच्छी बात की ओर ही बुलाते हैं अच्छे कार्य की ओर ही बुलाते हैं, उसी की नसीहत करते हैं। अतः यह आज़ादी है जो आपने स्थापित की संसार में कभी उसका कोई उदाहरण नहीं मिल सकता।

आप[स.अ.व.] नुबुव्वत के दावे से पूर्व भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता और जीवन की स्वतंत्रता पसन्द करते थे और दासता को पसन्द नहीं करते थे। अतः जब हज़रत ख़दीजा[रज़ि.] ने विवाह के उपरान्त अपना माल और दास आप को दे दिए तो आप[स.] ने हज़रत ख़दीजा से कहा कि यदि ये सब वस्तुएं मुझे दे रही हो तो फिर ये सब मेरे अधिकार में होंगे और जो मैं चाहूंगा करूंगा। उन्होंने कहा मैं इसीलिए दे रही हूं आप ने कहा मैं दासों को भी आज़ाद कर दूंगा। उन्होंने उत्तर दिया - आप जो चाहें करें मैंने आप को दे दिए। अब मेरा कोई अधिकार नहीं है यह माल आप का है। अतः आप ने उसी समय हज़रत ख़दीजा के दासों को बुलाया और कहा कि तुम सब लोग आज से स्वतंत्र हो और माल का अधिकांश भाग भी गरीबों में बांट दिया।

आप[स.] ने जो दास आज़ाद किए उनमें एक दास ज़ैद नामक भी थे। लगता है वह अन्य दासों से अधिक होशियार थे, कुशाग्र बुद्धि थे। उन्होंने इस बात को समझ लिया कि मुझे यह जो आज़ादी मिली है यह आज़ादी तो अब मिल गई, दासता की जो मुहर लगी हुई है वह अब समाप्त हो गई

परन्तु मेरी भलाई इसी में है कि मैं आप[स.] की दासता में ही हमेशा रहूं। उन्होंने कहा उचित है आप[स.] ने मुझे आज़ाद कर दिया है परन्तु मैं आज़ाद नहीं होता मैं तो आप के साथ ही दास बनकर रहूंगा। अतः आप आंहज़रत[स.अ.व.] के पास ही रहे और यह दोनों ओर से प्रेम का संबंध बढ़ता गया। ज़ैद एक धनी ख़ानदान के व्यक्ति थे, अच्छे खाते-पीते घर के व्यक्ति थे। डाकुओं ने उनका अपहरण कर लिया था और फिर उनको बेचते रहे और इस प्रकार बिकते-बिकते वह यहां तक पहुंचे थे। उनके माता-पिता और परिजन भी खोज में थे। अन्त में उन्हें मालूम हुआ कि यह लड़का मक्का में है तो मक्का आ गए और फिर जब पता लगा कि आंहज़रत[स.अ.व.] के पास हैं तो आप की सभा में पहुंचे और वहां जाकर कहा कि आप जितना धन चाहें हम से ले लें और हमारे बेटे को स्वतंत्र कर दें इसकी मां का रो-रो कर बुरा हाल है। आप[स.] ने कहा कि मैं तो उसे पहले ही आज़ाद कर चुका हूं। यह आज़ाद है। जाना चाहता है तो चला जाए, मुझे किसी पैसे की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा - बेटे चलो। बेटे ने उत्तर दिया कि आप से मिल लिया हूं इतना ही पर्याप्त है, कभी अवसर मिला तो मां से भी भेंट हो जाएगी परन्तु अब मैं आप के साथ नहीं जा सकता। मैं तो अब आंहज़रत[स.अ.व.] का दास हो चुका हूं आप[स.] से पृथक होने का प्रश्न ही नहीं। माता-पिता से अधिक प्रेम अब मुझे आप[स.] से है। ज़ैद के पिता और चाचा आदि ने बहुत ज़ोर लगाया परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। ज़ैद के इस प्रेम को देखकर आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा था कि ज़ैद आज़ाद तो पहले ही था परन्तु आज से यह मेरा बेटा है। इस परिस्थिति को देखकर ज़ैद के पिता और चाचा वहां से अपने घर वापस चले गए और फिर ज़ैद हमेशा वहीं रहे।

(दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुर्आन से लिया गया सारांश, पृष्ठ - 112)

अतः नुबुव्वत के पश्चात् तो आप[स.] के उन स्वतंत्रता के मापदण्डों को चार चांद लग गए थे। अब तो आपके नेक स्वभाव के साथ आप पर उतरने वाली शरीअत का भी आदेश था कि दासों को उनके अधिकार दो। यदि नहीं दे सकते तो स्वतंत्र कर दो।

अतः एक रिवायत में आता है कि एक सहाबी अपने दास को मार रहे थे तो आंहज़रत[स.अ.व.] ने देखा और बड़ा क्रोध प्रकट किया। इस पर उन सहाबी ने उस दास को आज़ाद कर दिया। कहा कि मैं उसको आज़ाद करता हूं तो आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा तुम आज़ाद न करते तो अल्लाह तआला की पकड़ के नीचे आते।

(सही मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब सुहबतुल ममालीक हदीस नं. 4308)

अतः अब देखें यह है स्वतंत्रता फिर अन्य धर्मों के लोगों के लिए अपनी राय प्रकट करने का अधिकार और स्वतंत्रता का भी उदाहरण देखें। अपनी सरकार में जब कि आप की सरकार मदीना में स्थापित हो चुकी थी उस समय इस स्वतंत्रता का नमूना मिलता है।

एक रिवायत में आता है। हज़रत अबू हुरैरा[रज़ि.] से रिवायत है कि दो व्यक्ति आपस में गाली-गलौज करने लगे। एक मुसलमान था और दूसरा यहूदी। मुसलमान ने कहा उस हस्ती की क़सम जिसने मुहम्मद[स.अ.व.] को समस्त लोगों पर श्रेष्ठता दी है और चुन लिया। इस पर यहूदी ने कहा उस हस्ती की क़सम जिसने मूसा को समस्त लोगों पर श्रेष्ठता दी है और चुन लिया। इस पर मुसलमान ने हाथ उठाया और यहूदी के थप्पड़ मार दिया। यहूदी शिकायत लेकर आप[स.] के पास उपस्थित हुआ। आप[स.] ने मुसलमान से विवरण पूछा और फिर कहा - لا تُخَيِّرُونِی علٰی موسٰی कि मुझे मूसा पर श्रेष्ठता न दो।

(बुख़ारी किताबुल ख़ुसूमात बाब मा युज़करो फ़िल अश्ख़ास वल ख़ुसूमते बैनल मुस्लिम वल यहूद)

अत: यह था आप का आज़ादी का मापदण्ड। धर्म की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कि अपनी सरकार है, मदीना हिजरत के बाद आप[स.] ने मदीना के क़बीलों और यहूदियों से शान्ति का वातावरण स्थापित करने के लिए एक समझौता किया था जिसके अनुसार मुसलमानों का बहुमत होने के कारण या मुसलमानों के साथ जो लोग मिल गए थे वे मुसलमान नहीं भी हुए थे, उनके कारण सरकार आप[स.] के हाथ में थी परन्तु उस सरकार का यह अर्थ नहीं था कि अन्य प्रजा की भावनाओं का ध्यान न रखा जाए। क़ुर्आन करीम की इस साक्ष्य के बावजूद कि आप समस्त रसूलों से श्रेष्ठ हैं आप ने यह पसन्द न किया कि नबियों की तुलना के कारण वातावरण को गन्दा किया जाए। आप[स.] ने उस यहूदी की बात सुनकर मुसलमान को ही डांटा कि तुम लोग अपनी लड़ाइयों में नबियों को न लाया करो। ठीक है तुम्हारे निकट मैं समस्त रसूलों से श्रेष्ठ हूं, अल्लाह तआला भी इसकी साक्ष्य दे रहा है परन्तु हमारी सरकार में एक व्यक्ति के हृदय को कष्ट देना इसलिए नहीं होना चाहिए कि उसके नबी को किसी ने कुछ कहा है। इसकी मैं अनुमति नहीं दे सकता। मेरा सम्मान करने के लिए तुम्हें अन्य नबियों का भी सम्मान करना होगा।

अत: यह थे आप के न्याय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मापदण्ड जो अपनों, ग़ैरों सब का ध्यान रखने के लिए आप ने स्थापित किए अपितु प्राय: अन्य की भावनाओं का अधिक ध्यान रखा जाता था।

मानव मूल्यों को स्थापित करने तथा धार्मिक सहनशीलता के लिए आंहज़रत[स.अ.व.] का अद्वितीय क्रियात्मक आदर्श

आप[स.] के मानवीय मूल्यों को स्थायी करने तथा आप की सहनशीलता का एक अन्य उदाहरण है। रिवायत में आता है कि अब्दुर्रहमान बिन

अबी लैला वर्णन करते हैं कि सहल बिन हनीफ़ और क़ैस बिन सअद क़ादसिया के स्थान पर बैठे हुए थे कि उनके पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो वे दोनों खड़े हो गए। जब उनको बताया गया कि यह ग़ैर मुस्लिमों में से है तो दोनों ने कहा कि एक बार नबी करीम[स.अ.व.] के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो आप सम्मान के लिए खड़े हो गए। आपको बताया गया कि यह तो एक यहूदी का जनाज़ा है। इस पर आप[स.] ने फ़रमाया - اَلَيْسَتْ نَفْسًا कि क्या वह इन्सान नहीं है।

(सही बुख़ारी किताबुल जनायज़, बाब मन काना लिजनाज़ते यहूदी)

अत: यह सम्मान है अन्य धर्म का भी और मानवता का भी। यह अभिव्यक्ति और ये नमूने हैं जिनसे धार्मिक सहनशीलता का वातावरण पैदा होता है ये अभिव्यक्तियां ही हैं जिन से एक दूसरे के लिए नर्म भावनाएं जन्म लेती हैं और यह भावनाएं ही हैं जिन से प्रेम और अमन का वातावरण पैदा होता है न कि आजकल के सांसारिक लोगों के अमल की तरह कि नफ़रतों के वातावरण पैदा करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

फिर एक रिवायत में आता है ख़ैबर विजय के मध्य तौरात की कुछ प्रतियां मुसलमानों को मिलीं। यहूदी आप[स.] की सेवा में उपस्थित हुए कि हमारी पवित्र किताब हमें वापस की जाए। रसूले करीम[स.अ.व.] ने सहाबा को आदेश दिया कि यहूदियों की धार्मिक किताबें उन्हें वापस कर दो।

(अस्सीरतुल हलबिय्यह, बाब ज़िक्र मग़ाजियह[स.अ.व.] ग़ज़्वते ख़ैबर, पृष्ठ - 49)

इसके बावजूद कि यहूदियों के गलत आचरण के कारण उन्हें दण्ड मिल रहे थे आप[स.] ने यह सहन नहीं किया कि शत्रु से भी ऐसा व्यवहार किया जाए जिस से उसकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचे।

मैंने यह कुछ व्यक्तिगत घटनाएं वर्णन की हैं और मैंने चर्चा की

थी कि मदीना में एक समझौता हुआ था उस समझौते के अन्तर्गत आंहज़रत[स.अ.व.] ने जो शाखाएं क़ायम की थीं उनके बारे में जो रिवायतें पहुंची हैं मैं उन्हें वर्णन करता हूं कि किस प्रकार उस वातावरण में जाकर आपने सहनशीलता का वातावरण पैदा करने का प्रयत्न किया है और उस समाज में अमन स्थापित करने के लिए आप क्या चाहते थे ? ताकि समाज में भी अमन स्थापित हो और मानवता का सम्मान भी स्थापित हो। मदीना पहुंचने के बाद आप[स.] ने यहूदियों से जो समझौता किया उसकी कुछ शर्तें यह थीं कि -

1. मुसलमान और यहूदी आपस में हमदर्दी और निष्कपटता के साथ रहेंगे और एक दूसरे के विरुद्ध आतंक या अत्याचार से काम न लेंगे (और इसके बावजूद कि हमेशा इस शाखा को यहूदी तोड़ते रहे हैं परन्तु आप उपकार का व्यवहार करते रहे यहां तक कि जब बात सीमा से बढ़ गई तो यहूदियों के विरुद्ध विवश होकर कठोर कदम उठाने पड़े)।

2. प्रत्येक जाति को धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी (बावजूद इसके कि मुसलमान बहुसंख्या में हैं तुम अपने धर्म में स्वतंत्र हो)

3. समस्त निवासियों के प्राण और धन-सम्पत्तियां सुरक्षित होंगी और उनका सम्मान किया जाएगा सिवाए इसके कि कोई अत्याचारी या अपराधी हो (इसमें भी कोई भेदभाव नहीं है। अपराधी चाहे वह मुसलमान हो या ग़ैर मुस्लिम हो उसे बहरहाल दण्ड मिलेगा। शेष रक्षा करना सब का संयुक्त कार्य है, सरकार का कार्य है।)

4. फिर यह कि हर प्रकार के मतभेद और विवाद आंहज़रत[स.अ.व.] के सामने निर्णय के लिए प्रस्तुत होंगे और प्रत्येक फैसला ख़ुदाई आदेशानुसार किया जाएगा (और ख़ुदाई आदेश की परिभाषा यह है कि प्रत्येक जाति

को अपनी शरीअत के अनुसार फैसला बहरहाल आप[स.] के सामने प्रस्तुत होना है क्योंकि उस समय सरकार के उच्च अधिकारी आप[स.] थे। इसलिए आप[स.] ने फैसला करना था परन्तु फैसला उस शरीअत के अनुसार होगा और जब यहूदियों के कुछ फैसले उनकी शरीअत के अनुसार ऐसे हुए तो उस पर ही अब ईसाई आपत्ति जताते हैं या अन्य विरोधी आपत्ति खड़ी करते हैं कि अन्याय हुआ, हालांकि उनके कहने के अनुसार उनकी शर्तों पर ही हुए थे)

फिर एक शर्त यह है कि

"कोई पक्ष बिना अनुमति आंहज़रत[स.अ.व.] युद्ध के लिए नहीं निकलेगा।" इसलिए सरकार के अन्दर रहते हुए उस सरकार का पाबन्द रहना आवश्यक है। अब यह जो शर्त है यह आजकल जिहादी संगठनों के लिए भी पथ-प्रदर्शक है कि जिस सरकार में रह रहे हैं उसकी अनुमति के बिना किसी प्रकार का जिहाद नहीं कर सकते सिवाए इसके कि उस सरकार की सेना में सम्मिलित हो जाएं और फिर यदि देश युद्ध करे या सरकार तो फिर ठीक है।

फिर एक शर्त यह है कि

"यदि यहूदियों और मुसलमानों के विरुद्ध कोई जाति युद्ध करेगी तो वह एक-दूसरे की सहायता के लिए खड़े होंगे।"

(अर्थात् दोनों में से किसी सदस्य के विरुद्ध यदि युद्ध होगा तो दूसरे की सहायता करेंगे और शत्रु से संधि की अवस्था में मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम दोनों को यदि संधि में कोई लाभ मिल रहा हो तो उस लाभ को प्रत्येक अपने भाग के अनुसार प्राप्त करेगा।)

इसी प्रकार यदि मदीना पर कोई आक्रमण होगा तो सब मिलकर

उसका मुकाबला करेंगे।

फिर एक शर्त है कि -

"मक्का के क़ुरैश और उनके सहायकों को यहूदियों की ओर से किसी प्रकार की सहायता या शरण नहीं दी जाएगी।"

(क्योंकि मक्का के विरोधियों ने ही वहां से मुसलमानों को निकाला था। मुसलमानों ने यहां आकर शरण ली थी) इसलिए अब इस सरकार में रहने वाले उस शत्रु जाति से किसी प्रकार का समझौता नहीं कर सकते और न कोई सहायता लेंगे)

"प्रत्येक जाति अपने ख़र्च स्वयं उठाएगी" इस समझौते की दृष्टि से कोई अत्याचारी या पापी अथवा उपद्रवी इस बात से सुरक्षित नहीं होगा कि उसे दण्ड दिया जाए या उस से प्रतिशोध लिया जाए और ऐसा बिना किसी भेदभाव के होगा चाहे वह मुसलमान है या यहूदी है या कोई अन्य।

(सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन से संक्षिप्त सारांश, पृष्ठ - 279)

फिर इसी धार्मिक सहनशीलता और आज़ादी को स्थापित रखने के लिए आप[स.] ने नजरान के प्रतिनिधि मंडल को मस्जिद-ए-नबवी में इबादत (उपासना) करने की अनुमति दी और उन्होंने पूर्व की ओर मुख करके अपनी इबादत की जबकि सहाबा का विचार था कि नहीं करनी चाहिए। आप[स.] ने कहा कुछ अन्तर नहीं पड़ता।

फिर नजरान वालों को आप[स.] ने जो सुरक्षा-पत्र दिया उसका भी वर्णन मिलता है। उसमें आप[स.] ने अपने ऊपर यह दायित्व स्वीकार किया कि मुसलमान सेना के द्वारा उन ईसाइयों की (जो नजरान से आए थे) सीमाओं की रक्षा की जाएगी। उनके गिरजे, उनके उपासना गृह, यात्री निवास चाहे वे किसी सुदूर क्षेत्र में हों या शहरों में हों या पर्वतों में हों या जंगलों में हों उनकी

रक्षा मुसलमानों का दायित्व है। उनको अपने धर्मानुसार इबादत करने की स्वतंत्रता होगी तथा उनकी इस इबादत की स्वतंत्रता की रक्षा भी मुसलमानों का कर्त्तव्य है और आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा क्योंकि अब ये मुसलमान सरकार की प्रजा हैं। इसलिए इनकी सुरक्षा इस दृष्टि से भी मुझ पर अनिवार्य है कि अब ये मेरी प्रजा बन चुके हैं।

फिर आगे है कि इसी प्रकार मुसलमान अपने युद्ध की तैयारियों में इन्हें (अर्थात् ईसाइयों को) उनकी इच्छा के बिना सम्मिलित नहीं करेंगे। उनके पादरी और धार्मिक नेता जिस पोजीशन और पद पर हैं वे वहां से निलंबित नहीं किए जाएंगे। उसी प्रकार अपने कार्य करते रहेंगे उनके उपासना-गृहों में हस्तक्षेप नहीं होगा। वे किसी भी अवस्था में प्रयोग में नहीं लाए जाएंगे, न सरायों में परिवर्तित किए जाएंगे और न किसी को वहां ठहराया जाएगा और न किसी अन्य उद्देश्य में उनसे पूछे बिना प्रयोग में लाया जाएगा। उलेमा और ईसाई सन्यासी जहां कहीं भी हों उन से कर (जिज़िया) और ख़राज वसूल नहीं किया जाएगा। यदि किसी मुसलमान की ईसाई पत्नी होगी तो उसे पूर्ण स्वतंत्रता होगी कि वह अपने तौर पर इबादत करे। यदि कोई अपने उलेमा के पास जाकर धार्मिक बातें पूछना चाहे तो जाए, गिरजों आदि की मरम्मत के लिए आप[स.] ने कहा कि यदि वे मुसलमानों से आर्थिक सहायता लें और नैतिक मदद चाहें तो मुसलमानों को सहायता करनी चाहिए क्योंकि यह अच्छी बात है। यह न तो क़र्ज़ होगा न उपकार होगा अपितु उस समझौते को उत्तम बनाने का एक रूप होगा कि इस प्रकार के सामाजिक संबंध तथा एक दूसरे की सहायता के कार्य किए जाएं।

(ज़ादुल मआद फ़ी ख़ैरिल इबाद, फ़स्ल फ़ी क़ुदूम वफ़द नजरान से संक्षिप्त सारांश)

अतः ये थे आप[स.] के धार्मिक स्वतंत्रता एवं सहनशीलता की स्थापना के लिए मापदण्ड। इसके बावजूद आप पर अत्याचार करने और तलवार के बल पर इस्लाम फैलाने का आरोप लगाना अत्यन्त अत्याचारपूर्ण हरकत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं कि :

"अतः जबकि अहले किताब और अरब के मुश्रिक अत्यन्त दुराचारी हो चुके थे और बुराई करके समझते थे कि हम ने नेकी का कार्य किया है और अपराधों से नहीं रुकते थे तथा सार्वजनिक शान्ति को भंग करते थे तो ख़ुदा तआला ने अपने नबी के हाथ में सरकार की बागडोर देकर उनके हाथ से ग़रीबों को बचाना चाहा और चूंकि अरब देश निरंकुश था और वे लोग किसी बादशाह के शासन के अधीन नहीं थे। इसलिए प्रत्येक सम्प्रदाय नितान्त आज़ादी और निर्भीकता से जीवन व्यतीत करता था और चूंकि उनके लिए कोई दण्ड-विधान न था। इसलिए वे लोग दिन-प्रतिदिन अपराधों में बढ़ते जाते थे। अतः ख़ुदा ने उस देश पर दया करके ..... आंहज़रत[स.अ.व.] को उस देश के लिए न केवल रसूल बनाकर भेजा अपितु उस देश का बादशाह भी बना दिया और क़ुर्आन करीम को एक ऐसे कानून की तरह पूर्ण किया जिसमें दीवानी, फौजदारी, आर्थिक (धन संबंधी) सब निर्देश हैं। अतः आंहज़रत[स.अ.व.] एक बादशाह होने की हैसियत से समस्त सम्प्रदायों के शासक थे तथा प्रत्येक धर्म के लोग अपने मुक़द्दमों का आप[स.] से फैसला कराते थे।

क़ुर्आन करीम से सिद्ध है कि एक बार एक मुसलमान और एक यहूदी का आप[स.] की अदालत में मुकद्दमा आया तो आप ने जांच-

पड़ताल के पश्चात यहूदी को सच्चा किया और मुसलमान पर उसके दावे की डिग्री की। अतः कुछ मूर्ख विरोधी जो ध्यानपूर्वक क़ुर्आन करीम नहीं पढ़ते वे प्रत्येक स्थान को आंहज़रत[स.अ.व.] की रिसालत के अन्तर्गत ले आते हैं जबकि ऐसे दण्ड खिलाफ़त अर्थात् बादशाहत की हैसियत से दिए जाते थे।" (अर्थात् यह सरकार का कार्य है)

"बनी इस्राईल में हज़रत मूसा के बाद नबी अलग से होते थे और बादशाह अलग से होते थे जो राजनीतिक मामलों के द्वारा अमन स्थापित रखते थे, परन्तु आप[स.] के समय में ये दोनों पद ख़ुदा तआला ने आंजनाब (अर्थात आंहज़रत[स.अ.व.]) ही को प्रदान किए और अपराधी प्रकृति के लोगों को अलग-अलग करके शेष लोगों के साथ जो व्यवहार था वह निम्नलिखित आयत से प्रकट होता है और वह यह है -

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ

(सूरह आले इमरान - 21)

और हे पैग़म्बर अहले किताब तथा अरब के अनपढ़ लोगों को कहो कि क्या तुम इस्लाम धर्म में सम्मिलित होते हो। अतः यदि इस्लाम स्वीकार कर लें तो हिदायत पा गए और यदि विमुख हों तो तुम्हारा तो केवल यही काम है कि ख़ुदा का आदेश पहुंचा दो। इस आयत में यह नहीं लिखा की तुम्हारा भी कार्य है कि तुम उन से युद्ध करो। इससे स्पष्ट है कि युद्ध केवल अपराधी प्रवृत्ति रखने वाले लोगों के लिए था जो मुसलमानों को क़त्ल करते थे या सार्वजनिक अमन में विघ्न डालते थे और चोरी-डाके में व्यस्त रहते थे तथा यह युद्ध बादशाह होने की हैसियत से। जैसा कि अल्लाह तआला कहता है وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ

يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ۝ (सूरह अलबक़रह - 191)

(अनुवाद) तुम ख़ुदा के मार्ग में उन लोगों से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हैं अर्थात् दूसरों से कुछ मतलब न रखो और अत्याचार न करो। ख़ुदा अत्याचार करने वालों को पसन्द नहीं करता।"

('चश्म-ए-मा'रिफ़त' रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 23, पृष्ठ - 242, 243)

अतः जिस पवित्र नबी[स.अ.व.] पर यह शरीअत उतरी है यह किस प्रकार हो सकता है कि वह अपने पर उतरे हुए आदेशों के मामले में अत्याचार करता हो। आप[स.] ने मक्का विजय के अवसर पर उस शर्त के बिना कि यदि इस्लाम में सम्मिलित हुए तो सुरक्षा मिलेगी, सार्वजनिक क्षमा की घोषणा कर दी थी उसका एक उदाहरण हम देख भी चुके हैं। उसके विभिन्न रूप थे परन्तु उसमें यह नहीं था कि अवश्य इस्लाम स्वीकार करोगे तो क्षमा मिलेगी। विभिन्न स्थानों में जाने और प्रवेश करने और किसी के झण्डे के नीचे आने और काबा में जाने तथा किसी घर में जाने के कारण से क्षमा की घोषणा थी और यह एक ऐसा उच्च उदाहरण था जो हमें कहीं देखने को नहीं मिलता। पूर्णतया यह घोषणा कर दी कि لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْم कि जाओ आज तुम पर कोई पकड़ नहीं है। हज़ारों दरूद और सलाम हों आप[स.] पर जिन्होंने अपने से उच्च आदर्श स्थापित किए और हमें भी उसकी शिक्षा प्रदान की।

अल्लाह तआला हमें इस पर अमल करने की शक्ति प्रदान करे।